

# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India



असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. ४।  
No. ४।

नई दिल्ली, मंगलवार, जनवरी 15, 2013/पौष 25, 1934

NEW DELHI, TUESDAY, JANUARY 15, 2013/PAUSA 25, 1934

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 15 जनवरी, 2013

आंतरिक निष्कर्ष

**विषय :** चीन जन गण, इंडोनेशिया, थाईलैंड और यूएई के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच।

सं. 15/45/2010-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में और उसके पश्चात् यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (फाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियम कहा जाएगा) को ध्यान में रखते हुए:—

क. मामले की पृष्ठभूमि :

1. इस मामले की पृष्ठभूमि निम्नका है:—

- यह: मैसर्स सेण्ट-गोबिन जायप्राक इंडिया लिमिटेड, मुंबई (जिसे एतदपश्चात् घरेलू उद्योग कहा गया है) ने चीन जन गण, इंडोनेशिया, थाईलैंड और यूएई (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सभी मोटाई और आयाम वाले सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों के संबंध में पाटनरोधी शुल्क की जांच प्रारंभ करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष एक आवेदन दायर किया है और संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने का अनुरोध किया है।
- यह: प्राधिकारी ने, घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयात के संबंध में तथाकथित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और उसके प्रभाव का आकलन करने और वर्ष 1995 तथा उसके पश्चात् यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और उसके अधीन बने समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (फाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियम कहा गया है) के पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करने के लिए पाटनरोधी जांच प्रारंभ करने हेतु भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित 21 जुलाई, 2011 को एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया।

जांच प्रारंभ करने हेतु भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित 21 जुलाई, 2011 को एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया।

- (iii) यतः, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 19 मार्च, 2012 की अधिसूचना संख्या 14/45/2010-डीजीएडी के तहत अंतिम निष्कर्ष जारी किए और संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने की संस्तुति की थी।
- (iv) यतः, निर्दिष्ट प्राधिकारी के पदधारी में परिवर्तन होने और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्राप्त लिखित प्रस्तुतिकरणों और प्रति-प्रत्युत्तरों के कारण निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 10 अप्रैल, 2012 को एक सार्वजनिक सुनवाई तथा दिनांक 26 नवम्बर, 2012 को एक सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया।
- (v) यतः, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इससे पहले दिनांक 6 सितम्बर, 2012 को एक प्रकटन विवरण जारी किया जिसमें हितबद्ध पक्षकारों को जांच के अनिवार्य तथ्यों का खुलासा किया गया। निर्दिष्ट प्राधिकारी के कार्यालय में पदधारी में परिवर्तन होने के कारण और लिखित प्रस्तुतिकरण और प्रति-प्रत्युत्तर प्राप्त होने के उपरांत यह प्रकटन विवरण जारी किया जा रहा है।

#### ख. प्रक्रिया

2. उक्त जांच में अधोलिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया :

- (i) प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी जांच करने और पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए आवेदन प्राप्त होने पर जांच प्रारंभ करने से पहले पाटनरोधी नियमावली के उप-नियम 5(5) के अनुसार भारत में संबद्ध देशों के राजदूतावासों को इसकी सूचना दी।
- (ii) प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी जांच प्रारंभ करते हुए दिनांक 21 जुलाई, 2011 का एक सार्वजनिक नोटिस, जिसे भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित किया गया था, जारी किया।
- (iii) प्राधिकारी ने इस सार्वजनिक सूचना की एक प्रति सभी जात निर्यातकों (जिनका विवरण आवेदक द्वारा उपलब्ध कराया गया था) तथा उद्योग एसोसिएशनों को भेजी गई और उन्हें पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार अपने विचार लिखित में प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया।
- (iv) प्राधिकारी ने इस सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भारत में संबद्ध वस्तु के सभी जात आयातकों (जिनका विवरण आवेदक द्वारा उपलब्ध कराया गया था) को अग्रेषित की और पत्र की तारीख से चालीस दिनों के अंदर अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया।

(v) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के आवेदन के अगोपनीय पाठ की एक प्रति पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार सभी जात निर्यातकों और संबद्ध देशों के भारत स्थित राजदूतावासों को उपलब्ध कराई। घरेलू उद्योग के आवेदन के अगोपनीय पाठ की एक प्रति अन्य हितबद्ध पक्षकारों को, जहां इसके लिए अनुरोध किया गया, भी प्रदान कराई गई।

(vi) प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के निम्नलिखित जात निर्यातकों को संगत सूधना उपलब्ध कराने के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार प्रश्नावलियां भेजी :

क्रम सं.	उत्पादक/निर्यातक का नाम
1	जिप्सीम्ना कंपनी (एलएलसी) पोस्ट बॉक्स 74682, प्लाट संख्या 51, एमआर2 इंडस्ट्रियल सिटी ऑफ अबू धाबी (आईसीएडी-II) मुस्सफा, अबूधाबी, संयुक्त अरब अमीरात।
2	सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सराबुरी) कंपनी लिमिटेड, संख्या 9, पेकिन बिल्डिंग, 5वां तल, रेट्चाडापीसेक रोड, डिन्डांग, बैंकाक-10400, थाईलैंड
3	पीटी. सिआम इंडो जिप्सम इंडस्ट्री जे.एल., इन्सपेक्सी कालिमालांग के एम-2 के पी सिकेडोकान आरटी/आरडब्ल्यू 001/01 सिविटुंग, बैंकासी 17520, इंडोनेशिया
4	पीटी. पेट्रोजाया बोरल प्लास्टरबोर्ड ग्रह मेंबिजेल बिल्डिंग चौथा तल, माम्पांग, प्रापटनराया संख्या 139, जकार्ता, सेलटॉन 12970 इंडोनेशिया
5	सैण्डग बैयर बी बिल्डिंग मैटीरियल्स जिक्की पिंजरी लिन्यी शैण्डग लिन्यी सिटी, चीन जन गण
6	लिन्यी हुमामेई जिप्सम बिल्डिंग मैटीरियल्स कंपनी लिमिटेड लुओङ्गुआन्ग जिला, लिन्यी किंगडाओ, चीन जन गण
7	सीएनबीएम इंटरनेशनल कारपोरेशन, 17वां तल, संख्या 4 बिल्डिंग शुयू इंटरनेशनल वाणिज्यिक केंद्र संख्या 9, शौती साउथ रोड हैंडियान जिला, चीन जन गण

(vii) जांच शुरूआत अधिसूचना के प्रत्युत्तर में, संबद्ध देशों के निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों ने निर्धारित प्रपत्र में निर्यातकों की प्रश्नावली का प्रत्युत्तर प्रस्तुत किया।

(क) मैसर्स जिप्सेम्ना कंपनी, एलएलसी, अबूधाबी, यूएई  
 (ख) मैसर्स सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सांगखला) कंपनी लिमिटेड, बैंकाक, थाईलैंड  
 (ग) मैसर्स सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सराबुरी) कंपनी लिमिटेड, बैंकाक – थाईलैंड

(viii) जांच शुरूआत के पश्चात मैसर्स नौफ एलएलसी, दुबई, यूएई ने प्राधिकारी को यह सूचित करते हुए एक पत्र प्रस्तुत किया कि उन्होंने जांच अवधि के अंदर संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया है। प्राधिकारी द्वारा प्रारंभिक निष्कर्ष जारी कर दिए जाने के पश्चात

मैसर्स नौफ ने निर्यातक प्रश्नावली का प्रत्युत्तर भी प्रस्तुत किया। परंतु चूंकि कंपनी ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया था इसलिए प्राधिकारी ने उनके देर से प्राप्त प्रत्युत्तर को स्वीकार नहीं किया।

(ix) प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु के भारत में निम्नलिखित जात आयातकों/प्रयोक्ताओं को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराने की मांग करते हुए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अंतर्गत आयातक प्रश्नावली भेजी :

क्रम सं.	आयातक/निर्यातक का नाम
1	सस्ता सीनियर बिल्डिंग प्रोडक्ट, 34 स्परटैक रोड, चेटपेट, चैन्नई 600031
2	लाफार्ज बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ए-10 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016
3	लाफार्ज बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड डोर नम्बर 3, स्परटैक रोड चेटपेट, चैन्नई-600031
4	विकास ट्रेडिंग कंपनी, संख्या 10/12वां तल, ओल्ड बंगलौर रोड, होसुर-635109, तमिलनाडु
5	टोटल सल्युशन्स बिल्डिंग मैटीरियल कंपनी, प्रधान कार्यालय, 318, तृतीय क्रास रोड, बाबा लेन, धरगा मोहल्ला, ओल्ड मद्रास रोड, बंगलौर-16

(x) भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं से निर्धारित प्रपत्र आयातक प्रश्नावली का प्रत्युत्तर प्राप्त हुआ :

- (क) मैसर्स विकास ट्रेडिंग कंपनी बंगलौर
- (ख) मैसर्स आर्मस्ट्रांग वर्ल्ड इंडस्ट्रीज, मुंबई
- (ग) मैसर्स लाफार्ज बोराल जिप्सम इंडिया, गुडगांव (मैसर्स बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के रूप में पुनर्नामित)

(xi) मैसर्स टोटल सल्युशन्स बिल्डिंग मैटीरियल्स कंपनी लिमिटेड बंगलौर और मैसर्स इंडिया जिप्सम कोचीन द्वारा भी प्रस्तुतिकरण किए गए थे।

(xii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय पाठ को हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए सार्वजनिक फाइल के रूप में रखा गया।

(xiii) आवेदक द्वारा प्रस्तुत जानकारी पर आधारित भारत में सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर संबद्ध वस्तु की भारत में अनुकूलतम उत्पादन लागत तथा उसका निर्माण करने एवं उसकी बिक्री की लागत का निर्धारण किया गया ताकि यह आकलन किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से न्यूनतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।

(xiv) यह जांच 1 जनवरी, 2010 से 31 दिसंबर, 2010 (जांचावधि) की अवधि के लिए की गई थी। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रृथमों को जांच में अप्रैल, 2007 से मार्च, 2008, अप्रैल, 2008 – मार्च, 2009 तथा अप्रैल, 2009 से मार्च, 2010 की अवधि तथा जांच की अवधि को शामिल किया गया।

(xv) निर्दिष्ट प्राधिकारी में 19 मार्च, 2012 की अधिसूचना संख्या 14/45/2010-डीजीएडी के तहत प्रारंभिक अंतिम निष्कर्ष जारी किए तथा संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने की सिफारिश की।

(xvi) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (6) के अंतर्गत सभी जात हितबद्ध पक्षकारों को 10 अप्रैल, 2012 और 26 नवम्बर, 2012 को आयोजित मौखिक सुनवाई में अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त करने का एक अन्य मौका दिया। जिन पक्षकारों ने मौखिक सुनवाई में अपने विचार व्यक्त किए उनसे अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करने और उनके द्वारा व्यक्त किए गए मौखिक विचारों का प्रति प्रत्युत्तर देने का अनुरोध किया गया।

(xvii) जांच के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए निवेदनों और प्रकटन पश्चात प्राप्त जिन टिप्पणियों को प्राधिकारी द्वारा संगत माना गया, उनका इस अंतिम निष्कर्ष में निराकरण किया गया।

(xviii) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत जानकारी एवं आंकड़ों का आवश्यक समझी गई सीमा तक सत्यापन किया गया।

(xix) उपरिनियमों के नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों में विचार किए गए अनिवार्य तथ्यों/आधारों का दिनांक 06 सितम्बर, 2012 और 4 जनवरी, 2013 के प्रकटन विवरण के तहत जात हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष खुलासा किया गया और उन पर प्राप्त उन टिप्पणियों का, जिन्हें प्राधिकारी द्वारा संगत माना गया, इस अंतिम जांच परिणाम में निराकरण कर दिया गया है।

(xx) \*\*\* इस अंतिम निष्कर्ष में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का प्रतिनिधित्व किया गया है और इसलिए नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उनपर विचार किया गया।

(xxi) जहां कही किसी हितबद्ध पक्षकार ने मौजूदा जांच के दौरान किसी जानकारी तक पहुंच को मना कर दिया है या अन्यथा आवश्यक जानकारी प्रदान नहीं कराई है या जांच में बहुत अधिक व्यवधान डाला है, प्राधिकारी ने उन हितबद्ध पक्षकारों को असहयोगी के रूप में माना है और यह अंतिम निष्कर्ष उपलब्ध तथ्यों के आधार पर रिकार्ड किया है।

(xxii) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई जानकारी की गोपनीयता के दावों की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई। प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर, जहां कहीं बांधित हुआ वहां, गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया और ऐसी जानकारी गोपनीय मानी गई तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को इसका खुलासा नहीं किया गया। गोपनीय आधार पर जानकारी प्रदान करने वाले पक्षकारों को निदेश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर दर्ज की गई जानकारी का यथासंभव पर्याप्त अगोपनीय पाठ भी उपलब्ध कराएं और उसे नियमों के अनुसार प्राधिकारी द्वारा अनुरक्षित सार्वजनिक फाइल में रखा गया।

(xxiii) सक्षम प्राधिकारी ने अपने दिनांक 3 अक्टूबर, 2012 के पत्र सं. 354/70/2012-टीआरयू के तहत संबद्ध जांच पूरी करने की समयावधि 20 जनवरी, 2013 तक बढ़ा दी गई।

(xxiv) वर्तमान जांच के लिए प्राधिकारी द्वारा अंगीकृत विनिमय दर 1 अमरीकी डालर = 46.44 रुपया है।

#### मद्रास उच्च न्यायालय के समक्ष वाद

3. मैसर्स बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (पूर्ववर्ती लाफार्ज बोराल जिप्सम प्राइवेट लिमिटेड) ने मद्रास उच्च न्यायालय के समक्ष वर्ष 2012 की संख्या 10348 के तहत एक रिट याचिका दायर की। माननीय न्यायालय ने दिनांक 2.7.2012 के आदेश के तहत इस रिट याचिका का निपटान कर दिया और अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित निदेश दिए :

"7. धूंकि याचिकाकर्ता ने मामले के गुणावगुण पर विचार किए बिना, प्रारंभिक निष्कर्षों को पारित करते समय अपनी आपतियों पर विचार करने की मांग की, इसलिए प्रथम प्रतिवादी को अंतिम निष्कर्ष पारित करते समय पैराग्राफ 46(vii) तथा (ix) में उठाई गई आपतियों पर विचार करने और याचिकाकर्ता को अपने मामले के संबंध में प्रमाण प्रस्तुत करने का मौका देने के पश्चात, अधिनियम के प्रावधानों के अनुरूप, विधि अनुसार आदेश पारित करने का निदेश दिया।

8. तदनुसार, रिट याचिका का निस्तारण कर दिया गया, बिना लागत के। पारिणामस्वरूप इससे जुड़ी विविध याचिकाएं समाप्त हो गईं।

4. प्राधिकारी द्वारा जारी प्रारंभिक निष्कर्षों के वे संगत पैराग्राफ, जिनपर माननीय उच्च न्यायालय ने उपर्युक्त आदेश जारी किए निम्नलिखित हैं :-

"vii. ये आयात, भारत में उस संगत कंपनी द्वारा किए गए जिसने अपने उत्पाद की बिक्री करने के लिए सभी बिक्री व्यय जैसे विज्ञापन व्यय, बिक्री संवर्धन व्यय, भंडारागार प्रभार आदि का वहन किया है। अतः उचित तुलना पर पहुंचने के लिए भारत में व्यापारकर्ता कंपनी की निवल बिक्री कीमत की तुलना याचिकाकर्ता की बिक्री कीमत से की गई।"

"ix. वर्ष 2008-09 और 2009-10 की अवधि के दौरान आयातों के बाजार हिस्से में गिरावट आई। इसके बावजूद, घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा कम हो गया। इसी समय, अन्य भारतीय

उत्पादकों जैसे लाफार्ज बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड का बाजार हिस्सा उसी अवधि के दौरान बढ़ गया। इससे यह प्रदर्शित होता है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से का नुकसान आंतरिक घरेलू प्रतिस्पर्धा अर्थात लाफार्ज बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के साथ प्रतिस्पर्धा के कारण हुआ और न कि संबद्ध देशों से कथित पाटन के कारण।"

5. माननीय उच्च न्यायालय के आदेशों का अनुपालन करने के लिए उच्च न्यायालय के समक्ष याचिका दायर करने वाले याचिकाकर्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को अपना निवेदन प्रस्तुत करने की अनुमति दी गई। याचिकाकर्ताओं द्वारा उच्च न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत निवेदनों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन संक्षेप में निम्नलिखित हैं :

**5.1 मैसर्स जिप्सम बोराल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (मद्रास उच्च न्यायालय के समक्ष याचिकाकर्ता) द्वारा किया गया प्रस्तुतिकरण**

क. पाटनरोधी शुल्क का प्रयोजन घरेलू बाजार में घरेलू उत्पादक के माल की कीमतों से कम कीमत पर आयातित पाटित वस्तुओं की बिक्री के कारण भारत में घरेलू उत्पादकों द्वारा उठाए जा रहे किसी नुकसान का उपचार करना है। भारत ने, सिद्धांत रूप में, क्षति मार्जिन या पाटन मार्जिन से न्यूनतर पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने की नीति अपनायी है।

ख. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-III में "गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण करने के सिद्धांत" अर्थात उस उचित बिक्री (राष्ट्रीय) कीमत का उल्लेख है जिसपर घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं होगी। इस गैर क्षतिकारी कीमत में प्रशासनिक व्यय और बिक्री व्यय शामिल है। तब घरेलू उत्पादक की इस गैर क्षतिकारी कीमत, की उन कीमतों से तुलना करनी पड़ती है जिसपर आयातित उत्पाद, घरेलू रूप से विनिर्मित उत्पादों के साथ वास्तविक प्रतिस्पर्धा करते हैं। दो तथ्यों के बीच हमेशा एक समान स्तर पर तुलना की जाती है जिसे व्यापार की भाषा में व्यापार का समान स्तर कहते हैं।

ग. दि सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सराबुरी) कंपनी लिमिटेड और दि सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सोनखला) कंपनी लिमिटेड संबद्ध वस्तु का आयात भारत में केवल अपने संबंधित आयातक अर्थात बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए करती हैं, जो भारत में बिक्री और प्रशासनिक व्यय करके उनकी भारत में पुनर्बिक्री करता है। ये व्यय, अन्य बातों के साथ-साथ उत्पाद का विपणन करने के लिए हैं, और इसलिए ये व्यय वस्तु को अंतिम उपयोक्ताओं तक बिक्री के लिए तैयार करने से पहले किए जाते हैं। अतः, वह कीमत जिसपर भारत में उपयोक्ता आयातित वस्तु प्राप्त कर सकता है, बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा भारत में आयातित माल की बिक्री की जाने वाली पुनर्बिक्री कीमत है।

घ. याचिकाकर्ता की गैर-क्षतिकारी कीमत और बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की पुनर्बिक्री कीमत के बीच अंतर के आधार पर क्षति मार्जिन घरेलू उत्पादक द्वारा सहन की जा रही क्षति, यदि कोई, को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा क्योंकि आयातित वस्तुएं

घरेलू रूप से विनिर्भित वस्तुओं के साथ केवल उसी स्तर पर प्रतिस्पर्धा करती है जब भारत में उनकी पुनर्विक्री की जाती है।

इस संबंध में यूरोपियन यूनियन के निम्नलिखित निष्कर्ष संगत हैं :

(i) संयुक्त राज्य अमेरिका में उदभावित बायो-डीजल के आयात पर अधिरोपित निर्णायक रूप से अनन्तिम शुल्क संग्रहित करने और निर्णायक प्रतिलाभ शुल्क अधिरोपित करने के संबंध में 7 जुलाई, 2009 का परिषद विनियम (ईसी) संख्या 598/2009

"(116) कुछ निर्यातक उत्पादकों ने दावा किया कि क्षति मार्जिन परिकलन के लिए प्रयोग की गई कीमतें, प्रथम असंबद्ध उपभोक्ता को पुनर्विक्री कीमतों के बजाय सीआईएफ कम्युनिटी फ्रेंटियर कीमतें थीं। उन्होंने दावा किया कि प्रथम असंबद्ध उपभोक्ता को बिक्री की मात्रा और उसके मूल्य के आधार पर इन परिकलनों में सुधार किया जाना चाहिए।

(117) दोनों निर्यातक उत्पादों के संबंध में यह दावा संगत पाया गया और तदनुसार क्षति परिकलनों में सुधार किया गया।"

(ii) भारत, इंडोनेशिया और मलेशिया के मूल के फैटी अल्कोहलों तथा उनके सम्मिश्रणों के आयात पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने के संबंध में आयोग का 10 मई, 2011 का विनियम (ईयू) संख्या 446/2011

"(74) कीमत अधोरदन का विश्लेषण करने के उद्देश्य के लिए, यूनियन इंडस्ट्री की यूनियन बाजार में असंबद्ध ग्राहकों को प्रति उत्पाद, कार्य बाध स्तर पर समायोजित भारित औंसत बिक्री कीमत, की तुलना संबंधित देशों से, सीआईएफ आधार पर स्थापित, आयातों की भारित औंसत कीमत, जिसमें मौजूदा सीमा शुल्क और पश्च आयातन लागत का समुचित समायोजन है, से की गई। यह कीमत तुलना व्यापार के समान स्तर पर लेन-देन के लिए, यथावश्यक रूप से विधिवत समायोजित तथा छूट एवं बट्टा की कटौती करने के बाद, की गई।

(iii) चीन जनवादी गणराज्य के मूल के कुछ कम्प्रेसरों के आयात पर निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने के लिए दिनांक 17 मार्च, 2008 का परिषद विनियम संख्या (ईसी) 261/2008

"(74) संबंधित उत्पाद के तुलनीय प्रतिदर्शों की तुलना समुदाय में सैम्पत निर्यातक उत्पादकों तथा समुदाय उद्योग की औंसत बिक्री कीमत से की गई। इस उद्देश्य के लिए समुदाय उद्योग के असंबद्ध ग्राहकों को कारखाना बाह्य कीमतों सभी निवल छूटों और करों के बाद, की तुलना चीन जन गण के निर्यातक उत्पादकों की सीआईएफ कम्युनिटी फ्रेंटियर कीमतों, सामान उतारने तथा सीमा शुल्क निकासी लागत का समायोजन करके, से की गई।

इस तथ्य पर ध्यान देते हुए कि समुदाय उद्योग सामान्यतः अपने समुदाय उत्पादों को सीधे खुदरा बिक्रेताओं को बेचता है, जबकि चीन में उत्पादित वस्तुएं खुदरा व्यापारियों को संबद्ध यह असंबद्ध आयातकों द्वारा और/या व्यापारियों द्वारा बेंची जाती हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह तुलना व्यापार के समान स्तर पर की जाती है आयात कीमतों का समायोजन किया गया था....."

च. यह एक स्वीकृत तथ्य है कि बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड भारत में सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड का एक उत्पादक है। याचिकाकर्ता के उत्पाद और बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा उत्पादित एवं विपणित उत्पाद एक बाजार प्रतिस्पर्धा स्थापित करते हैं। बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा घरेलू रूप से विनिर्मित वस्तुओं की बिक्री कीमत और उनके द्वारा थाईलैंड से आयात की जा रही एवं भारतीय बाजार में उनकी पुनर्बिक्री की जा रही बिक्री कीमत निम्नलिखित है :

बिक्री कीमत (रुपए प्रति मीटर क्यूब)	2008-09	2009-10	जांच की अवधि
क. घरेलू रूप से विनिर्मित वस्तुएं	***	***	***
ख. आयातित वस्तुएं पुनर्बिक्रीकृत	***	***	***
ग. अंतर (क)-(ख) (%)	10-15	15-20	5-10

छ. उपर्युक्त सारणी से यह देखा जा सकता है कि बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की घरेलू रूप से विनिर्मित वस्तुओं की बिक्री कीमत संपूर्ण क्षति जांच अवधि के दौरान आयातित वस्तुओं की बिक्री कीमत से कम रही। ऐसी परिस्थिति में, जहां घरेलू रूप से विनिर्मित वस्तुओं की बिक्री कीमत आयातित वस्तुओं की बिक्री कीमत से काफी कम रही हो, वहां घरेलू उद्योग द्वारा सहन की गई क्षति, यदि कोई हो, केवल घरेलू प्रतिस्पर्धा के कारण होती है, न कि आयातित उत्पादों के कारण।

ज. यह दावा इस तथ्य से भी सिद्ध हो जाता है कि बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा उत्पादन इकाई की स्थापना करने से, भारत में आयातों की मात्रा में कमी आने के बावजूद, घरेलू उत्पादकों की लाभप्रदता में गिरावट आई है। उपर्युक्त सारणी से निम्नलिखित तथ्य नोट किए जा सकते हैं :

झ. बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने भारत में अपनी विनिर्मित वस्तुएं वर्ष 2008-09 के दौरान से बेचना शुरू की थीं। संबद्ध देशों से वर्ष 2008-09 के दौरान आयातों में वर्ष 2007-08 के दौरान हुए आयातों की तुलना में गिरावट आई। वर्ष 2007-08 की तुलना में वर्ष 2008-09 के दौरान याचिकाकर्ता की बिक्री में भी कमी आई। इससे यह स्पष्ट होता है कि संबद्ध देशों से आयात और याचिकाकर्ता द्वारा सहन की गई क्षति में कोई कारणात्मक संबंध नहीं है। याचिकाकर्ता द्वारा सहन की गई मात्रा क्षति का वास्तविक कारण है बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड से घरेलू प्रतिस्पर्धा।

ज. याचिकाकर्ता की वर्ष 2007-08 में लाभदायक स्थिति वर्ष 2008-09 में हानिदायक स्थिति में बदल गई। वर्ष 2008-09 के दौरान संबद्ध देशों से आयातों में वर्ष 2007-08 की तुलना में गिरावट आई। दूसरी ओर बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की बिक्री वर्ष 2008-09 के दौरान बढ़कर 26,543 एम 3 की हो गई। यह तथ्य कि वर्ष 2008-09 के दौरान जब संबद्ध देशों से आयातों में वास्तव में गिरावट आई तब याचिकाकर्ता को घाटा होना शुरू हो गया, स्पष्टतः दर्शाता है कि संबद्ध देशों से आयात और याचिकाकर्ता द्वारा उठाई जा रही क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है। याचिकाकर्ता द्वारा सहन की जा रही क्षति का वास्तविक कारण है बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड से घरेलू प्रतिस्पर्धा।

ट. बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की बिक्री में वर्ष 2009-10 के दौरान, वर्ष 2008-2009 की तुलना में, लगभग 50 प्रतिशत की और बढ़ोतरी हो गई जिससे याचिकाकर्ता पर मात्रा प्रभाव में और अधिक वृद्धि हुई। अन्य घरेलू उत्पादक की बिक्री में वृद्धि ने याचिकाकर्ता के घाटे को वर्ष 2008-09 के दौरान 36 आधार बिंदु की क्षति से बढ़ाकर वर्ष 2009-10 के दौरान 117 आधार बिंदु कर दिया।

ठ. जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों में 100 प्रतिशत की वृद्धि होने के बावजूद वर्ष 2009-10 की तुलना में जांच अवधि के दौरान याचिकाकर्ता की क्षति में कमी आई। यह भी स्पष्ट दर्शाता है कि याचिकाकर्ता द्वारा सहन की गई क्षति और संबद्ध देशों से आयात के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।

## 5.2 घरेलू उद्योग द्वारा की गई प्रस्तुतियां

क. गैर-क्षतिकारी कीमत की गणना करते समय विनिर्माण उत्पाद पश्चात व्ययों पर विचार नहीं किया जाता है अर्थात् एनआईपी फैक्टरी-बाब्य स्तर पर होनी चाहिए। अतः, निर्यातकों के संबद्ध पक्षकारों द्वारा किए जा रहे खर्चों पर विचार करते हुए लैंडिंग कीमत की गणना करना और फिर उसकी एनआईपी, जो फैक्टरी बाब्य स्तर पर होती है, कीमत से तुलना करने से असंगत आंकड़े प्राप्त होंगे।

ख. उत्तराई मूल्य और अंततः क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सुझाई गई प्रणाली निर्दिष्ट प्राधिकारी की सुस्थापित या संगत प्रक्रिया के विपरीत है। उपर्युक्त के अतिरिक्त, यह प्रस्तुत किया जाता है कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सुझाई गई प्रणाली किसी अधिनियम या नियम के अंतर्गत निर्धारित नहीं की गई है।

ग. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उदधृत मामला विधि गलत स्थान पर उदधृत की गई है और अतः यह नामंजूर की जाती है क्योंकि इन मामलों से उभर कर सामने आए सिद्धांतों से "व्यापार के उसी स्तर" पर तुलना करने के कानून का यदि प्राधिकारी उनके द्वारा विनिर्धारित प्रणाली का अनुसरण करेंगे तो भारतीय पाटनरोधी नियमों और क्रियाविधियों के संदर्भ में उल्लंघन होगा।

घ. घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के संबंध में प्रारंभिक निष्कर्षों में यह नोट किया जाता है कि घरेलू आवेदक की बिक्री में आधार वर्ष अर्थात् 2007-08 की तुलना में जांच की अवधि के दौरान इस तथ्य के बावजूद भी 95 प्रतिशत की गिरावट आई कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में समायोजित मांग 15 प्रतिशत बढ़ गई है। हालांकि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयात आधार वर्ष की तुलना में लगभग दो गुने हो गए थे। उपर्युक्त के आलोक में, यह स्पष्ट है कि हितबद्ध पक्षकारों का यह दावा, कि घरेलू उद्योग को क्षति का प्रमुख कारण है लाफार्ज बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड से घरेलू प्रतिस्पर्धा, सही नहीं है और अतः इसे अस्वीकृत किया जाता है।

### 5.3 मैसर्स जिप्सोम्ना, यूरई की ओर से किया गया प्रस्तुतीकरण

क. बिक्री कीमत में उत्तार-चढ़ाव और उसके परिणामस्वरूप लाभ/हानि के लिए पाटित आयातों को किसी भी तरह से उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है। इसके बजाय ये अधोलिखित को प्रत्यक्षतः परावर्तित करते हैं (i) नई उत्पादन सुविधाएं, जिन्हे पूर्णतः उपयोगी नहीं बनाया जा सका, से उभरकर सामने आई उच्च स्थिर लागत की घटना (ii) शुरूआती प्रचालन (iii) लागत में घट-बढ़ (iv) घरेलू प्रतिस्पर्धा (v) क्षमताओं का उपयोग करने के लिए मांग की कमी। यह प्राकृतिक है कि देश में उत्पाद की मांग के अभाव को देखते हुए संयंत्र और देश में मांग से बढ़कर क्षमता का इष्टतम प्रयोग नहीं किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, लाफार्ज ने वर्ष 2008-09 में अपना वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया और इस अवधि में उसने घरेलू उद्योग के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा करनी शुरू कर दी। इस प्रकार, घरेलू उद्योग आयात कीमत की तुलना में अपनी कीमत बढ़ाने में समर्थ नहीं हो सका और उसे वित्तीय क्षति सहन करनी पड़ी।

ख. आयात कीमत में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री कीमत में वृद्धि करने में अक्षमता स्पष्टतः इस अवधि में एक नए विनिर्माता जिसने देश में महत्वपूर्ण उत्पादन क्षमता स्थापित कर ली है, और अब यह घरेलू उद्योग के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहा है, द्वारा एक ओर घरेलू प्रतिस्पर्धा शुरू किए जाने और दूसरी ओर घरेलू उद्योग द्वारा, एक अन्य उत्पादन सुविधा की स्थापना किए जाने से, स्थिर लागत की वृद्धि करने के कारण हुई।

ग. संपूर्ण अवधि के दौरान समान क्षेत्र की सकारात्मक कीमत अधोरदन और समान क्षेत्र में अधोरदन के बावजूद लाभप्रदायकता में अत्यधिक उत्तार-चढ़ाव स्पष्टतः अधोरदन और लाभप्रदायकता के बीच कारणात्मक संबंध का अभाव स्थापित करता है।

घ. समस्त अवधि के दौरान कम कीमत पर सकारात्मक बिक्री स्पष्टतः सिद्ध करती है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में आयातों के दमनकारी/ अवनतिकारी प्रभाव के कारण परिवर्तन नहीं आया। यह स्पष्टतः वह मामला नहीं है जहां कम कीमत पर बिक्री करने की सीमा में अवधि के दौरान वृद्धि हुई हो। संपूर्ण अवधि के दौरान समान क्षेत्र में कम कीमत पर बिक्री की सीमा समान थी।

ड. केवल यह तथ्य कि आयातक अपने मामले में एक संबद्ध पक्षकार है तथा हमारे मामले में आयातक एक असंबद्ध पक्षकार है, वर्तमान उद्देश्य के लिए, खासकर

एसआईएएम द्वारा पुनर्बिंकी कीमत के विचारार्थ प्रस्तुत किए गए कारणों के मद्देनज़र, पूर्णतया असंगत है। क्रेता संबद्ध है या असंबद्ध, परंतु चूंकि, वस्तु दो सीमाशुल्क प्राधिकारियों के बीच से गुजर चुकी है, इसलिए, क्रेता और बिक्रेता, दोनों को किसी भी हाल में अपनी वस्तुओं की बिक्री करनी होती है। यह वह मामला प्रतीत नहीं होता है जिसमें आयातक ने भारतीय सीमाशुल्क प्राधिकारियों के समक्ष यह दावा किया हो कि निर्यातक के साथ संगम के कारण इसकी आयात कीमत अरोसेमंद नहीं है। यदि भारतीय सीमाशुल्क प्राधिकारियों के समक्ष सीआईएफ स्तर पर आयात कीमत का दावा किया जाता है तो, एसआईएम द्वारा उठाए गए भुद्धे के संबंध में हमारी स्थिति और सियाम की स्थिति में कोई अंतर नहीं है।

6. प्राधिकारी द्वारा दिनांक 6 सितम्बर, 2012 में प्रकटन विवरण जारी किए जाने के पश्चात, मैसर्स विकास ट्रेडिंग कारपोरेशन और मैसर्स बोराल जिप्सम इंडिया (प्राइवेट) लिमिटेड ने इस प्रकटन विवरण को चुनौती देते हुए माननीय मद्रास उच्च न्यायालय में रिट याचिका सं. 2012 की 25304 और 2012 की 25669 दखल की। माननीय न्यायालय ने दिनांक 30 नवम्बर, 2012 के अपने आदेशों के तहत इन रिट याचिकाओं को खारिज कर दिया।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

7. माननीय मद्रास उच्च न्यायालय के उपर्युक्त आदेश के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण और जांच के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अन्य प्रस्तुतिकरणों का इस अंतिम निष्कर्ष में संबंधित क्षेत्रों में निराकरण किया गया है।

#### ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

##### घरेलू उद्योग द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

8. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में जांच की अवधि (पीयूसी) के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए :

(i) विचाराधीन उत्पाद "सभी मोटाई और आयामों का सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड" है, जिसमें निम्नलिखित शामिल नहीं हैं :

क. जिप्सम बोर्ड जिसकी जल अवशोषण क्षमता 5 प्रतिशत सहित और तक है। इन बोर्डों को सामान्यतः "नमी अवरोधी बोर्ड" कहा जाता है जिनका उन स्थानों पर, जहां नमी अवरोधन बांधित है, विशिष्ट अनुप्रयोग होता है। ये नमी अवरोधन गुण कुछ जल प्रतिवारण संयोजकों का संबंधन करने से प्राप्त किया जाता है।

ख. वे जिप्सम बोर्ड जिनकी बोर्ड की प्रति मिलीमीटर मोटाई के अनुरूप अनुप्रस्थ दिशा में न्यूनतम ब्रेकिंग लोड 24 न्यूटन और अनुलम्ब दिशा में 50 न्यूटन हो। इन बोर्डों को विशेष अनुप्रयोगों के लिए टिपिकल ढंग से डिजाइन किया जाता है और इन्हें "इम्पैक्ट रेजिस्टेट बोर्ड" या "अग्नि अवरोधी बोर्ड" कहा जाता है।

(ii) सादा जिप्सम बोर्डों को संपूर्ण विश्व की व्यापारिक बोलचाल की आवा में स्टैंडर्ड जिप्सम बोर्ड, रेगुलर जिप्सम बोर्ड, या जिप्सम बोर्ड कहा जाता है। संबद्ध वस्तु का पार्टीशन अनुपयोग और प्रलम्बित छत का अंतरित निर्माण करने में किया जाता है। संबद्ध वस्तु को अध्याय शीर्षक 680999900 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। संबद्ध वस्तु का टैरिफ शीर्षक 68091100 और 68091900 के अंतर्गत भी आयात किया जा रहा है।

(iii) भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से निर्यातित संबद्ध वस्तु में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु, आंतरिक एवं रासायनिक गुणधर्म, विनिर्माण प्रक्रिया और तकनीक, कार्य और प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, वितरण और विपणन तथा टैरिफ वर्गीकरण जैसे गुणधर्मों के रूप में तुलनीय हैं। दोनों ही तकनीक और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता इन दोनों का प्रयोग अदल-बदलकर कर सकते हैं।

(iv) हितबद्ध पक्षकारों ने अपवर्जन के अपने दावे को औचित्यपूर्ण ठहराने के लिए पर्याप्त आधार प्रस्तुत नहीं किया है। कानून का यह सुस्थापित सिद्धांत है कि विचाराधीन उत्पाद से अपवर्जन सिद्ध करने का दायित्व पूर्णतया दावाकर्ता पक्षकार पर आश्रित होता है। इसके अतिरिक्त, हितबद्ध पक्षकारों ने तकनीकी विनिर्देशनों का उल्लेख किया है, परंतु उसे गोपनीय रखा गया है।

(v) 5 प्रतिशत सहित और तक की जल अवशोषण क्षमता युक्त नमी अवरोधक बोर्डों का "विचाराधीन उत्पाद" के रूप में दावा नहीं किया गया है। अतः "नमी अवरोध युक्त जिप्सम सीलिंग बोर्ड" का अपवर्जन करने का प्रश्न ही नहीं उठता।

(vi) "फायर बोर्डस और "शीफ्ट वाल" बोर्डों को "विचाराधीन उत्पाद" की परिधि से पहले ही हटा दिया गया है। तथापि, यदि निम्नलिखित सारणी में दिए गए विनिर्देशनों को पूरा करने वाले फायर बोर्डों का अपवर्जन कर दिया जाता है तो घरेलू उद्योग को कोई टिप्पणी नहीं करनी है :

गुणधर्म	विनिर्देशन	परीक्षण विधि	अंतिम उपयोग
वजन	12.5 मि.मी. के लिए न्यूनतम 9.8 किग्रा/एम 2 और 15 मिमी के लिए न्यूनतम 11.7 किग्रा/एम 2	आई एस 2542	
बोर्ड पर ड्रैडिंग	बोर्ड के प्रकार का उल्लेख किया जाना चाहिए		वह क्षेत्र जिसके लिए उच्चतर फायर रेटिंग अपेक्षित है जैसे सर्वर कक्ष, लिफ्ट क्षेत्र आदि। ईएन 520, टाइप एफ को अनुपालन करता है
बोर्ड की क्षमता (अनुदैर्घ्य)	9.5 मिमी - न्यूनतम 400 एन	आई एस 2542	
	12.5 मिमी - न्यूनतम 550 एन		
	15 मिमी - न्यूनतम 650 एन		

फायर रेटिंग	80 मिमी मोटे सिस्टम के लिए न्यूनतम 60 मिनट	बी एस 476 पार्ट 6 बी एस 476 पार्ट 7 बी एस 476 पार्ट 20 एवं 22	
-------------	--	--	--

(vii) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए विनिर्देशन के अनुरूप ताप बोर्ड को अलग नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु है और उसे वाणिज्यिक एवं तकनीकी रूप से प्रतिस्थापित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इस बोर्ड का संबद्ध देश से जांच अवधि के दौरान भारत में वास्तविक आयात, यदि कोई, नहीं हुआ।

(viii) "फायर हीट बोर्ड या अग्नि अवरोधी बोर्डों को विचाराधीन उत्पाद से पहले ही हटा दिया गया है वशर्ते कि वे उसमें उल्लिखित तकनीकी प्रक्रिया को पूरा करते हैं और इसलिए कोई विशिष्ट अपवर्जन करने का प्रश्न ही नहीं है। तथापि, यदि निम्नलिखित तालिका में उल्लिखित विनिर्देशनों को पूरा करने वाले अग्नि बोर्डों का अपवर्जन किया जाता है तो घरेलू उद्योग कोई विशिष्ट टिप्पणी नहीं करेगा।

गुणधर्म	विनिर्देशन	परीक्षण विधि	अंतिम उपयोग
वजन	12.5 मि.मी. के लिए न्यूनतम 9.8 किग्रा/ एम 2 15 मिमी के लिए न्यूनतम 11.7 किग्रा/एम 2	आई एस 2542	
बोर्ड पर ब्रैडिंग	बोर्ड के प्रकार का उल्लेख किया जाना चाहिए		
बोर्ड की क्षमता (अनुदैर्घ्य)	9.5 मिमी - न्यूनतम 400 एन	आई एस 2542	
	12.5 मिमी - न्यूनतम 500 एन		दीवार लाइनिंग और सीलिंग सिस्टम, वाष्प नियंत्रण युक्त संवर्धित अग्निशमन प्रणाली देने के लिए। ईएन 14190 का अनुपालन करता है
	15 मिमी - न्यूनतम 650 एन		
फायर रेटिंग	80 मिमी मोटे सिस्टम के लिए न्यूनतम 60 मिनट	बी एस 476 पार्ट 6 बी एस 476 पार्ट 7 बी एस 476 पार्ट 20 एवं 22	
थर्मल सुचालकता	न्यूनतम 0.24 डब्ल्यू/एमके		

(ix) अधोलिखित विनिर्देशनों वाले इको बोर्ड्स को विचाराधीन उत्पाद से अलग किया जा सकता है :-

गुणधर्म	विनिर्देशन	परीक्षण विधि	अंतिम उपयोग
---------	------------	--------------	-------------

वजन	12.5 मि.मी. के लिए न्यूनतम 9.8 किग्रा/ एम 2 15 मिमी के लिए न्यूनतम 11.7 किग्रा/एम 2	आई एस 2542	दीवार लाइनिंग और सीलिंग सिस्टम, वाष्प नियंत्रण युक्त संवर्धित अग्निशमन प्रणाली देने के लिए। ईएन 14190 का अनुपालन करता है
बोर्ड पर ब्रैडिंग	बोर्ड के प्रकार का उल्लेख किया जाना चाहिए		
बोर्ड की क्षमता (अनुदैर्घ्य)	9.5 मिमी - न्यूनतम 400 एन	आई एस 2542	
	12.5 मिमी - न्यूनतम 500 एन		
	15 मिमी - न्यूनतम 650 एन		
फायर रेटिंग	80 मिमी मोटे सिस्टम के लिए न्यूनतम 60 मिनट	बी एस 476 पार्ट 6 बी एस 476 पार्ट 7 बी एस 476 पार्ट 20 एवं 22	
थर्मल सुचालकता	न्यूनतम 0.24 डब्ल्यू/एमके		

(x) यदि अधोलिखित सारणी में उल्लिखित विनिर्देशनों को पूरा करने वाले इम्पैक्ट बोर्ड को हटा दिया जाता है तो घरेलू उद्योग को कोई आपत्ति नहीं होगी :

गुणधर्म	विनिर्देशन	परीक्षण विधि	अंतिम उपयोग
वजन	12.5 मि.मी. के लिए न्यूनतम 9.8 किग्रा/ एम 2 15 मिमी के लिए न्यूनतम 11.7 किग्रा/एम 2	आई एस 2542	दीवार लाइनिंग और सीलिंग सिस्टम, वाष्प नियंत्रण युक्त संवर्धित अग्निशमन प्रणाली देने के लिए। ईएन 14190 का अनुपालन करता है
बोर्ड पर ब्रैडिंग	बोर्ड के प्रकार का उल्लेख किया जाना चाहिए		
बोर्ड की क्षमता (अनुदैर्घ्य)	9.5 मिमी - न्यूनतम 400 एन	आई एस 2542	
	12.5 मिमी - न्यूनतम 550 एन		
	15 मिमी - न्यूनतम 650 एन		
फायर रेटिंग	80 मिमी मोटे सिस्टम के लिए न्यूनतम 60 मिनट	बी एस 476 पार्ट 6 बी एस 476 पार्ट 7 बी एस 476 पार्ट 20 एवं	

		22	
थर्मल सुचालकता	न्यूनतम 0.24 डब्ल्यू/एमके		

(xi) प्रतिवादियों द्वारा उल्लिखित एंटी मोल्ड या बैंदर बोर्ड का अपवर्जन नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह बोर्ड विचाराधीन उत्पाद के "समान वस्तु" है और उसे वाणिज्यिक रूप से या तकनीकी रूप से प्रतिस्थापित कर सकता है। इसके अतिरिक्त हितबद्ध पक्षकारों ने इस मामले का कोई अकाद्य प्रमाण नहीं दिया है कि बोर्ड किस तरह से विचाराधीन उत्पाद से वाणिज्यिक और तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं है।

(xii) प्रतिवादियों द्वारा उल्लिखित थर्मल बोर्ड का अपवर्जन नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह बोर्ड विचाराधीन उत्पाद के "समान वस्तु" है और उसे वाणिज्यिक रूप से या तकनीकी रूप से प्रतिस्थापित कर सकता है। इसके अतिरिक्त हितबद्ध पक्षकारों ने इस मामले का कोई अकाद्य प्रमाण नहीं दिया है कि बोर्ड किस तरह से विचाराधीन उत्पाद से वाणिज्यिक और तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं है।

(xiii) मैसर्स आर्मस्ट्रांग द्वारा आयात किए जा रहे "नमी अवरोध युक्त जिप्सम सीलिंग बोर्ड" का विचाराधीन उत्पाद के विस्तार से अपवर्जन करने के लिए की गई प्रस्तुतिकरणों के संबंध में प्राधिकारी का ध्यान आवेदक द्वारा परिभाषित विचाराधीन उत्पाद की ओर आकृष्ट किया जाता है जिसमें 5 प्रतिशत तक और सहित के जल अवशोषण के नमी अवरोधी बोर्डों का "विचाराधीन उत्पाद" के रूप में दावा नहीं किया गया है।

(xiv) यह एक सुस्थापित सिद्धांत है कि पाटनरोधी विशेष उपाय है और इसका संरक्षण केवल उन्हीं मामलों तक मांग जाना चाहिए जहां पाटन हो रहा है और उससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है। यह सुझाव देना अनर्गल होगा कि घरेलू उद्योग विचाराधीन उत्पाद को परिभाषित करने में चयनात्मक रही है। घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्माण किए जा रहे उत्पादों के संबंध में प्राधिकारी को संपूर्ण जानकारी उपलब्ध करा दी गई है।

(xv) नमी अवरोध बोर्डों और फायर रजिस्टेट बोर्डों का आयात अत्यधिक उच्चतर कीमतों पर हो रहा है जिसका घरेलू उद्योग पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं है। यदि घरेलू उद्योग ने इन उत्पादों को "विचाराधीन उत्पाद" के दायरे में शामिल किया होता तो उन्हीं हितबद्ध पक्षकारों ने यह मामला उठाया होता कि उन उत्पादों को क्यों शामिल किया गया है जो "समान वस्तु" नहीं है और जो घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं पहुंचा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, विशेष गुणाधर्म वाले इन उत्पादों का घरेलू उद्योग और कुल घरेलू बाजार के कुल कारोबार में बहुत छोटा हिस्सा होता है।

(xvi) अपवर्जित किए गए सभी बोर्डों के तकनीकी विनिर्देशों का निष्कर्ष में उल्लेख किया जाना चाहिए।

(xvii) कुछ बोर्डों के अपवर्जन को सिद्ध करने का दायित्व पूर्णतया उस पक्षकार पर होता है जो अपवर्जन का दावा करता है। ऐसे दावे अकाट्य साक्ष्य पर आधारित होने चाहिए और उन्हें तकनीकी और वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता का टेस्ट अनिवार्य रूप से पास करना चाहिए।

(xviii) प्राधिकारी ने इस आधार पर कि घरेलू उद्योग ने इन वस्तुओं के उत्पादन एवं आपूर्ति का कोई दस्तावेजी साक्ष्य नहीं दर्शाया है, इसलिए त्रुटिवश विचाराधीन उत्पाद से बोर्ड की कई वैरायटियों का अपवर्जन कर दिया है। सफेद फिल्म में सीलबद्ध एल्युमिनियम के किनारों वाला जिप्सम सीलिंग बोर्ड, हीट बोर्ड, एंटी-मोल्ड बोर्ड, वैंडर बोर्ड एवं थर्मल बोर्ड विचाराधीन उत्पाद के "समान वस्तुएं" हैं क्योंकि ये बोर्ड वाणिज्यिक एवं तकनीकी रूप प्रतिस्थापित किए जा सकते हैं।

(xix) यदि जांच के दायरे से सीलिंग टाइल्स (सामान्यतः 600 मिमी X 600 मिमी साइज के) को हटा दिया जाता है तो घरेलू उद्योग को कोई आपत्ति नहीं होगी क्योंकि उनका यह इरादा कभी नहीं था कि उन्हें विचाराधीन उत्पाद में शामिल किया जाए।

(xx) हितबद्ध पक्षकार द्वारा यह दावा किया गया कि उत्पाद की प्रतिस्थापनीयता का निश्चय करने के मुख्य तत्वों में से एक तत्व इसका "अंतिम प्रयोग" होता है। चूंकि सादा बोर्ड और विशिष्ट बोर्डों का अंतिम उपयोग पूर्णतया अलग होता है, इसलिए इन्हें समान वस्तु नहीं कहा जा सकता है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा इसका अपवर्जन किए जाने के लिए किया गया दावा घरेलू उद्योग के समान वस्तु के संबंध में किए गए दावे को स्वतः सुदृढ़ करता है।

#### उत्पादों/निर्यातकों/आयातकों/और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

9. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा जांच के दौरान निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए :

(i) जिप्सम बोर्ड प्राथमिकतः दो प्रकार के होते हैं : सादा बोर्ड और तकनीकी बोर्ड/तकनीकी जिप्सम प्लास्टर बोर्ड की निम्नलिखित किसीं का विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अपवर्जन कर दिया जाना चाहिए :

क) फायर बोर्ड : "शीफ्ट वाल" बोर्डों सहित वे जिप्सम बोर्ड जो बीएस476 : पार्ट 20 और 22 के अनुरूप 30 मिनट से अधिक के फायर फायर एक्सपोजर पर फायर रेटिंग को पूरा करते हैं। इन बोर्डों में विशेष रूप से बनाई गई अन्यन्तर होती है जो इसे श्रेष्ठतर अग्नि अवरोध और उच्चतर शक्ति प्रदान करता है। इन बोर्डों का उन क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है जहां उच्चतर अग्नि रेटिंग की जरूरत होती है जैसे सर्वर कक्ष, लिफ्ट क्षेत्र आदि।

ख) ताप बोर्ड : पॉलियस्टर मेटलीकृत फ्वाइल जिप्सम बोर्ड जो बैंक साइड पर कड़ाई से बांड किया गया हो तथा कम से कम 75 प्रतिशत सौर परावर्तन देता हो। इन बोर्डों का प्रयोग उन स्थानों का विभाजन करने के लिए किया जाता है जहां भारी मात्रा में ताप विकिरण होता हो जैसे जनरेटर कक्ष या उन स्थानों पर जहां, चारों ओर के गर्म वातावरण से इंसुलेशन की जरूरत पड़ती हो जैसे भवन का सबसे ऊपर का तला।

ग) फायर हीट बोर्ड : जिप्सम बोर्ड जो बी एस 476 : पार्ट 20 और 22 (एकजिहिबिट 1 बी और एकजिहिबिट 1 सी के रूप में प्रतियां संलग्न) के अनुरूप फायर एक्सपोजर पर 30 मिनट से अधिक की फायर रेटिंग स्टैंडर्ड को पूरा करता हो और इसके पृष्ठभाग पर पॉलिएस्टर की धात्वीकृत फ्वायल कसकर बांधी गई हो और जो कम से कम 75 प्रतिशत सौर परावर्तन देता हो। इन बोर्डों में एक विशेष रूप से बनाया गया अभ्यन्तर होता है जो श्रेष्ठ अग्नि अवरोध और उच्चतर शक्ति प्रदान करता है तथा बोर्ड के पृष्ठ भाग पर संघनीकरण के जोखिम को कम करने के लिए इसके पीछे की ओर कसकर बांधी गई धात्वीकृत पॉलिएस्टर फ्वाइल होती है। इन बोर्डों का प्रयोग उन स्थानों की सुरक्षा करने के लिए किया जाता है जहां आग लगने का डर रहता है और जहां दीवार की लाइनिंग होती है।

घ) ईसीएचओ बोर्ड : जिप्सम बोर्ड जिनके साइडों पर वर्गाकार या चक्राकार छिद्र होते हैं जो इसे ध्वनि समाहित करने की विशेष क्षमता प्रदान करते हैं। इन बोर्डों में अनुरणन कक्षों में आई एस 8225-1987 के अनुरूप 0.65 से 0.80 की श्रृंखला में "ध्वनि घटाव गुणांक" ("एनआरसी") होते हैं। इन बोर्डों का प्रयोग चलचित्र गृहों, रिकार्डिंग कक्षों और अन्य ऐसे स्थानों पर किया जाता है जहां ध्वनि का अनुरणन प्रभाव न्यूनतम करना होता है।

इ) इम्पैक्ट बोर्ड : उच्च घनत्व वाले कोर युक्त जिप्सम बोर्ड जो उन्हें नियमित स्टैंडर्ड बोर्ड की तुलना में उच्चतर ब्रेकिंग लोड शक्ति प्रदान करता है। यह सामान्यतः उच्च टैकिक जौन एरिया में प्रयोग किया जाता है जैसे पावदान, सीड़ियां आदि जहां अक्सर भारी बोझ का आवागमन होता है। इन बोर्डों का वजन 12.5 मिमी मोटाई वाले (+/0.35 किग्रा/एम2) 12.5 किग्रा प्रति वर्गमीटर होता है जबकि 12 मिमी मोटाई के सामान्य बोर्ड का वजन लगभग 9 किलोग्राम प्रति वर्गमीटर होता है। इस प्रकार इम्पैक्ट बोर्ड सामान्य बोर्डों की तुलना में 50 प्रतिशत ज्यादा वजनील होते हैं और इसलिए इनका प्रयोग उन स्थानों पर होता है जहां भारी वजन स्टोर करना हो या भारी वजन लाना ले जाना हो।

घ) एंटी मोल्ड बोर्ड या वैंडर बोर्ड : जिप्सम बोर्ड, अभ्यन्तर में जुड़े कुछ विशेष संयोजक तथा इसके सतह से जुड़ा एक विशेष पेपर लाइनर जो इसे मोल्ड या फंगस वृद्धि से सुरक्षा प्रदान करती है जिससे ये एंटी मोल्ड स्टैंडर्ड (एसटीएम स्टैंडर्ड) डी 3273 के अंतर्गत आता है। इन बोर्डों का अस्पतालों, भांडागारों तथा उन अन्य क्षेत्रों में विशेष प्रयोग होता है जहां नमी ज्यादा होती है या कुछ असामान्य स्थितियां होती हैं।

छ) थरमल बोर्ड : जिप्सम बोर्ड, जिनके पृष्ठ भाग पर पीवीए ग्ल्यू को प्रयोग करके एक एक्सपीएस संघटक पैनल बनाया जाता है जो बोर्ड की कम मोटाई पर भी अतिरिक्त थरमल इंसुलेशन प्रदान करता है।

(ii) मैसर्स आर्मस्ट्रांग द्वारा आयात किया जा रहा नमी अवरोध युक्त जिप्सम सीलिंग बोर्ड विचाराधीन उत्पाद की अपवर्जित श्रेणी में आता है और इसलिए उसे वर्तमान जांच के दायरे से विशेष रूप से हटा दिया जाना चाहिए। इसी तरह, सफेद फिल्म में सीलबंद एल्युमिनियम के किनारे वाला जिप्सम सीलिंग बोर्ड भी विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग कर दिया जाना चाहिए।

(iii) वर्तमान मामले में विचाराधीन उत्पाद की परिभाषा अत्यधिक वरणात्मक है और इससे पाटनरोधी कानून का दुरुपयोग हो सकता है। याचिकाकर्ता ने बड़े चुनिंदा ढंग से विचाराधीन उत्पाद के दायरे पर विचार किया है और उन उत्पादों को अलग कर दिया है जिनका याचिकाकर्ता भारत में उत्पादन नहीं करता है तथा जिसका याचिकाकर्ता द्वारा अपने प्रत्यायित समुद्रपारीय संयंत्र से आयात किया जा रहा है।

(iv) याचिकाकर्ता ने "नमी अवरोधी बोर्ड" और "अग्नि अवरोधी बोर्ड" को विशेष रूप से अलग कर दिया है क्योंकि याचिकाकर्ता इन अपवर्जित श्रेणियों का अपनी थार्डलैंड स्थित एक अनुषंगी/सिस्टर कन्सर्न से आयात कर रहा है।

(v) इस जांच का दायरा केवल "सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड" तक सीमित है और "सादा बोर्ड" के अलावा किसी अन्य बोर्ड को इस जांच के दायरे से अलग कर दिया जाना चाहिए।

(vi) याचिकाकर्ता ने बड़े घयनात्मक ढंग से विचाराधीन उत्पाद के दायरे पर विचार किया तथा उन उत्पादों को इससे अलग कर दिया जिनका याचिकाकर्ता भारत में उत्पादन नहीं कर रहा है और जिनका याचिकाकर्ता द्वारा अपने समुद्रपारीय प्रत्यायित संयंत्र से आयात किया जा रहा है जिससे उसे ज्यादा आमदनी हो सके। याचिकाकर्ता ने अपना आधार बनाए रखने के लिए विचाराधीन उत्पाद के दायरे को जानबूझकर सीमित कर दिया है।

(vii) विचाराधीन उत्पाद के दायरे से विशेषज्ञता बोर्ड का अपवर्जन करने से सेण्ट गोविन कंपनी अत्यधिक आयात करने के बावजूद अपने को घरेलू उद्योग के रूप में "स्थापित करने" में सक्षम रही है। चूंकि विशेषज्ञता बोर्डों को सादा बोर्डों के साथ बेचा जाता है इसलिए, उपभोक्ता किसी भी हाल में संबद्ध देशों में विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं से स्पेशियलिटी बोर्डों का आयात नहीं करेंगे और इस प्रकार घरेलू उद्योग इन स्पेशियलिटी बोर्डों से संरक्षित है।

viii) यह एक सुस्थापित तथ्य है कि केवल असमान वस्तुओं को ही विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग किया जा सकता है। यदि हटाए गए/शामिल किए गए उत्पाद समान/एक ही वस्तु है तो उन्हें हटाया नहीं जा सकता है। याचिका में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह स्थापित करता हो कि अपवर्जित उत्पाद असमान वस्तुएं कैसे हैं और शामिल की गई वस्तुएं समान वस्तुएं कैसे हैं। याचिकाकर्ता को विचाराधीन उत्पाद के दायरे की प्रक्रिया का चयन करने को न्यायोचित ठहराना होगा। सादा एवं स्पेशियलिटी बोर्डों के बीच लागत का अंतर 5-10 प्रतिशत है। ऐसा मामला होने पर समान वस्तु को स्पेशियलिटी बोर्डों के रूप में माना जाना चाहिए।

- (ix) यदि प्रवंचना का भय हो तो याचिकाकर्ता को ही तकनीकी विनिर्देशन देना चाहिए क्योंकि उन्होंने ही विचाराधीन उत्पाद को सादा जिप्सम बोर्ड तक सीमित कर दिया है। अन्य सभी बोर्डों पर विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अपवर्जित उत्पाद के रूप में विचारा जाना चाहिए।
- (x) याचिकाकर्ता ने चुनिंदा आधार पर विचाराधीन उत्पाद के दायरे पर विचार किया और उस प्रकार के उत्पादों का अपवर्जन कर दिया जिनका याचिकाकर्ता द्वारा अपने समुदपारीय प्रत्यायित संयंत्रों से आयात किया जा रहा है।
- (xi) विचाराधीन उत्पाद के दायरे के केवल असमान वस्तुओं का ही अपवर्जन किया जा सकता है। यदि अपवर्जित किए गए एवं शामिल किए गए उत्पाद समान/एक जैसी वस्तुएं हैं जो उनका अपवर्जन नहीं किया जा सकता है। सादा एवं विशिष्टतायुक्त बोर्ड के बीच 5-10 प्रतिशत का लागत अंतर है। ऐसा मामला होने पर समान वस्तुओं को विशिष्टता बोर्ड के रूप भाना जाना चाहिए।
- (xii) ~~स्लिपिंग ट्राइल्स~~, सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड से भिन्न उत्पाद हैं और उन्हें जांच के दायरे से हटा दिया जाना चाहिए।

### प्राधिकारी जांच

10. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद, जांच शुरूआत अधिसूचना में प्राधिकारी द्वारा यथापरिभाषित "सभी मोटाई और आयाम का सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड" है, इसमें अधोलिखित का अपवर्जन किया गया है :

- (i) 5 प्रतिशत सहित और तक की जल अवशोषण क्षमता वाला जिप्सम बोर्ड। इन बोर्डों को सामान्यतः "नमी अवरोधक बोर्ड" के रूप में जाना जाता है जिनका उन स्थानों पर विशेष प्रयोग होता है जहां नमी अवरोधन की आवश्यकता पड़ती है। ये नमी अवरोधन गुणधर्म कुछ जल प्रस्त्रिवारण संयोजक जोड़ने से प्राप्त किया जाता है।
- (ii) जिप्सम बोर्ड जिनका न्यूनतम ब्रेकिंग लोड बोर्ड की प्रति मिमी मोटाई के अनुसार अनुप्रस्थ दिशा में 24 न्यूटन और अनुदैर्घ्य दिशा में 50 न्यूटन हो। बोर्ड जिन्हें विशेष अनुप्रयोग के लिए डिस्ट्रिब्युटर द्वारा डिजाइन किया जाता है उन्हें "डिस्ट्रिब्युटर अवरोध बोर्ड" या "अविन अवरोधी बोर्ड" कहा जाता है।

11. सादा जिप्सम बोर्डों को संपूर्ण विश्व की व्यापारिक भाषा में स्टैंडर्ड जिप्सम बोर्ड, रेग्युलर जिप्सम बोर्ड या जिप्सम बोर्ड के रूप में जाना जाता है। संबद्ध वस्तु का प्रयोग प्रलम्बित छत का आंतरिक निर्माण करने और विभाजन अनुप्रयोगों के लिए किया जाता है।

12. सादा जिप्सम बोर्डों को अध्याय शीर्षक 68091100 के अंतर्गत निम्नलिखित रूप में वर्णकृत किया जाता है :

टैरिफ मद	वस्तु का विवरण
68	पत्थर, प्लास्टर, सीमेंट, एस्वेस्टास, अध्रक या समान सामग्री की बनी वस्तुएं, सिरेमिक उत्पाद, शीशा और शीशे के बरतन
6809	प्लास्टर या प्लास्टर पर आधारित संघटकों की वस्तुएं बोर्डस शीट्स, पैनल्स टाइल्स और समान वस्तुएं जो सजित न हों।
68091100	कागज या कागज बोर्ड से फेस्ड या प्रबलित

13. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि संबद्ध वस्तु का टैरिफ शीर्षक संख्या 68091100 के अलावा अन्य टैरिफ शीर्षकों जैसे 68099900 और 68091900 के अंतर्गत भी आयात किया जाता है। परंतु प्राधिकारी नोट करते हैं कि डीजीसीआई एंड एस आंकड़ों के अनुसार संबद्ध वस्तु का आयात केवल टैरिफ शीर्षक संख्या 68091100 और 68091900 के अंतर्गत ही किया जाता है। तथापि सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतक है और यह किसी भी तरह से वर्तमान जांच के दायरे के अंतर्गत बाध्यकारी नहीं है।

14. जांच के दौरान विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के बारे में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतीकरण और प्राधिकारी द्वारा संगत माने गए प्रस्तुतिकरणों का उल्लेख निम्नवत किया जाता है :

- (i) प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद को सभी मोटाई और आयाम वाले सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड के रूप में परिभाषित करके जांच शुरू करते हैं, इसमें 5 प्रतिशत सहित और तक की जल अवशोषण क्षमता वाले जिप्सम बोर्ड तथा जिप्सम बोर्ड जिनका न्यूनतम ब्रेकिंग लोड बोर्ड की प्रति मिमी मोटाई के अनुसार अनुप्रस्थ दिशा में 24 न्यूटन और अनुदैर्घ्य दिशा में 50 न्यूटन हो, को शामिल नहीं किया गया है।
- (ii) प्राधिकारी नोट करते हैं कि सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड को संपूर्ण विश्व की व्यापारिक भाषा में स्टैंडर्ड जिप्सम बोर्ड, रेग्युलर जिप्सम बोर्ड, या साधारणतया जिप्सम बोर्ड के रूप में जाना जाता है। संबद्ध वस्तु का प्रयोग प्रलम्बित छत का निर्माण और विभाजन कार्यों के लिए किया जाता है।
- (iii) प्राधिकारी नोट करते हैं कि वे जिप्सम प्लास्टर बोर्ड जिन्हें विशेष अनुपयोगों के लिए विशिष्ट ढंग से बनाया जाता है जिससे कि वे नमी अवरोध या अग्नि अवरोध या इम्पैक्ट अवरोध प्रदान कर सके तथा उनका उल्लेख "नमी अवरोधक बोर्ड", "इम्पैक्ट रेजिस्टेट बोर्ड" या "अग्निक अवरोधक बोर्ड" के रूप में किया जाता है और इस कारण वे वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग रखे गए हैं।
- (iv) प्राधिकारी नोट करते हैं कि वे जिप्सम प्लास्टर बोर्ड दो तरह के होते हैं अर्थात सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड और विशेषीकृत या तकनीकीकृत या मूल्यवर्धित जिप्सम प्लास्टर बोर्ड। विभिन्न प्रकार के जिप्सम प्लास्टर बोर्ड की उत्पादन प्रक्रिया न्यूनाधिक रूप से समान होती है। तथापि अंतिम उत्पाद में वांछित गुणधर्म प्राप्त करने के लिए विशिष्ट इनपुट/संयोजक जोड़े जाते हैं।
- (v) शुरुआत के पश्चात हितबद्ध पक्षकारों ने विचाराधीन उत्पाद के दायरे से फायर बोर्डस, हीट बोर्डस, फायर हीट बोर्डस, इको बोर्डस, इम्पैक्ट बोर्डस, एंटी मोल्ड बोर्डस या वैदर बोर्डस, थर्मल बोर्डस,

नमी अवरोधक युक्त जिप्सम सीलिंग बोर्ड्स और सफेद फिल्म में सीलबद्ध एल्युमीनियम के किनारों वाले जिप्सम सीलिंग बोर्ड को हटाने का दावा किया था। इस मामले की निम्नवत जांच की जाती है :

### फायर बोर्ड्स

- ❖ हितबद्ध पक्षकारों ने निवेदन किया कि "फायर बोर्ड्स" वे जिप्सम प्लास्टर बोर्ड हैं जो आग लगने पर 30 मिनट से अधिक तक फायर रेटिंग स्टैंडर्ड को पूरा करते हैं क्योंकि इन बोर्डों में एक विशेष रूप से बनाई गई अभ्यंतर होती है जो इन्हें बेहतर क्वालिटी की फायर रेजिस्टेट क्षमता प्रदान करती है और उन्होंने इसका विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अपवर्जन करने का अनुरोध किया है। घरेलू उद्योग उनके द्वारा प्रदत्त विनिर्देशनों के अध्याधीन इस प्रकार के बोर्ड का अपवर्जन करने पर सहमत हो गया। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद सभी तरह की मोटाई और आयाम वाला सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड है और इस कारण फायर बोर्डों तथा "अग्नि अवरोधक बोर्डों" को विचाराधीन उत्पाद के अभिप्राय से अलग रखा गया है।

### अग्नि ताप बोर्ड्स

- ❖ हितबद्ध पक्षकारों ने प्रस्तुतीकरण किया है कि फायर हीट बोर्ड्स जिप्सम प्लास्टर के बने वे बोर्ड होते हैं जो बीएस 476 : पार्ट 20 और 22 (एक्जिहिबिट 1 बी और एक्जिहिबिट 1 सी के रूप में प्रतियां संलग्न) के अनुरूप फायर एक्सपोजर पर 30 मिनट से अधिक की फायर रेटिंग स्टैंडर्ड को पूरा करते हैं और इसके पृष्ठ भाग पर पालिएस्टर की धात्वीकृत फवायल कसकर बांधी गई हो जो कम से कम 75 प्रतिशत तक सौर परावर्तन देती हो। इन बोर्डों का प्रयोग उन स्थानों पर सुरक्षा प्रदान कराने के लिए किया जाता है जहां आग लगने का जोखिम ज्यादा हो। इसके अतिरिक्त वाल लाइनिंग के रूप में भी इनका प्रयोग किया जाता है। घरेलू उपयोग ने प्रस्तुतिकरण दिया कि फायर हीट बोर्ड्स और फायर रेजिस्टेट बोर्डों को "विचाराधीन उत्पाद" से पहले ही अलग कर दिया गया है बशर्ते कि वे उनके द्वारा निर्धारित तकनीकी प्रक्रिया को पूरा करते हों और इसलिए विशिष्ट अपवर्जन करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। प्राधिकारी नोट करते हैं वर्तमान जांच का विचाराधीन उत्पाद सभी मोटाई एवं आयाम वाला सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड है और "फायर रेजिस्टेट बोर्ड्स" अवरोधक बोर्ड है इस कारण उन्हें विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखा गया है।

### इम्पैक्ट बोर्ड्स

- ❖ प्राधिकारी नोट करते हैं कि "इम्पैक्ट बोर्ड्स" उस तरह के जिप्सम प्लास्टर बोर्ड होते हैं जिनका उच्च घनत्व अभ्यंतर होता है जो उन्हें उच्चतर ब्रेकिंग लोड प्रदान करता है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतीकरण के अनुसार उच्चतर ब्रेकिंग लोड क्षमता वाले इन जिप्सम बोर्डों का प्रयोग उन उच्च ट्रैफिक जोन ऐरिया जैसे पावान, सीडियां आदि में किया जाता है जहां भारी बोझ की अक्सर आवाजाही होती है। हितबद्ध पक्षकारों ने आगे प्रस्तुत किया कि 12.5 मिमी मोटाई ( $+/-0.35$  किग्रा/एम<sup>2</sup>) वाले इन बोर्डों का वजन 12.5 किलोग्राम प्रति वर्गमीटर होता है जबकि 12 मिमी मोटाई वाले स्टैंडर्ड बोर्ड का वजन लगभग 9 किलोग्राम प्रति वर्गमीटर होता है। घरेलू उद्योग ने प्रस्तुतिकरण किया है कि "इम्पैक्ट बोर्डों" को "विचाराधीन उत्पाद" के दायरे से पहले ही अलग कर दिया गया है बशर्ते कि वे उनके द्वारा उल्लिखित तकनीकी प्रक्रिया को पूरा करते हों और इसलिए कोई विशिष्ट अपवर्जन

करने का प्रश्न ही नहीं उठता है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि वर्तमान जांच का विचाराधीन उत्पाद सभी तरह की मोटाई एवं आयाम वाला सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड है और इस कारण "इम्पैक्ट बोर्ड्स" को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग रखा गया है।

### नमी अवरोध युक्त जिप्सम सीलिंग बोर्ड

- ❖ प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों ने "नमी अवरोध युक्त जिप्सम सीलिंग बोर्ड का अपवर्जन करने का अनुरोध किया है। प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने सूचना दी है कि 5 प्रतिशत सहित और तक की जल अवशोषण क्षमता युक्त नमी अवरोधक बोर्डों को "विचाराधीन उत्पाद" के दायरे से पहले ही अलग कर दिया गया है और अतः नमी अवरोधन युक्त जिप्सम सीलिंग बोर्ड का विशिष्ट अपवर्जन करने का प्रश्न ही नहीं उठता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच का विचाराधीन उत्पाद सभी तरह की मोटाई और आयाम वाला सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड है और इस कारण "नमी अवरोधक युक्त जिप्सम सीलिंग बोर्ड" जो नमी अवरोधक बोर्ड है, को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग रखा जाता है।

### इको बोर्ड्स

- ❖ प्राधिकारी नोट करते हैं कि "इको बोर्ड्स" वे जिप्सम प्लास्टर बोर्ड होते हैं जिनमें विशेष ध्वनि अवशोषण गुणधर्म होता है। हितबद्ध पक्षकारों ने प्रस्तुतिकरण किया है कि इको बोर्डों में किनारों पर चक्राकर या वर्गाकर छिद्र होते हैं तथा इनमें अनुरणन कक्षों में आई एस 8225-1987 के अनुरूप 0.65 से 0.80 की श्रृंखला में "ध्वनि घटाव गुणांक" (एनआरसी) होते हैं। उन्होंने आगे यह भी बताया कि इन बोर्डों में ध्वनि अवशोषण की विशिष्ट क्षमता होने के कारण इनका प्रयोग सिनेमागृहों, रिकार्डिंग कक्षों और अन्य ऐसे स्थानों पर किया जाता है जहां ध्वनि का अनुरणन प्रभाव न्यूनतम करना होता है। प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग उनके द्वारा बताए गए विनिर्देशों के अनुरूप "इको बोर्ड्स" का पीयूसी के दायरे से अपवर्जन करने पर सहमत हो गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच का विचाराधीन उत्पाद सभी मोटाई और आयाम वाला सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड है और "इको बोर्ड" जिप्सम प्लास्टर बोर्ड का विशिष्ट/मूल्यवर्धित रूपांतर है। प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने उनके द्वारा दावाकृत तकनीकी विनिर्देशों की सम्पुष्टता में जांचावधि सहित संपूर्ण क्षति अवधि में उनके द्वारा "इको बोर्ड" के उत्पादन का कोई प्रामाणिक दस्तावेजी साक्ष्य नहीं दिया है। उपर्युक्त के मद्देनज़र प्राधिकारी नोट करते हैं कि "इको बोर्ड" चूंकि जिप्सम प्लास्टर बोर्ड का एक विशेष/मूल्यवर्धित रूपांतर है, इसलिए इसे विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखा जाता है।

### हीट बोर्ड

- ❖ हितबद्ध पक्षकारों ने उल्लेख किया कि 'हीट बोर्ड' एक जिप्सम प्लास्टर बोर्ड ही होता है जिसके पृष्ठ आग पर पालिएस्टर की धात्वीकृत फ्लाइल कस कर चिपकी होती है जो इसे कम से कम 75 प्रतिशत सौर परावर्तन प्रदान करता है और उन्होंने इसे विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखने का दावा किया है। परंतु, घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि इस टाइप का बोर्ड विचाराधीन उत्पाद के समान उत्पाद है और वाणिज्यिक और तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया है कि जांच की अवधि के दौरान इस बोर्ड का संबद्ध देश से भारत में भौतिक

आयात नहीं हुआ है और अनुरोध किया है कि 'हीट बोर्ड' को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग न रखा जाए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद सभी मोटाई और आयाम का सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड है और 'हीट बोर्ड' जिप्सम प्लास्टर बोर्ड का स्पेशल/मूल्यवर्धित उत्पाद है। प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने जांच की अवधि का कोई प्रामाणिक दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है। उपर्युक्त स्थिति में प्राधिकारी नोट करते हैं कि 'हीट बोर्ड' जिप्सम प्लास्टर बोर्ड का विशेष/मूल्य वर्धित उत्पाद होने के कारण हीट बोर्ड को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखा जाता है।

### एंटी-मोल्ड बोर्ड्स या वैंडर बोर्ड्स

❖ हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यथाप्रस्तुत "एंटी मोल्ड बोर्ड्स या वैंडर बोर्ड्स" वे जिप्सम प्लास्टर बोर्ड होते हैं जिसके अभ्यन्तर में कुछ विशेष संयोजक जुड़े होते हैं और इसकी सतह पर एक स्पेशल पेपर लाइनर होता है जो इसे मोल्ड या फंगस वृद्धि से सुरक्षा प्रदान करता है। उन्होंने आगे उल्लेख किया कि इन बोर्डों को प्रयोग अस्पतालों, अंडागारों और उन क्षेत्रों में होता है जहां नमी ज्यादा होती है या जहां असामान्य पर्यावरणीय स्थितियां होती हैं। हितबद्ध पक्षकारों ने इस तरह के जिप्सम प्लास्टर बोर्डों का विचाराधीन उत्पाद की परिधि से बाहर रखने का अनुरोध किया है। इसके विपरीत घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि यह विचाराधीन उत्पाद के समान मद है और उसे वाणिज्यिक एवं तकनीकी रूप से प्रतिस्थापित किया जा सकता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच का विचाराधीन उत्पाद सभी मोटाई एवं आयाम वाला सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड है और "एंटी मोल्ड बोर्ड या वैंडर बोर्ड" जिप्सम प्लास्टर बोर्ड का विशेष/मूल्यवर्धित रूपांतर है। प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने जांच अवधि सहित क्षति अवधि के दौरान जिप्सम प्लास्टर बोर्ड की इस वैरायटी के उत्पादन और आपूर्ति का कोई साक्षात्कृत दस्तावेजी प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया है। उपर्युक्त स्थिति के मद्देनजर प्राधिकारी नोट करते हैं कि "एंटी-मोल्ड बोर्ड्स या वैंडर बोर्ड्स" जिप्सम प्लास्टर बोर्ड का एक विशेष/मूल्यवर्धित रूपांतर है इसलिए इसे विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखा जाता है।

### थर्मल बोर्ड्स

❖ हितबद्ध पक्षकारों ने निवेदन किया है कि "थर्मल बोर्ड्स" जिप्सम प्लास्टर बोर्ड के थे बोर्ड होते हैं जिनके पृष्ठ भाग पर पीवीए गल्यू का प्रयोग करके एकसपीएस कम्पोजिट फैनल को चिपकाया जाता है जो बोर्ड को न्यूनतर मोटाई का अतिरिक्त थर्मल इंसुलेशन प्रदान करता है और अतः इसे विचाराधीन उत्पाद के आशय से अलग किया जा सकता है। इसके विपरीत घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि थर्मल बोर्ड का अपवर्जन नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह बोर्ड "विचाराधीन उत्पाद" के समान वस्तु है तथा वाणिज्यिक एवं तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच का विचाराधीन उत्पाद सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड है और "थर्मल बोर्ड" जिप्सम प्लास्टर बोर्ड का मूल्यवर्धित/ विशेष रूपांतर है। प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने जांच अवधि सहित क्षति अवधि के दौरान जिप्सम प्लास्टर बोर्ड की इस वैरायटी के उत्पादन और आपूर्ति का कोई प्रामाणिक दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है। उपर्युक्त स्थिति के मद्देनजर प्राधिकारी नोट करते हैं कि "थर्मल बोर्ड" जिप्सम प्लास्टर बोर्ड का एक विशेष/मूल्यवर्धित रूपांतर है, इसलिए इसे विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग रखा जाता है।

### सफेद फिल्म में सीलबंद एल्युमिनियम के किनारे वाला जिप्सम सीलिंग बोर्ड

❖ हितबद्ध पक्षकारों ने सफेद फिल्म में सीलबंद एल्युमिनियम के किनारे वाला जिप्सम सीलिंग बोर्ड को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग रखने का अनुरोध किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं वर्तमान जांच का विचाराधीन उत्पाद सभी मोटाई एवं आयाम वाला जिप्सम प्लास्टर बोर्ड है और सफेद फिल्म में सीलबंद एल्युमिनियम के किनारे वाला जिप्सम सीलिंग बोर्ड "जिप्सम प्लास्टर बोर्ड" का मूल्यवर्धित/ विशिष्ट रूपांतर है इसलिए इसे विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग रखा जाता है। प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं घरेलू उद्योग ने जांच अवधि सहित क्षमता अवधि के दौरान उक्त वैरायटी के उत्पादन और आपूर्ति का कोई प्रामाणिक दस्तावेजी साक्ष्य भी प्रस्तुत नहीं किया है।

### सीलिंग टाइल्स

❖ हितबद्ध पक्षकारों ने प्रस्तुतिकरण किया है कि सीलिंग टाइल्स विचाराधीन उत्पाद से भिन्न हैं और वे वर्तमान जांच के दायरे से अलग हैं। घरेलू उद्योग ने भी अपने प्रस्तुतिकरण में यह बात मानी है कि सीलिंग टाइल्स; विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग हैं और इसलिए वर्तमान जांच के दायरे से अलग हैं।

15. चूंकि वर्तमान जांच का विचाराधीन उत्पाद सभी मोटाई और आयाम वाला जिप्सम प्लास्टर बोर्ड हैं और उपर्युक्त स्थिति के महेनजर प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्ष में पाटनरोधी उपायों के दायरे में निम्नलिखित उत्पादों का अपवर्जन करने की सिफारिश की थी और इसलिए उन्हें अंतिम जांच निष्कर्ष से भी अलग रखा है:

- 5 प्रतिशत तक और सहित जल अवशोषण क्षमता युक्त जिप्सम बोर्ड (नभी अवरोधक बोर्ड)
- जिप्सम बोर्ड जिनका न्यूनतम ब्रेकिंग लोड बोर्ड की प्रति भिन्नी मोटाई के अनुसार अनुप्रस्थ दिशा में 24 न्यूट्रान्स और अनुदैर्घ्य दिशा में 50 न्यूट्रान्स है। (इम्पैक्ट रेजिस्टेस बोर्ड या फायर रेजिस्टेस बोर्ड)
- फायर बोर्ड्स
- फायर हीट बोर्ड्स
- इम्पैक्ट बोर्ड्स
- नभी अवरोधन युक्त जिप्सम सीलिंग बोर्ड
- इको बोर्ड
- हीट बोर्ड
- एन्टीमोल्ड बोर्ड्स या वेदर बोर्ड्स
- थर्मल बोर्ड्स
- जिप्सम सीलिंग बोर्ड्स विध एल्युमिनियम एजेंज सील्ड इन व्हाइट फिल्म
- सीलिंग टाइल्स

16. घरेलू उद्योग के इस प्रस्तुतीकरण के संबंध में कि सभी अपवर्जित बोर्डों के तकनीकी विनिर्देशनों का जांच परिणाम में विशेष रूप से उल्लेख किया जाना चाहिए क्योंकि उनके अभाव में प्रवंचना होगी, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए निवेदनों का अंतिम निष्कर्ष में काफी हद तक प्रतिबिम्बित होता है प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद की जांच में पहले

ही नोट किया है कि इस विचाराधीन जांच का उत्पाद सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड है इसलिए जिप्सम प्लास्टर बोर्ड के सभी विशेष/तकनीकी/मूल्यवर्धित रूपांतरों को विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखा गया है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग ने अपवर्जित वस्तु के उत्पादन और आपूर्ति के संबंध में कोई प्रामाणिक दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है। इस तथ्य पर विचार करते हुए कि चूंकि वर्तमान जांच का विचाराधीन उत्पाद सभी मोटाई और आयाम वाला सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड है इसलिए अन्य सभी उत्पादों को एतद्वारा विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अलग कर दिया गया है। प्रवंचना के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा व्यक्त भ्रय परिकल्पनात्मक है। ऐसा होते हुए भी, ऐसी स्थिति में प्रवंचना के संबंध में नियमों का एक अन्य सेट है जिसका आश्रय लिया जा सकता है।

17. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों और उन प्रस्तुतिकरणों की उपर्युक्त जांच के मद्देनज़र प्राधिकारी धारित करते हैं कि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद "सभी मोटाई और आयाम का सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड" है, जिसमें निम्नलिखित शामिल नहीं हैं :-

- 5 प्रतिशत तक और सहित जल अवशोषण क्षमता युक्त जिप्सम बोर्ड (नमी अवरोधक बोर्ड)
- जिप्सम बोर्ड जिनका न्यूनतम ब्रेकिंग लोड बोर्ड की प्रति मिमी मोटाई के अनुसार अनुप्रस्थ दिशा में 24 न्यूट्रान्स और अनुदैर्घ्य दिशा में 50 न्यूट्रान्स हो। (इम्पैक्ट रेजिस्टेस बोर्ड या फायर रेजिस्टेस बोर्ड)
- फायर बोर्ड्स
- फायर हीट बोर्ड्स
- इम्पैक्ट बोर्ड्स
- नमी अवरोधन युक्त जिप्सम सीलिंग बोर्ड
- इको बोर्ड
- हीट बोर्ड
- एन्टीमोल्ड बोर्ड्स या वेदर बोर्ड्स
- थर्मल बोर्ड्स
- जिप्सम सीलिंग बोर्ड्स विध एल्युमिनियम एजेंज सील्ड इन व्हाइट फिल्म
- सीलिंग टाइल्स

### समान वस्तु

18. पाटनरोधी नियमावली का नियम 2 (घ) समान वस्तु को निम्नवत परिभाषित करता है।

"समान वस्तु" का आशय उस वस्तु से जो भारत में पाटित की जा रही जांचाधीन वस्तु के सभी तरह से समान या समरूप हो या ऐसी वस्तु के अभाव में कोई अन्य वस्तु जो यद्यपि सभी तरह से समान न हो फिर भी उसके गुणधर्म जांचाधीन वस्तु के निकटतम समान हों।

19. घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि संबद्ध वस्तु, जिसका भारत में पाटन किया जा रहा है उनके द्वारा उत्पादित किए जा रहे उत्पाद के समरूप हैं। घरेलू उद्योग ने पुनः दावा किया है कि उनके उत्पाद और संबद्ध देशों से निर्यातित संबद्ध वस्तु के बीच कोई जात अंतर नहीं है और वे अपने गुणधर्मों जैसे भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्म, निर्माण प्रक्रिया एवं तकनीक कार्यों एवं प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण,

वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण के रूप में तुलनीय है और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देशों से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है तथा दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय है। हितबद्ध पक्षकारों ने भी घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित की जा रही संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देशों से निर्यातित वस्तु की समानता के संबंध में कोई विवाद नहीं किया है।

20. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देशों से निर्यातित वस्तु में कोई अंतर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देशों से आयातित वस्तु अपने गुणधर्मों और शैंक्तिक एवं रासायनिक गुणधर्म, निर्माण प्रक्रिया एवं तकनीक कार्य एवं प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण के रूप में तुलनीय है और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देशों से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है तथा दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रति स्थापनीय है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस संबंध में कोई आपत्ति नहीं की है। उपभोक्ता इनका प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर कर रहे हैं। उपर्युक्त के मध्येनजर घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु को संबद्ध देशों से आयातित विचाराधीन उत्पाद के समान घरेलू वस्तु के रूप में माना जा रहा है और दोनों को वाणिज्यिक और तकनीकी रूप से प्रतिस्थापनीय माना जाता है और अतः नियमों के अनुरूप दोनों समान वस्तु हैं।

#### घ. घरेलू उद्योग का दायरे एवं आधार

##### घरेलू उद्योग द्वारा किया गया प्रस्तुतिकरण

21. घरेलू उद्योग के दायरे और आधार के संबंध में घरेलू उद्योग के विचार निम्नलिखित हैं -

- (i) घरेलू उद्योग संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के किसी निर्यातक से संबंधित नहीं है। घरेलू उद्योग ने अपने आवेदन में स्वयं निरूपणीय रूप से यह स्पष्ट किया है कि वे संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के किसी निर्यातक से संबंधित नहीं हैं।
- (ii) कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने दावा किया है कि आवेदक घरेलू उद्योग में संबद्ध देशों से कुछ निर्यातक शामिल हैं और इसलिए नियम 2(ख) के अनुरूप उनपर पात्र घरेलू उद्योग" के रूप में विचार नहीं किया जा सकता है। नियम 2(ख) के अंतर्गत अपवर्जन केवल तभी किया जा सकता है जब उत्पादक किसी निर्णायक से जुड़ा हो या उसका स्वयं का आयात हो या उसका आयात किसी संबंधित आयातक के जरिए होता हो। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने नियम 2(ख) के संदर्भ में घरेलू उद्योग द्वारा की गई घोषणा के विपरीत कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है।

##### निर्यातक/उत्पादक/आयातक और अन्य हितबद्ध पक्षकार द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण

22. घरेलू उद्योग के दायरे और आधार के संबंध में जांच की अवधि के दौरान आयातकों/निर्यातकों/उत्पादकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं -

- (i) याचिकाकर्ताओं के यूएई और थाईलैंड में संयंत्र है, जिनका विवरण निर्दिष्ट प्राधिकारी को नहीं दिया गया है।
- (ii) चूंकि तकनीकी प्रकार के उत्पादों का संबद्ध व्यक्तियों द्वारा निर्यात किया जा रहा है, इसलिए याचिकाकर्ता ने इन्हें विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर रखा है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

23. घरेलू उद्योग के दायरे एवं आधार के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा जांच के दौरान किए गए प्रस्तुतिकरणों और प्राधिकारी द्वारा संगत माने गए प्रस्तुतिकरणों का निम्नलिखित निराकरण किया जाता है -

- (i) पाटनरोधी नियमावली का नियम 2(ख) घरेलू उद्योग को निम्नवत परिभ्राषित किया गया है :-

"घरेलू उद्योग" का आशय समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी क्रियाकलाप में संलिप्त समग्र रूप में घरेलू उत्पादकों या उन लोगों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का अधिकांश हिस्सा बनता है, केवल उस स्थिति को छोड़कर जब ये उत्पादक तथाकथित पाटित वस्तु के आयातक या निर्यातक से जुड़े हों या उन वस्तुओं के स्वयं आयातक हों, ऐसे मामले में "घरेलू उद्योग" का उल्लेख शेष उत्पादकों के रूप में किया जा सकता है।

- (ii) प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच में आवेदन मैसर्स सेण्ट गोबिन जायप्राक इंडिया लिमिटेड द्वारा घरेलू उद्योग की ओर से दायर किया गया था। मैसर्स सेण्ट गोबिन जायप्राक इंडिया लिमिटेड द्वारा प्रस्तुत कराई गई जानकारी के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु का एक अन्य उत्पादक भी है जिसका नाम है मैसर्स लाफार्ज बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (एलबीजीआई) है जिसको बाद में बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (एलबीजीआई) के रूप में पुनर्नामित किया गया। संबद्ध वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन में आवेदक कंपनी के 79 प्रतिशत हिस्से का दावा किया गया था और शेष हिस्सा मैसर्स लाफार्ज बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड का है। तथापि, आवेदक कंपनी द्वारा किए गए दावे के अनुसार मैसर्स लाफार्ज बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड संबद्ध वस्तु का नियमित आयातक है और उसने संबद्ध वस्तु का जांच की अवधि के दौरान भी आयात किया है और तद्वारा, नियमों के अनुरूप वे घरेलू उद्योग की स्थिति प्राप्त करने के पात्र नहीं हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि मैसर्स लाफार्ज बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड सहित किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस तथ्य का विरोध नहीं किया है।
- (iii) प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने अपने दावे के प्रमाण में दस्तावेजी सार्वज्ञ प्रस्तुत करके यह उल्लेख नहीं किया है कि मैसर्स सेण्ट गोबिन जायप्राक इंडिया लिमिटेड ने संबद्ध देश से संबंधित कंपनियों से जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का भारत में आयात किया है। हो सकता है कि उनकी कुछ संबंधित कंपनियों ने जिप्सम प्लास्टर बोर्ड की वैरायटी से अपर्विजित वस्तुओं का संबद्ध देशों से निर्यात किया हो, परंतु इससे वे नियमों के अनुसार घरेलू उद्योग का दर्जा प्राप्त करने के लिए अपात्र नहीं हो जाते हैं। उपर्युक्त स्थिति के मद्देनज़र

प्राधिकारी विचार करते हैं कि मैसर्स सेंट गोविन जायप्राक इंडिया लिमिटेड का भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन में प्रमुख हिस्सा है और इसलिए नियमानुसार वह घरेलू उद्योग है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग ने संबद्ध देशों से जिप्सम प्लास्टर बोर्ड की मूल्यवर्धित वस्तुओं का स्वयं उनके द्वारा किए गए आयात के संबंध में जानकारी दी है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि चूंकि मूल्यवर्धित जिप्सम प्लास्टर बोर्ड विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर है इसलिए घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध देशों से उनके द्वारा निर्यात किए जा रहे मूल्यवर्धित जिप्सम प्लास्टर बोर्ड का आयात किए जाने के संबंध में दी गई जानकारी वर्तमान जांच से संगत नहीं है।

### इ. गोपनीयता

#### जांच के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा गोपनीयता के संबंध में किया गया प्रस्तुतिकरण

24. गोपनीयता के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं -

- क्षमता और उत्पादन की मात्रा से संबंधित जानकारी का दावा गोपनीय के रूप में नहीं किया जा सकता है।
- प्राधिकारी को चाहिए कि वे असहयोगी निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य की गणना और अवशिष्ट शुल्कों के परिकलन के विवरण का खुलासा करें।
- सुनवाई के दौरान निर्दिष्ट प्राधिकारी को यूएई राजदूतावास द्वारा दिए गए पत्र का घरेलू उद्योग को परिचालन किया जाना चाहिए।

#### उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया प्रस्तुतिकरण

- डीजीसीआई एंड एस आंकड़े, जिन पर प्राधिकारी ने भरोसा किया है, प्रतिवादियों को उपलब्ध नहीं कराए गए हैं।
- याचिकाकर्ता ने याचिका के साथ आईबीआईएस (अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय सूचना सेवा) द्वारा यथाप्रदत्त अपरिष्कृत आयात आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए हैं। इन आंकड़ों के लिए गोपनीयता का दावा नहीं किया जा सकता है।
- घरेलू उद्योग द्वारा दिया गया यह तर्क निराधार है कि असहयोगकारी निर्यातकों के अंतिम आंकड़ों का खुलासा किया जाए।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

25. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों के गोपनीयता दावों की जांच की है। प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत सार्वजनिक फाइल के साक्ष्यों के अगोपनीय पाठ को, अनुरोध पर नियम 6(7) के अनुसार हितबद्ध पक्षकारों को निरीक्षण के लिए उपलब्ध कराया है।

26. जानकारी की गोपनीयता के संबंध में पाठनरोधी नियमावली के नियम 7 में प्रावधान है कि :

गोपनीय सूचना : (1) नियम 6 के उपनियमों और (7), नियम 12 के उपनियम (2)( (3) (2), नियम 15 के उपनियम (4) और नियम 17 के उपनियम (4) में किसी बात का उल्लेख होते हुए और नियम 5 के उपनियम (1) के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों की प्रतियां या किसी पक्षकार द्वारा जांच

के दौरान निर्दिष्ट प्राधिकारी को गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई कोई अन्य जानकारी को यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी उसकी गोपनीयता से संतुष्ट हो जाते हैं तो निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा उन्हें गोपनीय के रूप में माना जाएगा और ऐसी सूचना का प्रकटन किसी अन्य पक्षकार को, उक्त जानकारी प्रदान करने के लिए पक्षकार द्वारा विशिष्ट प्राधिकृतीकरण के बिना, नहीं किया जाएगा।

(2) निर्दिष्ट प्राधिकारी गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों से यह अपेक्षा करते हैं कि वे उनका अगोपनीय सार भी प्रस्तुत करे और ऐसी जानकारी देने वाले पक्षकार के विचार से यदि इस जानकारी का सार प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है तो उक्त पक्षकार उसके कारणों का विवरण निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत करेगा कि उक्त जानकारी का सार प्रस्तुत करना संभव क्यों नहीं है।

(3) उपनियम (2) में उल्लिखित किसी बात के होते हुए भी यदि प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट है कि गोपनीयता का अनुरोध आवश्यक नहीं है या सूचना प्रदाता अपनी जानकारी सार्वजनिक करने या इसका सामान्यीकृत या सार रूप में प्रकटन प्राधिकृत करने का अनिच्छुक है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसी जानकारी की अवहेलना कर सकते हैं।

27. अंतिम निष्कर्ष देने से पहले अनिवार्य तथ्यों का प्रकटन करने के प्रावधान का उल्लेख पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 में किया गया है। नियम 16 के अंतर्गत भी गोपनीय तथ्यों का "संबद्ध हितबद्ध पक्षकारों" को खुलासा करना अपेक्षित है जबकि अगोपनीय तथ्य सभी हितबद्ध पक्षकारों को बताए जा सकते हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी किसी भी स्तर पर गोपनीय पाठ का प्रकटन प्रतिस्पर्धी एवं परस्पर विरोधी हितबद्धों को करने के लिए सशक्त नहीं है।

28. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वास्तविक आंकड़ों का प्रकटन करने के बजाय सामान्य मूल्य, गैरक्षतिकारी मूल्य आदि की स्थापना करने और तुलना करने के लिए प्रयोग किए गए प्रणाली विज्ञान के कारणों का पूर्ण स्पष्टीकरण दे दिया जाना भी पर्याप्त है। सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और गैरक्षतिकारी कीमत पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत गोपनीय जानकारी पर आधारित होते हैं और उनके संगणन का प्रकटन करना प्रतिस्पर्धियों के लिए प्रतिस्पर्धात्मक रूप से पर्याप्त लाभदायक होगा और इसका प्रकटन करने से जानकारी देने वाले व्यक्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।

29. यह नोट किया जाता है कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा जांच को सुकर बनाने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रदान कराई गई वाणिज्यिक रूप से संवेदनशील और गोपनीय जानकारी का विश्वास एवं भरोसा तोड़कर प्रकटन करना, घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों मोर्चों पर बाजार माहौल को पूर्णतः प्रदूषित कर देगा। घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत बिक्री लागत परियोजना रिपोर्ट आदि से संबंधित गोपनीय जानकारी का प्रकटन करने से घरेलू एवं समुद्रपारीय प्रतिस्पर्धियों को अनुसूचित लाभ होगा और इससे उपभोक्ताओं के समक्ष घरेलू उद्योग की स्थिति अलाभदायक हो जाएगी। इसी तरह निर्यातकों से संबंधित गोपनीय जानकारी जैसे सामान्य मूल्य, निवल निर्यात कीमत, उत्तराई कीमत आदि का प्रकटन करने से उनके वाणिज्यिक हित को क्षति पहुंचेगी तथा उनके प्रतिस्पर्धियों एवं क्रेताओं को लाभ होगा।

30. प्राधिकारी ये नोट करते हैं कि निर्यात कीमत, पाटनमार्जिन क्षतिमार्जिन, सीएनबी, एनआईपी आदि, जो घरेलू उद्योग उत्पादकों/निर्यातकों की वाणिज्यिक रूप से संवेदनशील जानकारी पर आधारित होते हैं, का सभी हितबद्ध पक्षकारों को खुलासा नहीं किया जा सकता है। तथापि सहयोगकर्ता निर्यातक और

घरेलू उद्योग के संबंध में सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत, पाटनमार्जिन और गैर क्षतिकारी कीमत संबंधी जानकारी का अलग-अलग पक्षकारों को खुलासा कर दिया गया है।

31. मौखिक सुनवाई के दौरान यूएई के राजदूतावास द्वारा प्रस्तुत पत्र के बारे में घरेलू उद्योग के निवेदन के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसे हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए सार्वजनिक फाइल में रख दिया गया है।

32. जहां तक हितबद्ध पक्षकारों के इस निवेदन का संबंध है कि प्राधिकारी ने डीजीसीआई एवं एस आंकड़े, जिनपर उसने भरोसा किया है, प्रतिवादियों को उपलब्ध नहीं कराए गए हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि डीजीसीआई एवं एस के लेनदेन वार आंकड़ों में गोपनीय जानकारी जैसे आयातक का नाम, बीजक का विवरण आदि होता है इसलिए प्राधिकारी ने लेनदेन वार डीजीसीआईएस आयात आंकड़े हितबद्ध पक्षकारों को मुहैया नहीं कराए हैं।

### च. पाटन मार्जिन का निर्धारण करने की प्रणाली

#### जांच के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

33. घरेलू उद्योग द्वारा सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन आदि के संबंध में किए गए प्रस्तुतिकरण निम्नलिखित हैं।

- (i) यूएई में गैस की कीमतों पर सरकार का समर्थन और नियंत्रण होता है। जोन कार्य जो यूएई में गैस की आपूर्ति करता है, सरकार के नियंत्रण वाली एक कंपनी है। इसके महेनज़र ये नहीं कहा जा सकता है कि यूएई में गैस की कीमतें व्यापार कीमतों को प्रतिबिम्बित करती हैं। विशेष बाजार स्थिति के कारण प्राधिकारी यूएई में निर्यातक के सामान्य मूल्य को अस्वीकार कर सकते हैं और बाजार निर्धारित कीमतों के आधार पर बनी कोई प्रणाली अंगीकार कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी सामान्य मूल्य के उद्देश्य के लिए निर्यातक की घरेलू बिक्री कीमत की अवहेलना कर सकते हैं क्योंकि संबंधित निर्यातक का क्षमता उपयोग 25 प्रतिशत से 31 प्रतिशत है और ऐसे मामले में किसी भी कंपनी के लिए यह संभव नहीं होता है कि उच्च प्रति यूनिट निर्धारित लागत के कारण वह लाभ अर्जित कर सके।
- (ii) थाइलैंड में जिप्सम की कीमतें सरकार द्वारा नियंत्रित हैं और उनसे बाजार कीमत प्रदर्शित नहीं होती है इसलिए प्राधिकारी को चाहिए कि थाइलैंड में जिप्सम की घरेलू बिक्री कीमत को नामंजूर कर दें। इसके महेनज़र, घरेलू कीमत और निर्यातकों की लागत के आधार पर सामान्य मूल्य की भी अवहेलना कर देनी चाहिए। प्राधिकारी को चाहिए कि वे थाइलैंड के बारे में निर्भित सामान्य मूल्य (सीएनवी) पर पहुंचने के लिए जिप्सम के बाजार मूल्य पर भरोसा करें।
- (iii) असहयोगकारी निर्यातक के लिए फैक्टरी बाह्य कीमत सहयोगकारी निर्यातक के न्यूनतम फैक्टरी बाह्य कीमत पर आधारित नहीं होनी चाहिए क्योंकि इससे असहयोगकारी निर्यातक को अनुचित लाभ होगा। असहयोगकारी निर्यातक की फैक्टरी बाह्य कीमत

डीजीसीआईएस आंकड़ों से उपलब्ध न्यूनतम सीआईएफ कीमत पर आधारित होना चाहिए।

- (iv) थाईलैंड के निर्यातक ने प्रश्नावली प्रत्युत्तर में स्वयं स्वीकार किया है कि उन्होंने घरेलू बाजार में उसी मोटाई की किसी मात्रा की बिक्री नहीं की है जिसका उन्होंने भारत को निर्यात किया है। तथापि, प्रारंभिक निष्कर्षों में यह उल्लेख किया गया है कि सामान्य मूल्य उसी समान मोटाई के बोर्ड की घरेलू बिक्री कीमत पर आधारित है जिसका भारत को निर्यात किया गया है। इसे स्पष्ट करने की जरूरत है।
- (v) हितबद्ध पक्षकारों की यह आपत्ति निराधार है कि घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तु की थाईलैंड में वास्तविक बिक्री कीमत प्रदान नहीं की है जबकि इसकी थाईलैंड में एक संबद्ध कंपनी है। समूह में प्रत्येक निकाय स्वतंत्र प्रबंधन युक्त एक अलग कानूनी निकाय है। संबद्ध निकाय ने अपनी गोपनीय जानकारी को घरेलू उद्योग के साथ शेयर करने से मना कर दिया है।

#### उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत निवेदन

34. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में उत्पादकों/निर्यातकों/ आयातकों/और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत निवेदन निम्नलिखित है :

- (i) संबद्ध वस्तु की नाप-जोख करने के लिए समुचित इकाई वर्गमीटर ( $\text{एम}^2$ ) है, न कि मीटर क्यूब ( $\text{एम}^3$ )।
- (ii) घरेलू उद्योग द्वारा दावाकृत एफओबी कीमत का 143 प्रतिशत समुद्री भाड़ा अंतर्कसंगत है। परिवहन लागत लगभग 20 अमरीकी डालर प्रति मीटर क्यूब है।
- (iii) प्रारंभिक निष्कर्षों में प्राधिकारी ने ठीक ही निष्कर्ष निकाला है कि थाईलैंड में सरकार द्वारा निर्धारित जिप्सम की न्यूनतम निर्यात कीमत थाईलैंड में उपलब्ध जिप्सम की घरेलू बिक्री कीमत को प्रभावित नहीं करेगी। इस संबंध में हम यह भी स्पष्ट करना चाहते हैं कि भारत सरकार भी भारत से लौह अयस्क का निर्यात करने पर निर्यात शुल्क लगाता है। इसका मतलब यह नहीं कि भारत में लौह अयस्क की घरेलू बिक्री कीमत सरकार द्वारा प्रभावित होती है।
- (iv) सेंट गोबिन ने यूएई/थाईलैंड के लिए सामान्य मूल्य का निर्माण किया है। यह इस तथ्य के बावजूद है कि उनकी यूएई/थाईलैंड में अपनी निजी अनुषंगी कंपनी है जो जिप्सम प्लास्टर बोर्ड का उत्पादन करती है। ऐसा मामला होने के कारण, याचिकाकर्ता ने जानबूझकर इन देशों में वास्तविक बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का साक्ष्य प्रदान नहीं कराया है। उन्होंने निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह कहकर गुमराह किया कि संबद्ध देश में उक्त उत्पाद की कीमतें उपलब्ध नहीं हैं और इस तथ्य के बावजूद कि उनकी निर्यातक देशों की घरेलू कीमत में आसान पैठ है, पाटन दर्शने के लिए उच्च उत्पादन लागत अंगीकार की है।

(v) संबद्ध देशों से केवल जांच अवधि के दौरान ही आयातों में वृद्धि नवीन उत्पादन और उसक परिणामस्वरूप यूएई से निर्यातों के कारण हुई है।

(vi) जिप्समना निवेदन करता है कि नियमों के अंतर्गत स्टार्ट-अप के लिए उचित समायोजन का प्रावधान है। कंपनी के स्टार्ट-अप प्रचालन के महेनज़र जांच अवधि में उत्पादन लागत का समायोजन उपयुक्त ढंग से किया जाना अपेक्षित है। इस तरह समायोजित उत्पादन लागत घरेलू बिक्री के संबंध में बिक्री कीमत से कम है। जांच अवधि के दौरान अल्पक्षमता उपयोगीकरण के बावजूद जिप्समना की लाभप्रदायक स्थिति समायोजित स्टार्ट-अप लागत के कारण ही है।

(vii) घरेलू उद्योग द्वारा अपने इस दावे के समर्थन में कि यूएई में प्राकृतिक गैस की कीमतें बाजार बलों पर आधारित नहीं होती हैं, कोई तथ्य या साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है। याचिकाकर्ता द्वारा पातीप्रापीलीन एडी मामले के साथ बिठाई गई समानता तथ्यतः गलत है। भारत में भी इन उपयोगी वस्तुओं की आपूर्ति भारत सरकार की एजेंसियों द्वारा की जा रही है। तथापि, इसका मतलब यह नहीं है कि उनके द्वारा बिक्री किए जा रहे उत्पादों की कीमतें बाजार मूल्य को प्रदर्शित नहीं करती हैं।

(viii) याचिकाकर्ता ने अपने इस दावे के संबंध में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है कि थाईलैंड में जिप्सम की कीमतें थाईलैंड सरकार द्वारा नियंत्रित होती हैं। याचिकाकर्ता का यह तर्क आधारहीन है कि थाईलैंड में जिप्सम की घरेलू बिक्री कीमतें थाईलैंड सरकार द्वारा नियंत्रित होती हैं और इसलिए घरेलू कीमतों के आधार पर सामान्य मूल्य और निर्यातक की लागत की अवगानना की जानी चाहिए। भारत सरकार भी भारत से लौह अयस्क का निर्यात करने पर निर्यात शुल्क लगाती है। इसका मतलब यह नहीं है कि भारत सरकार लौह अयस्क की घरेलू बिक्री कीमत का नियमन करती है।

(ix) जहां तक यूएई का संबंध है जिप्समना द्वारा प्रश्नावली प्रत्युत्तर में दर्शाई गई निर्यात की मात्रा याचिकाकर्ता द्वारा सुनिश्चित आयात मात्रा से उच्चतर है। ऐसा मामला होने पर, वर्तमान मामले में "किसी अन्य निर्यातक" की मौजूदगी का प्रश्न ही नहीं उठता है और इसलिए "किसी अन्य निर्यातक" के लिए अलग कीमत मानने का औचित्य ही नहीं है। विभेदकारी और न्यूनतर कीमतों का प्रश्न तभी उठता है जब कोई ऐसा उत्पादक या निर्यातक हो जिसने असहयोग को अधिमानता दी हो।

(x) मैसर्स नौफ ने विचाराधीन उत्पाद के अंत तक वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया था। उन्होंने जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का कोई निर्यात नहीं किया है। इसके आलोक में प्राधिकारी को शुल्क सारणी में नौफ का उल्लेख नए निर्यातक के रूप में करना चाहिए और इस स्तर पर इस कंपनी की "न्यू शिपर रिट्यू" (एनएसआर) के रूप में जांच करनी चाहिए।

(xi) जिप्सम बोर्ड के आईबीआईएस आयातों में नापतौल का पीसेस, पैक, संख्या, बैग, किग्रा, एसएचटी, वर्गमीटर, सीटीएन आदि के रूप में उल्लेख किया गया है। जबकि याचिकाकर्ता द्वारा विचाराधीन उत्पाद की प्रदान कराई गई आयात लिस्टिंग (जो आई बीआईएस से ही है) में आयातों का उल्लेख केवल पीसेस, संख्या और वर्गमीटर में किया गया है। इससे प्रतीत होता है कि याचिकाकर्ता ने अपने द्वारा किए गए आयातों को शामिल नहीं किया है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

35. घरेलू उद्योग और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में किए गए प्रस्तुतिकरणों पर प्राधिकारी ने सहयोगकर्ता एवं असहयोगकर्ता निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण करते समय उपर्युक्त ढंग से विचार किया है। तथापि वर्तमान जांच के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए विशिष्ट मुद्दों का प्राधिकारी ने निम्नवत् निराकरण किया है :

(i) घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया है कि यूएई में गैस की कीमतों पर सरकारी समर्थन है और उन पर सरकार का नियंत्रण है और अतः यह नहीं कहा जा सकता है कि यूएई में गैस की कीमतें बाजार कीमतों को प्रदर्शित करती हैं। उन्होंने आगे प्रस्तुत किया कि इस विशिष्ट बाजार स्थिति के कारण प्राधिकारी को निर्यातक के यूएई में सामान्य मूल्य को अस्वीकार कर देना चाहिए और बाजार निर्धारित कीमतों के आधार पर सुविकसित प्रणाली को अपनाना चाहिए। अपने प्रति तर्क में हितबद्ध पक्षकारों ने प्रस्तुतिकरण किया है कि भारत में श्री उपयोगी वस्तुओं की आपूर्ति भारत सरकार की एजेंसियों द्वारा की जाती है। तथापि, इसका आशय यह नहीं है कि उनके द्वारा बेचे जाने वाले उत्पादों की कीमत बाजार मूल्य का प्रदर्शन नहीं करती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस तर्क से भना नहीं किया है कि यूएई में गैस की कीमतों पर सरकारी नियंत्रण नहीं है। तथापि, यूएई में गैस की आपूर्ति पर सरकार के नियंत्रण की मौजूदगी यह निष्कर्ष निकालने का आधार नहीं हो सकती है कि यूएई में दोहरी कीमत नीति मौजूद है। घरेलू उद्योग ने आरोप लगाया है कि घरेलू उत्पादकों पर, निर्यातकों पर प्रभारित की जा रही दर की तुलना में, गैस के प्रथम प्रभार लिए जाते हैं अपने तर्क के समर्थन में घरेलू उद्योग ने गैस का आयात करने के बारे में जापान के लिए आयात आंकड़ों को प्रस्तुत किया है। प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की संबंधित कंपनी के पास यूएई में संबद्ध वस्तु का उत्पादन करने के लिए विनिर्माण सुविधाएं हैं। तथापि, यूएई में गैस की आपूर्ति के लिए दोहरे कीमत नीति निर्धारण युक्त सरकारी नीति के समर्थन में घरेलू उद्योग द्वारा प्रामाणिक दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है। प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि यूएई में गैस की घरेलू कीमतों की तुलना जापान के आयात आंकड़ों के साथ करना यूएई में प्रचलित दोहरी कीमत निर्धारण के कथित आरोप का विश्वस्त साक्ष्य नहीं हो सकता है क्योंकि यूएई में गैस की घरेलू कीमतें और जापान के आयात आंकड़े, समान तर्क पर आधारित नहीं हैं, जिसके कि उनकी समान-समान ढंग से तुलना की जा सके। घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किए गए दस्तावेज स्वयमेव यह दर्शाते हैं कि यूएई से जापान को कई तरह की गैसों का निर्यात किया जाता है। उपर्युक्त के मद्देनज़र प्राधिकारी इस तथ्य पर विचार नहीं करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के लिए सामान्य मूल्य के संदर्भ में यूएई में विशिष्ट बाजार स्थिति मौजूद है।

(ii) घरेलू उद्योग पुनः निवेदन करता है कि प्राधिकारी को सामान्य मूल्य के उद्देश्य के लिए मैसर्स जिप्समना यूएई की घरेलू बिक्री कीमत की अवमानना कर देनी चाहिए क्योंकि उनका क्षमता उपयोग 25 प्रतिशत से 30 प्रतिशत के आसपास है और ऐसे मामले में किसी भी कंपनी को उच्च प्रति यूनिट निर्धारित लागत के कारण लाभ अर्जित करना संभव नहीं हो सकता है। मैसर्स जिप्समना ने अपने प्रतितर्क में यह प्रस्तुत किया है कि इसी कारण से कंपनी ने स्पष्ट लागत पर विचार किया है और स्टार्ट-अप प्रचालनों के लिए उत्पादन लागत को पृथक कर दिया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए उन्होंने इस संबंध में किए गए प्रस्तुतिकरण की पाटनरोधी नियमावली के संगत प्रावधानों के अंतर्गत तथा संबद्ध वस्तु की परियोजना के लिए मैसर्स जिप्समना की प्रोजेक्ट रिपोर्ट की जांच की है।

(iii) घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि प्राधिकारी को थाईलैंड में जिप्सम की कीमतों पर सरकारी नियंत्रण होने और बाजार कीमतों को दर्शाने में असमर्थ रहने के कारण थाईलैंड की घरेलू बिक्री कीमतों को नामंजूर कर देना चाहिए। उन्होंने पुनः उल्लेख किया कि इसको देखते हुए घरेलू कीमतों तथा निर्यातक की लागत के आधार पर सामान्य मूल्य की भी अवहेलना कर देनी चाहिए और प्राधिकारी को थाईलैंड के बारे में निर्मित सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए जिप्सम की बाजार कीमतों पर विचार करना चाहिए। संबंधित हितबद्ध पक्षकारों ने अपने जबाबी तर्क में प्रस्तुत किया कि भारत सरकार, भारत से लौह अयस्क के निर्यात पर निर्यात शुल्क लगाती है। इसका मतलब यह नहीं है कि भारत सरकार लौह अयस्क की घरेलू बिक्री कीमतों को नियंत्रित करती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि थाईलैंड में जिप्सम, जो संबद्ध वस्तु का विनिर्माण करने के लिए एक प्रमुख कच्चा माल है, की निर्यात कीमत की कीमतों पर सरकार का नियंत्रण है। तथापि स्वयं इससे यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता है कि थाईलैंड में प्रचलित दोहरी कीमत नीति किसी विशिष्ट बाजार स्थिति को दर्शाती है। घरेलू उद्योग ने, थाईलैंड में स्वयं उत्पादन से संबद्ध होने के बावजूद, इस तथ्य का कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है कि थाईलैंड में जिप्सम की घरेलू कीमतों पर सरकार का नियंत्रण है। इसके अतिरिक्त, थाईलैंड से सहयोगकर्ता निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों का सत्यापन करने के दौरान प्राधिकारी को थाईलैंड में जिप्सम की कीमतों पर सरकारी नियंत्रण होने का कोई साक्ष्य नहीं मिला।

(iv) घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया है कि असहयोगकर्ता निर्यातकों के लिए फैक्टरी बाह्य निर्यात कीमत, सहयोगकर्ता निर्यातकों के लिए न्यूनतम फैक्टरी बाह्य निर्यात कीमत के बजाय, डीजीसीआई एंड एस से उपलब्ध न्यूनतम सीआईएफ कीमत पर आधारित होनी चाहिए, क्योंकि ऐसा न करने पर निर्यातकों को अनुचित लाभ होगा। प्राधिकारी नोट करते हैं कि असहयोगकर्ता निर्यातकों के लिए फैक्टरी बाह्य निर्यात कीमत का प्राधिकारी द्वारा निर्धारण डीजीएडी की संगत प्रक्रिया के अनुरूप किया गया है। इसके अतिरिक्त, पाटनरोधी नियमों में इस संबंध में कोई विशिष्ट दिशानिर्देश नहीं है।

(v) जांच शुरूआत के पश्चात, मैसर्स नौफ, दुर्बई ने सूचित किया कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का भारत को कोई निर्यात नहीं किया है। परंतु प्रारंभिक निष्कर्षों के पश्चात उन्होंने निर्यातक प्रश्नावली का प्रत्युत्तर प्रस्तुत किया, जिस पर दैर से प्राप्त होने के कारण प्राधिकारी ने विचार नहीं किया। चूंकि मैसर्स नौफ एलएलसी ने जांच की अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु

का निर्यात नहीं किया है इसलिए मैसर्स नौफ के लिए प्राधिकारी द्वारा पृथक पाटन मार्जिन का आकलन नहीं किया जा सका। तथापि यदि कंपनी चाहे तो पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत बने न्यू शिफर रिव्यू (एनएसआर) के प्रावधानों का सहारा ले सकती है।

(vi) हितबद्ध पक्षकारों के इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि घरेलू उद्योग, उसकी संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तु का उत्पादन कर रही संबद्ध कंपनी होने की बाबजूद संबद्ध देश में सामान्य मूल्य की जानकारी प्रस्तुत करने में असफल रहा, प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश में मौजूदा कंपनियां, एक दूसरे से संबद्ध हो सकती हैं, परंतु हो सकता है कि वे संबद्ध वस्तु की कीमत और उत्पादन लागत के संबंध में जानकारी शेयर न करती हो। उपर्युक्त के मध्येनज़र प्राधिकारी हितबद्ध पक्षकारों के इस प्रस्तुतिकरण से सहमत नहीं है कि घरेलू उद्योग ने जांच प्रारंभ करने का आवेदन प्रस्तुत करते समय संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तु की कीमत ढांचे के संबंध में जानकारी को जानबूझकर रोका है। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति और पाटन की मौजूदगी के प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी मौजूदा जांच प्रारंभ करते हैं। तथापि, प्राधिकारी ने अंतिम निर्धारण के लिए सत्यापित आंकड़ों पर भरोसा किया है।

(vii) घरेलू उद्योग की इस क्वैरी के संबंध में कि थाईलैंड में उत्पादक/निर्यातक के संबंध में सामान्य मूल्य का परिकलन करने के आधार को प्राधिकारी द्वारा स्पष्ट करने की जरूरत है, प्रारंभिक निष्कर्षों में यथा उल्लिखित सामान्य मूल्य का निर्धारण करने की प्रणाली तथा अंतिम निष्कर्ष में प्रयोग की गई प्रणाली स्वयं सिद्ध है।

(viii) हितबद्ध पक्षकारों के इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि संबद्ध वस्तु की नापजोख करने की उपर्युक्त इकाई वर्गमीटर (एम2) है न कि मीटर क्यूब (एम3), प्राधिकारी नोट करते हैं कि मौजूदा मामले में चूंकि विचाराधीन उत्पाद की मोटाई भी विश्लेषण का एक तत्व है, इसलिए उपर्युक्त होगा यह विश्लेषण मीटर क्यूब (एम3) आधार पर किया जाए न कि वर्गमीटर आधार पर।

(ix) हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया कि घरेलू उद्योग द्वारा एफओबी कीमत के 143 प्रतिशत के बराबर समद्वी भाड़ा का दावा किया गया है और सौदा-दर-सौदा आधार पर परिवहन लागत लगभग 20 अमरीकी डालर प्रति मीटर क्यूब थी, प्राधिकारी नोट करते हैं कि निवल निर्यात कीमत की गणना करते समय समद्वी भाड़ा को सत्यापित आंकड़ा आधार पर लिया गया है।

### ७. सामान्य मूल्य

चीन जन गण तथा इंडोनेशिया से असहयोगी निर्यातक/उत्पादक के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण

#### चीन जन गण

36. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन गण के किसी उत्पादक/निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है और इसलिए वे असहयोगी हैं। प्रत्युत्तर के अभाव में और चीन जन गण एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था होने के कारण प्राधिकारी चीन जन गण के सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए

नियमावली के अनुबंध-I का पैरा 7 के साथ आगे बढ़ना उपयुक्त समझाते हैं। नियमों के अनुबंध-I का पैरा 7 निम्नलिखित है :

“बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयात के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण तृतीय देश की बाजार अर्थव्यवस्था में निर्मित मूल्य या कीमत या ऐसे तृतीय देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत के आधार पर अथवा जहां यह संभव नहीं है वहां किसी अन्य न्यायोचित आधार पर, जिसमें समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तविक प्रदत्त या देय कीमत जिसका तर्कसंगत लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए यथावश्यक समायोजन किया गया हो, भी शामिल हो, किया जा सकता है। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा संबंधित देश के विकास का स्तर तथा प्रश्नाधीन उत्पाद को ध्यान में रखते हुए एक उपयुक्त बाजार अर्थव्यवस्थायुक्त तृतीय देश का चयन किया जाना चाहिए और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय जानकारी को उचित स्पष्ट से ध्यान में रखना चाहिए। किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था के संबंध में किसी समान मामले में की गई जांच, यदि उपयुक्त हो, की लेखाओं पर समय-सीमा के अंतर्गत विचार किया जाना चाहिए। उपयुक्त बाजार अर्थव्यवस्था तृतीय देश के चयन की जानकारी जांच के पक्षकारों को अविलंब दी जानी चाहिए और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उपयुक्त समयावधि दी जानी चाहिए।

37. घोरेरु उद्योग ने प्रस्ताव किया है कि नियमों के अंतर्गत यथापेक्षित कोई विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध कराए बिना चीन जन गण के सामान्य मूल्य का निर्धारण करने हेतु थाईलैंड को तृतीय देश के उपयुक्त बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में लिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उपर्युक्त के मध्येन्जर चीन जन गण और थाईलैंड को विकास के समान स्तर पर नहीं माना जा सकता है। उपर्युक्त के मध्येन्जर नियमावली के अनुबंध-I के पैरा 7 के अनुसार प्राधिकारी ने चीन जन गण के संबंध में अनुमानित सामान्य लिए भारत में देय या प्रदत्त वास्तविक कीमत को शामिल करके किसी अन्य तर्कसंगत आधार पर" किया है।

कंडेन्सरिया

38. प्राधिकारी ने इस बात पर गौर किया कि इंडोनेशिया के किसी भी उत्पादक/निर्यातक द्वारा निर्यातक प्रश्नावाली का कोई प्रत्युत्तर जमा नहीं किया गया है तथा इसलिए वे सहयोग करने वाले नहीं हैं। अतएव प्राधिकारी ने इंडोनेशिया के संबंध में सामान्य मूल्य का पता लगाने हेतु नियमावली के नियम 618 के संबंध में उपलब्ध तथ्यों को अपना आधार बनाया है तथा तदनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

थाईलैंड एवं संयुक्त अरब अमीरात के सहयोगकर्ता निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण

जबाब देने वाले निर्यातकों हेतु पाटन मार्जिन का निर्धारण करने हेतु सामान्य तरीका

39. प्राधिकारी द्वारा सबसे पहले इस बात का निर्धारण किया गया कि क्या संबंधित उत्पादकों/निर्यातकों का संबंधित देश में माल विशेष का कुल घेरेतु विक्रय निर्यातक देश में माल विशेष के उनके कुल विक्रय का प्रतिनिधित्व करता है। उसके बाद इस बात की जांच की गई कि क्या विक्रय पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के नियम 2 के संदर्भ में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया के अंतर्गत किया गया।

निर्यातकों द्वारा जहां भी घरेलू बाजार में हुए विक्रय के लेनदेन-वार व्यौरे उपलब्ध कराए गए तथा उन्हें प्राधिकारी द्वारा सूचना के सत्यापित हो जाने के बाद स्वीकार कर लिया गया वहां उक्त सत्यापित सूचना को घरेलू बाजार में बेचे गए माल विशेष के विभिन्न प्रकारों (मोटाई) की औसत विक्रय मूल्य का पता लगाने का आधार मान लिया गया है। व्यापार परीक्षण की सामान्य प्रक्रिया का पता लगाने के लिए संबंधित उत्पाद का उत्पादन-मूल्य की जांच उत्पादकों द्वारा रखे गए रिकार्डों के संदर्भ में की गई। इसके अतिरिक्त, सभी घरेलू विक्रय लेनदेनों की जांच माल विशेष की उत्पादन-लागत के संबंध में की गई ताकि यह पता लगाया जा सके कि घरेलू विक्रय, व्यापार की सामान्य प्रक्रिया के हिसाब से किया गया अथवा नहीं। इस प्रकार लागत से कम मूल्य पर विक्रय होने के 20 प्रतिशत से अधिक होने पर सहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों हेतु सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए केवल लाभकारी लेनदेनों पर ही विचार किया गया है।

### संयुक्त अरब अमीरात

#### मैसर्स जिप्सेमना कंपनी (एलएलसी), यूएई

40. मैसर्स जिप्सेमना द्वारा सौंपे गए एवं प्राधिकारी द्वारा सत्यापित किए गए डाटा पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए विचार किया गया है। मैसर्स जिप्सेमना ने माल विशेष के घरेलू बाजार में हुए विक्रय के व्यौरे सौंपे हैं। प्राधिकारी ने गौर किया कि कंपनी ने घरेलू बाजार में माल विशेष की \*\*\* वर्गमीटर (\*\*\* घन मीटर) की कुल मात्रा बेची है। इसके अलावा प्राधिकारी ने गौर किया कि घरेलू बाजार में बेचे गए माल विशेष की मोटाई \*\*\* मिमी से \*\*\* मिमी के बीच था। पीओआई के कारण कंपनी के घरेलू विक्रय के एक विश्लेषण से खुलासा हुआ कि उपभोक्ताओं को बेचे गए माल की मोटाई पर आधारित विक्रय मूल्य में काफी अंतर था। माल विशेष की घरेलू बाजार में बेची गई मात्रा के साथ उनका विक्रय मूल्य निम्नानुसार है :

क्रम सं.	मोटाई	मात्रा			मूल्य
		बोर्ड की संख्या	एसक्यूएम	एमउ	
1	***	***	***	***	***
2	***	***	***	***	***
3	***	***	***	***	***
4	***	***	***	***	***
5	***	***	***	***	***
6	***	***	***	***	***
7	***	***	***	***	***
	***	***	***	***	***

41. प्राधिकारी द्वारा यह भी पाया गया कि कंपनी विशेष द्वारा माल विशेष का विक्रय स्वतंत्र संस्थाओं सहित संबंधित कंपनियों को भी किया गया है। संबंधित कंपनियों को बेचे गए माल विशेष को व्यापार के सामान्य प्रक्रिया के अंतर्गत पाया गया है तथा प्राधिकारी द्वारा उसे सामान्य मूल्य का निर्धारण करने हेतु स्वीकार कर लिया गया है। प्राधिकारी ने आगे गौर किया कि पीओआई के दौरान कंपनी को कार्य करने के दौरान हानियां हुई हैं क्योंकि समता उपयोग \*\*\*% पर पाया गया। इस संबंध में कंपनी ने पाटनरोधी नियमावली के संदर्भ में नियत लागत के कुछ अवयवों के संबंध में शुरूआती खर्चों के लेखे में समायोजन

का दावा किया। इस दावे के समर्थन में कंपनी ने जिप्सम प्लास्टर के उत्पादन हेतु परियोजना के लिए परियोजना रिपोर्ट की एक प्रति प्रस्तुत की। शुरुआती खर्चों के आधार पर कंपनी द्वारा \*\*\*% प्रतिशत क्षमता उपयोग पर समायोजन का दावा किया गया। प्राधिकरण ने परियोजना रिपोर्ट में इस बात पर गौर किया कि कंपनी के \*\*\*वर्ष के दौरान अपने वाणिज्यिक उत्पादन का \*\*\*% की क्षमता प्रयोग हासिल करने की संभावना थी। तदनुसार, कंपनी का शुरुआती खर्चों के दावे को प्राधिकारी द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। इसके अलावा कंपनी द्वारा घरेलू विक्रय में पैकिंग लागत, देशी भाड़े एवं क्रेडिट लागत के आधार गया है। जिप्सेमना के संबंध में पर दावा की गई कटौतियों को भी प्राधिकारी द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। जिप्सेमना के संबंध में पीयूसी हेतु सामान्य मूल्य का पता लगाने के लिए भारत में निर्यात किए गए अनुसार माल विशेष के बराबर के विक्रय पर ही प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है।

### थाईलैंड

#### मैसर्स सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सांगखला) कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड

42. कंपनी द्वारा उसके प्रश्नावली के जबाब में प्रस्तुत की गई सूचना का प्राधिकारी द्वारा सत्यापन किया गया। कंपनी ने घरेलू बाजार में माल विशेष के विक्रय का व्यौरा प्रस्तुत किया। प्राधिकरण ने गौर किया कि कंपनी ने घरेलू बाजार में माल विशेष के \*\*\* वर्गमीटर की कुल मात्रा बेची। प्राधिकारी ने आगे यह भी गौर किया कि घरेलू बाजार में बेचे गए माल विशेष की मोटाई \*\*\* मिमी के बीच थी। पीओआई के दौरान कंपनी के घरेलू विक्रय के विश्लेषण ने खुलासा किया कि उपभोक्ताओं को बेचे गए माल की मोटाई पर आधारित विक्रय मूल्य में काफी अंतर था। मोटाई के आधार पर माल विशेष का एक्स-फैक्टरी मूल्य \*\*\* अमरीकी डालर प्रति घनमीटर से लेकर \*\*\* अमरीकी डालर प्रति घनमीटर था। इस प्रकार सामान्य मूल्य पर पहुंचने तथा एक का उसी के समान से तुलना के लिए भारत में कंपनी द्वारा निर्यात किए गए अनुसार जिप्सम प्लास्टर बोर्ड की मोटाई के घरेलू विक्रय मूल्य पर प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है। सत्यापन के दौरान प्राधिकारी ने गौर किया कि कंपनी द्वारा माल विशेष संबंधित संस्थाओं जैसे मैसर्स \*\*\* तथा मैसर्स सियाम जिप्सम (साराबुरी) कंपनी लिमिटेड के माध्यम से भी बेचा जा रहा है। प्राधिकारी द्वारा गौर किया गया कि मैसर्स \*\*\* एवं मैसर्स सियाम जिप्सम (साराबुरी) कंपनी लिमिटेड द्वारा बेचे गए माल का एक्स-फैक्टरी विक्रय मूल्य अन्य संस्थाओं को बेचे जा रहे औसत विक्रय मूल्य से काफी कम था। इस प्रकार सामान्य मूल्य का पता लगाने हेतु प्राधिकारी द्वारा इन दो संबंधित संस्थाओं के माध्यम से माल के किए गए विक्रय पर विचार नहीं किया गया है। कंपनी ने देशी परिवहन, सामुदिक भाड़े, बीमा, पोत हैंडलिंग शुल्क, सीमा शुल्क, मार्केटिंग/विजापन खर्चों तथा प्रशासनिक खर्च में अंतर, क्रेडिट लागत एवं लॉएलटी एवं लक्ष्य-निर्धारण खर्चों के आधार पर समायोजन का दावा किया है। सत्यापित तथा वास्तविकता पर आधारित खर्चों को अनुमत किया गया है।

#### मैसर्स सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (साराबुरी) कंपनी लिमिटेड

43. कंपनी द्वारा उसकी प्रश्नावली के जबाब में प्रस्तुत किए गए डाटा का सत्यापन प्राधिकारी द्वारा किया गया। कंपनी ने घरेलू बाजार में माल विशेष के विक्रय का व्यौरा प्रस्तुत किया। प्राधिकारी ने गौर किया कि कंपनी ने घरेलू बाजार में माल विशेष के \*\*\* वर्गमीटर की कुल मात्रा बेची। प्राधिकारी ने आगे यह भी गौर किया कि घरेलू बाजार में बेचे गए माल विशेष की मोटाई \*\*\* मिमी से \*\*\* मिमी के बीच था। पीओआई के दौरान कंपनी के घरेलू विक्रय के विश्लेषण ने खुलासा किया कि उपभोक्ताओं को बेचे गए

माल की मोटाई पर आधारित विक्रय मूल्य में काफी अंतर था। मोटाई के आधार पर माल विशेष का एक्स-फैक्टरी मूल्य \*\*\* अमरीकी डालर प्रति घनमीटर से लेकर \*\*\* अमरीकी डालर प्रति घनमीटर था। सत्यापन के दौरान प्राधिकारी ने गौर किया कि कंपनी द्वारा माल विशेष को संबंधित संस्थाओं अर्थात् मैसर्स \*\*\*, \*\*\* तथा मैसर्स सियाम जिप्सम (सांगखला) कंपनी लिमिटेड के माध्यम से भी बेचा जा रहा है। प्राधिकारी द्वारा गौर किया गया कि मैसर्स ----- एवं मैसर्स सियाम जिप्सम (सांगखला) कंपनी लिमिटेड के माध्यम से बेचे गए माल का एक्स फैक्टरी विक्रय मूल्य अन्य संस्थाओं को बेचे जा रहे औसत विक्रय मूल्य से काफी कम था। इस प्रकार सामान्य मूल्य का पता लगाने हेतु प्राधिकारी द्वारा इन दो संबंधित संस्थाओं के माध्यम से माल के किए गए विक्रय पर विचार नहीं किया गया है। इसके अलावा, प्राधिकरण ने केवल भारत में निर्यात किए गए माल की मोटाई पर विचार किया है। प्राधिकारी ने गौर किया कि कंपनी ने भारत को निर्यात में \*\*\* मिमी मोटाई वाला माल विशेष बेचा। घरेलू बाजार में \*\*\* मिमी की मोटाई के विक्रय न होने पर प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु घरेलू बाजार में \*\*\* मिमी की मोटाई वाले माल के विक्रय पर विचार किया है। अतएव सामान्य मूल्य पर पहुंचने तथा एक का उसी के समान से तुलना हेतु भारत में कंपनी द्वारा निर्यात किए गए जिप्सम प्लास्टर बोर्ड की मोटाई के घरेलू विक्रय मूल्य पर प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है। कंपनी ने देशी परिवहन, सामुदिक भाड़े, बीमा, पोत हेडलिंग शुल्क, सीमा शुल्क, मार्केटिंग/विज्ञापन खर्चों तथा प्रशासनिक खर्चों में अंतर, क्रेडिट लागत एवं लाएलटी तथा लक्ष्य निर्धारण खर्चों एवं बैंक प्रशुल्क के आधार पर अतिरिक्त समायोजन का दावा किया है। कंपनी द्वारा दावा किए गए समायोजनों को कंपनी द्वारा किए गए वास्तविक खर्चों के आधार पर सत्यापित किए जाने के बाद अनुमत कर लिया गया है।

**थाईलैंड एवं संयुक्त अरब अमीरात के असहयोगकर्ता निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण**

**असहयोगकर्ता निर्यातक, संयुक्त अरब अमीरात**

44. प्राधिकारी संयुक्त अरब अमीरात के असहयोगकर्ता उत्पादकों/निर्यातकों हेतु सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर करते हैं।

**असहयोगकर्ता निर्यातक, थाईलैंड**

45. प्राधिकारी थाईलैंड के असहयोगकर्ता उत्पादकों/निर्यातकों हेतु सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर करते हैं।

**निर्यात मूल्य**

**संयुक्त अरब अमीरात**

**मैसर्स जिप्सेमना कंपनी (एलएलसी) दुबई**

46. मैसर्स जिप्सेमना, यूएई ने भारत में निर्यात होने वाले माल विशेष के ब्यौरे विहित प्रोफार्मा में प्रस्तुत किए। प्रस्तुत किए गए डाटा के कंपनी द्वारा सत्यापन के आधार पर प्राधिकारी ने गौर किया कि कंपनी ने पीओआई के दौरान भारत के केवल \*\*\* मिमी मोटाई वाले माल विशेष का निर्यात किया। निर्यात मूल्य में कंपनी ने पैकिंग, क्रेडिट लागत, स्थानीय आवागमन, कागजी कार्गाई शुल्क, समुद्री आड़ा एवं बीएल एवं टी एच सी शुल्कों के आधार पर समायोजन का दावा किया है। कंपनी द्वारा दावा की गई उपर्युक्त कटौतियों को सत्यापन तथा वास्तविक होने के आधार पर स्वीकार कर लिया गया है। दावों के सत्यापन के आधार पर तथा वास्तविक के आधार पर निर्यात मूल्य के उपर्युक्त समायोजनों को प्राधिकारी द्वारा अनुमत किया गया है।

#### असहयोगकर्ता निर्यातक, संयुक्त अरब अमीरात

47. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संयुक्त अरब अमीरात के अन्य किसी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली के जवाब प्रस्तुत नहीं किए हैं। अतएव प्राधिकारी ने यूएई के सहयोगकर्ता निर्यातकों के लिए भारत में न्यूनतम प्रतिनिधिक निवल निर्यात मूल्य अपनाया है।

#### थाईलैंड

##### द सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सांगखला) कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड

48. निर्यातक – प्रश्नावली के जवाब में कंपनी द्वारा सौंपे गए आंकड़ों का प्राधिकारी द्वारा सत्यापन किया गया। प्राधिकारी ने गौर किया कि कंपनी ने भारतीय बाजार में \*\*\* मिमी तथा \*\*\* मिमी की मोटाई वाले माल विशेष का निर्यात किया है। निर्यात मूल्य में कंपनी ने समुद्री आड़ा, पोत हैंडलिंग शुल्क, क्रेडिट लागत एवं बैंक शुल्क के आधार पर समायोजन का दावा किया है। दावों के सत्यापन तथा वास्तविकता के आधार पर निर्यात मूल्य से उपर्युक्त समायोजनों को प्राधिकारी द्वारा अनुमत किया गया है।

##### द सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (साराबुरी) कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड

49. निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर में कंपनी द्वारा प्रस्तुत आंकड़े का सत्यापन प्राधिकारी द्वारा किया गया। कंपनी ने निर्धारित प्रोफार्मा में भारत को वर्णित वस्तुओं के अपने आयात का ब्यौरा प्रस्तुत किया। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कंपनी ने भारतीय बाजार में केवल \*\*\* मिमी, मोटाई की वर्णित वस्तुओं की विक्री की। निर्यात मूल्य में, कंपनी ने अंतर्रेशीय परिवहन, समुद्री आड़ा, पोर्ट हैंडलिंग चार्ज, क्रेडिट लागत और बैंक प्रभारों के बारे में समायोजन का दावा किया। दावे के सत्यापन के आधार पर और निर्यात मूल्य से वास्तविक समायोजन के आधार पर प्राधिकारी द्वारा यथा उपर्युक्त अनुमति दी गई।

#### थाईलैंड के असहयोगकर्ता निर्यातक

50. प्राधिकारी नोट करते हैं कि थाईलैंड के अन्य किसी निर्यातक द्वारा निर्यातक प्रश्नावली प्रस्तुत नहीं की है। अतः प्राधिकारी ने गैर-सरकारी निर्यातकों के मामले में निवल निर्यातक मूल्य के निर्धारण हेतु थाईलैंड के सहयोगकर्ता निर्यातकों का भारत के लिए न्यूनतम प्रतिनिधि निवल निर्यात मूल्य को अपनाया है।

### चीन जन गण एवं इंडोनेशिया के संबंध में निर्यात मूल्य का निर्धारण

51. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन गण तथा इंडोनेशिया के माल विशेष के संबंध में किसी भी निर्यातक/ उत्पादक द्वारा विहित प्रपत्र एवं तरीके से प्राधिकारी को जवाब नहीं दिया गया है। उक्त देशों के उत्पादकों/निर्यातकों के जबाब के अभाव में प्राधिकारी ने इन देशों के संबंध में निर्यात मूल्य का निर्धारण प्रतिपाठन नियमावली के नियम 6(8) के संदर्भ में उपलब्ध उत्तम सूचना के आधार पर किया है। जांच अवधि के दौरान उक्त देशों से आयात के आरित औसत सीआईएफ मूल्य पर पहुंचने हेतु प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस एंड एस आयात डाटा का सहारा लिया है। उक्त देशों के संबंध में निवल निर्यात मूल्य पर पहुंचने के लिए याचिकाकर्ता द्वारा दावा किए गए अनुसार तथा उचित समायोजनों के अधीन समुद्री भाड़ा सीमा, पोत खर्चों आदि के आधार पर समायोजनों पर विचार किया गया है।

#### (ज) पाठन मार्जिन

52. प्राधिकारी ने दावा किए गए एवं सत्यापित समायोजनों पर विचार करने के उपरांत घरेलू बिक्री के आधार पर संबद्ध वस्तु हेतु सहयोगकर्ता निर्यातकों के सामान्य मूल्य पर विचार किया है। सामान्य मूल्य का निर्धारण तदनुसार एक घरेलू बाजार में बेचे गए संबद्ध वस्तु की मोटाई के आधार पर किया गया है। जांचाधीन अवधि के दौरान भारत में निर्यात किए गए विचाराधीन उत्पाद की मोटाई के संबंध में निर्यात मूल्य की तुलना सामान्य मूल्य से की गई है। सामान्य मूल्यों एवं निर्यात कीमत की तुलना के आधार पर पाठन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया जाता है :

अमरीकी डालर/घनमीटर में

क्रम सं.	देश	उत्पादक निर्यातक	सामान्य मूल्य	निवल निर्यात मूल्य	डम्पिंग मार्जिन	पाठन प्रतिशत मार्जिन	डम्पिंग मार्जिन प्रतिशत श्रेणी
1.	थाईलैंड	दि सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सॉगखला) कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड	***	***	***	***	90-100
		दि सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (साराबूरी) कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड	***	***	***		
		समूह हेतु आरित औसत	***	***	***		
		अन्य कोई उत्पादक	***	***	***	***	120-130
2.	यूएई	मैसर्स जिपरेमजा के (एलएलसी), दुबई	***	***	***	***	10-20
		अन्य कोई उत्पादक	***	***	***	***	20-30
3.	चीन पीआर	सभी निर्यातक/उत्पादक	***	***	***	***	35-45

4. इंडोनेशिया सभी निर्यातक/उत्पादक	***	***	***	***	20-30
------------------------------------	-----	-----	-----	-----	-------

### झ. विविध प्रस्तुतियां

#### घरेलू उद्योग द्वारा की गई विविध प्रस्तुतियां :

53. जांच के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित विविध प्रस्तुतियां की गईं :

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा विहित फारमेंट में मांगी गई सूचना न देने वाले किसी पक्ष द्वारा की गई प्रस्तुतियों की प्राधिकारी उपेक्षा कर सकते हैं। मैसर्स इंडिया जिप्सम, कोचीन अथवा अन्य कोई पक्ष जिसने विहित प्रक्रियानुसार प्रश्नावली का जबाब नहीं दिया हो, उसकी प्रस्तुतियों को सिरे से नकारा जाना चाहिए।
- (ii) 'हैमिल्टन हाउसवेर्स प्राइवेट लिमिटेड बनाम डीए' (2012 (276) ईएनटी 191) के मामले में माननीय बंबई उच्च न्यायालय के सम्मुख प्राधिकारी के अधिकार क्षेत्र का मुद्दा उठाया गया। माननीय बंबई उच्च न्यायालय ने 14.10.2011 के आदेश द्वारा याचिका खारिज कर दी।
- (iii) आवेदन में घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए क्षति कारकों का विस्तृत विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी द्वारा जांच की पहल की गई ताकि क्षति, कारणात्मक संबंध एवं पाटन स्थापित की जा सके।
- (iv) मात्र यह तथ्य कि संबद्ध वस्तु का अनुप्रयोग केकवल अवसंरचना क्षेत्र में होता है, उसे प्रतिपाटन मुद्दों में निर्णय लेने हेतु कोई आधार न माना गया है और न ही माना जाएगा।
- (v) यूएई सरकार के प्रतिनिधि ने सुनवाई के दौरान घरेलू उद्योग सहित अन्य पक्षों जिनका हित इससे जुड़ा था, को बिना प्रतिलिपियां प्रदान किए, निर्दिष्ट प्राधिकारी को एक पत्र प्रस्तुत किया। यूएई सरकार का यह तर्क पूर्णतः आधारहीन है तथा इससे कानूनी रूप से समुचित नहीं सिद्ध किया जा सकता।
- (vi) 40 दिनों की निर्धारित समय-सीमा की समाप्ति के बाद कतिपय पक्षों द्वारा विलंब से दायर प्रस्तुतिकरण को रिकार्ड पर नहीं लिया जा सकता तथा प्राधिकारी उसे अस्वीकृत किया जाना अपेक्षित समझते हैं।
- (vii) मौजूदा अधिनियम तथा नियम, निर्दिष्ट प्राधिकारी को सार्वजनिक हित को आधार बनाते हुए, इस संबंध में मौजूदा विधान के माध्यम से प्रदान किए जाने वाले उपचार को अस्वीकार करने पर विचार किए जाने की मंजूरी नहीं देते हैं।
- (viii) लाफार्ज बोरल इंडिया लिमिटेड के नाम अथवा उसकी अवसंरचना में किसी प्रकार के परिवर्तन के बारे में किसी प्रकार की सूचना का रिकार्ड मौजूद नहीं है।

(ix) डीजीएडी के सुसंगत प्रथा के अनुसार, प्राधिकारी किसी ऐसे आपातकर्ता द्वारा किए गए निवेदन का संज्ञान नहीं ले सकते जिसने आपातकर्ताओं के लिए निर्धारित प्रश्नावली का प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किया हो।

उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकर्ताओं/तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

54. जांच के दौरान उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकर्ताओं तथा अन्य संबंधित पक्षों द्वारा निम्न विविध अनुरोध किए गए हैं :

- (i) जांचाधीन अन्वेषण न्यायोचित नहीं है क्योंकि निर्दिष्ट प्राधिकारी के पद पर कार्यरत अधिकारी भारत सरकार में अपर सचिव के रैंक के अधिकारी हैं, जबकि निर्दिष्ट प्राधिकारी को भारत सरकार में संयुक्त सचिव रैंक का होना चाहिए था।
- (ii) जांच याचिका में याचिकाकर्ता द्वारा प्रदान की गई सूचना की पर्याप्तता तथा सत्यता की जांच किए बिना ही आरंभ कर दी गई।
- (iii) जांचाधीन मर्दों का संबंध बुनियादी ढांचा क्षेत्र से है। मैक्रो-अर्थशास्त्र विकास के हित में, प्रतिपाठन शुल्क संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध मर्दों पर नहीं लगाया जाना चाहिए।
- (iv) याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग के लिए उपभोक्ताओं की लागत पर भारतीय बाजार में मोनोपोली सृजित करना चाहता है।
- (v) जहां तक घरेलू उद्योग का यह तर्क की मैसर्स इंडिया जिप्सम, कोचीन तथा अन्य पक्षों के अनुरोध का संबंध है जिन्होंने प्रश्नावली दायर नहीं की है, उसे अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए, उल्लिखित किया जाता है कि ऐसी कोई प्रथा नहीं है। क्योंकि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने विगत में संबंधित पक्षों से प्रश्नावली का प्रति उत्तर प्राप्त किए बिना अनुरोध स्वीकार किए हैं, अतः इस मामले में भी इसे स्वीकार किया जाना चाहिए।
- (vi) 40 टिनों की समय-सीमा प्रश्नावली दायर करने के लिए है न कि लिखित अनुरोध दायर करने के लिए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

55. संबंधित पक्षों तथा घरेलू उद्योग द्वारा किए गए विविध अनुरोधों का प्राधिकारी द्वारा निम्न रूप से निराकरण किया गया :

- (i) जहां तक हितबद्ध पक्षकारों के इस अनुरोध का संबंध है कि जांचाधीन विषय इसलिए न्यायोचित नहीं है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी जांच आरंभ करने की तारीख को भारत सरकार में अपर सचिव स्तर के थे जबकि उन्हें भारत सरकार में संयुक्त सचिव स्तर का होना चाहिए, प्राधिकारी ने यह टिप्पणी की है कि माननीय मुंबई उच्च न्यायालय ने 'हैमिल्टन हाऊसवेयर प्राइवेट लिमिटेड बनाम डीए' [2012 (276) ई एल टी 191], के 2011 की याचिका संघर्षा

6791 में दिए गए दिनांक 14.10.2011 के आदेश द्वारा याचिकाकर्ताओं के ऐसे अनुरोध अस्वीकार कर दिए हैं।

- (ii) प्राधिकारी ने टिप्पणी की है कि जांचाधीन विषय प्राधिकारी द्वारा, विषय देश के मूल देश अथवा निर्यातीत विषय वस्तुओं के प्रतिपाटन, हानि, कारणात्मक संबंध के संबंध में आवेदनों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों की प्रथम दृष्टया जांच से संतुष्ट होने पर ही जांच आरंभ की गई थी। घरेलू उद्योग तथा सहयोगकर्ता संबंधित पक्षों द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों/सूचना की प्राधिकारी द्वारा अपेक्षित सीमा तक सत्यता जांच कराई गई।
- (iii) जहां तक हितबद्ध पक्षकारों के इस अनुरोध का संबंध है कि जांचाधीन वस्तुओं का संबंध बुनियादी ढांचा क्षेत्र से है तथा मैकरो इक्नोमिक ग्रोथ के हित में, संबद्ध देशों से आयात की गई संबद्ध मर्दों पर पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया जाना चाहिए, प्राधिकारी ने टिप्पणी की है कि प्रतिपाटन उपबंधों के अंतर्गत इस तर्क का कोई आधार नहीं है इसके अतिरिक्त प्राधिकारी ने टिप्पणी की है कि प्रतिपाटन उपबंधों के पीछे आयात को रोकने की भंशा नहीं है बल्कि पाटित आयातों के साथ-साथ घरेलू उद्योग के लिए एक समान अवसर उत्पन्न करना है।
- (iv) विभिन्न हितबद्ध पक्षकरों तथा घरेलू उद्योग द्वारा प्रत्युत्तर/ निवेदनों के गैर-गोपनीय संस्करणों की प्रतिलिपियां जिसमें सार्वजनिक सुनवाई के दौरान यूएई सरकार के प्रतिनिधियों से प्राप्त पत्र की प्रति शामिल हैं, को एक सार्वजनिक फाइल में रखा गया है तथा प्राधिकारी द्वारा संगत समझे गए संबंधित पक्ष द्वारा किए गए निवेदनों का इस अंतिम निष्कर्ष में निराकरण किया गया है।
- (v) संबंधित पक्षों द्वारा समय सीमा तक किए गए अनुरोधों जैसाकि नियमों तथा प्राधिकारी द्वारा संबंधित पक्ष के किसी अनुरोध विशिष्ट पर मंजूर किए जाने का संबंध है, प्राधिकारी द्वारा इस पर विचार किया गया है।
- (vi) संबंधित पक्षों का यह तर्क की निर्यातकर्ता बुनियादी क्षेत्र में कार्य करते हैं तथा संबद्ध वस्तु पर प्रतिपाटन शुल्क से अर्थव्यवस्था के इस अहम क्षेत्र की प्रगति प्रभावित होगी, असंगत है। मौजूदा जांच में, प्राधिकारी, प्रतिपाटन नियमों के उपबंधों के अंतर्गत दिशानिर्देशित हैं।
- (vii) प्राधिकारी द्वारा जांच क्षति, अनौपचारिक लिंक तथा घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए पाटन शुल्क के विस्तृत विश्लेषण को आधार बनाकर आरंभ की गई है। अतः संबंधित पक्षों का यह तर्क कि जांच प्राधिकारी द्वारा याचिकाकर्ता द्वारा प्रदान की गई सूचना की पर्याप्तता तथा सत्यता की जांच किए बिना आरंभ कर दी गई है, आधारहीन है।
- (viii) जहां तक घरेलू उद्योग के इस तर्क का संबंध है कि आवेदन द्वारा प्रदान की गई सूचना केवल आरंभ करने हेतु संगत है परंतु आरंभ होने के बाद यह अमहत्वपूर्ण हो जाती है, प्राधिकारी ने यह टिप्पणी की है कि प्रतिपाटन जांच एक सतत प्रक्रिया है तथा किसी तर्कसंगत और न्यायोचित निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए प्राधिकारी के समक्ष प्रत्येक घरण पर दी गई सूचना महत्वपूर्ण है।

- (ix) मैसर्स लाफाल्टे बोरल इंडिया लिमिटेड के संबंध में संबंधित पक्ष द्वारा नाम/अवसंरचना में परिवर्तन से संबंधित सूचना को प्राधिकारी द्वारा राईजनिक फाइल में रखा गया है।
- (x) प्रतिपाटन जांच के पीछे न तो घरेलू उद्योग को मनोपोली प्रदान करने की मंशा है और न ही आयात पर रोक लगाने की। प्रतिपाटन जांच का मूल उद्देश्य पाटन आयात के समक्ष संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों को एक समकक्षीय क्षेत्र सृजित करना है।
- (xi) प्राधिकारी डीजीसीआई एंड एस स्रोत से प्राप्त आयातित आंकड़ों पर पाटन तथा हानि के विश्लेषण हेतु निर्भर रहे हैं। अतः, आईबीआईएस स्रोत पर आधारित याचिकाकर्ता के आंकड़ों की कोई सुसंगतता नहीं है।

**ब्र. क्षति निर्धारण**

**घरेलू उद्योग**

56. क्षति तथा कारणात्मक संबंध के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध निम्न प्रकार हैं :

- (i) यह तर्क कि आयोजनाली बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ाना चाहते हैं, गलत है। प्रतिपाटन शुल्क का मूल उद्देश्य पाटन शुल्क के अनुचित प्रथा के विश्वन्द संरक्षण प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त न तो याचिकाकर्ता के विश्वन्द अथवा सीसीआई द्वारा विचाराधीन उत्पादों के संबंध में कोई जांच नहीं की जाती है।
- (ii) प्राधिकारी ने केवल प्रतिपाटन, क्षति तथा अनौपचारिक लिंक के साक्षरों के आधार पर जांच आरंभ की है। क्षति, अनौपचारिक लिंक तथा प्रतिपाटन के परिप्रेक्ष्य में घरेलू उद्योग द्वारा आवेदन में घहले ही सूचना प्रदान की गई है।
- (iii) संबंधित पर्षों का तर्क है कि घरेलू उद्योग को अत्यधिक उत्पादन क्षमता के कारण उत्पादन लागत में हुई बढ़ोत्तरी के कारण कथित रूप से हानि हुई है न कि आयात के कारण, गलत है। क्षमता निर्माण/विस्तार के संबंध में निर्णय पिछले वर्षों की प्रगति दर तथा आकार की शर्तों के अनुसार बाजार में हुए विकास पर आधारित होता है, जो कि भविष्य में मार्किट अनुमान का मुख्य आधार होता है। घरेलू मार्किट आंकड़े दर्शाते हैं कि विगत वर्षों में औसतन 30-40 प्रतिशत की निरंतर वृद्धि हुई है। अतः इस तर्क का कोई आधार नहीं है कि देश में मांग से अधिक उत्पादन क्षमता में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग ने यह निर्णय किया, सही नहीं है।
- (iv) उत्पादन लागत में अत्यधिक बढ़ोत्तरी का कारण उत्पादन में विभेदी लागत है क्योंकि प्रति इकाई निश्चित लागत में बढ़ोत्तरी केवल मामूली सी है। अतः लागत में बढ़ोत्तरी का क्षमता में बढ़ोत्तरी से कोई संबंध नहीं है।
- (v) चेन्नई प्लांट के संबंध में क्षति लागत पर क्षति से संबंधित तथ्यों की संगणना अथवा क्षति मार्जिन की संगणना के उद्देश्य से विचार नहीं किया गया।

(vi) संबंधित पक्षों के निवेदन में संबंधित कैपटिव उपयोग की मात्रा नमूने के तौर पर अथवा मॉक-अप के तौर पर बोर्ड द्वारा प्रस्तुत प्रकृति का है। वर्ष 2009-10 में कुल मात्रा 45.10 मीट्रिक टन थी जो 59 एम3 के समकक्ष है जो 2009-10 के दौरान कुल बिक्री कर 0.03 प्रतिशत है। इसके संबंध में आई लागत पर बिक्री संवर्धन खर्च के अंतर्गत विचार किया गया है।

(vii) लगाई गई पूंजी पर 22 प्रतिशत के लाभ की मंजूरी सुसंगत है तथा प्राधिकारी के एक अन्य प्रथा की धोतक है।

(viii) संबंधित पक्षों द्वारा सुझाए गए क्षति मार्जिन की संगणना की पद्धति निर्दिष्ट प्राधिकारी की सुस्थापित प्रथा के विरुद्ध है तथा यह अधिनियम अथवा नियमों में निर्धारित नहीं है। इसके अतिरिक्त, जहां तक हास लागत को अपवर्जित करने के मामले का संबंध है निवेदन है कि संबंधित पक्षों द्वारा सुझाई गई पद्धति प्राधिकारी की सुसंगत प्रथा के अनुसार नहीं है।

(ix) प्रतिवादियों ने स्वीकार किया है कि घरेलू उद्योग को क्षति पहुंची है परंतु क्षति को अन्य तथ्यों के कारण माना गया है।

(x) एम3 परिमाप की एक मात्र इकाई है जिसमें बोर्ड की लागत तथा मूल्य को सीधे प्रभावित करने वाली मोटाई में भिन्नता का ध्यान रखा जाता है।

(xi) यह सत्य है कि वर्ष 2008-09 की तुलना में वर्ष 2009-10 के दौरान संबद्ध देशों से होने वाले आयात में मार्जिनल बढ़ोतरी ही हुई है। परंतु मूल्य के संबंध में निर्णय केवल आयात मूल्य के आधार पर नहीं लिया जाता बल्कि यह अन्य कई संबंधित क्षति तथ्यों तथा उस समय कार्यरत अन्य तथ्यों पर आधारित होता है। क्योंकि आया त में बढ़ोतरी की मात्रा केवल मार्जिनल है तथा आधार वर्ष की तुलना में 2009-10 में लागत में भी बढ़ोतरी हुई है अतः घरेलू उद्योग ने कुछ सीमा तक अपने मूल्य बढ़ा दिए हैं। इसके अतिरिक्त यह प्रस्तुत किया जाता है कि यदि पाटित आयात नहीं होता तो संभवतः घरेलू उद्योग अपनी कीमत को लागत में हुई बढ़ोतरी के अनुपात से बढ़ा सकता है ताकि उसे एक सुसंगत लाभ प्राप्त हो सके। स्पष्टतः, यह विवादरहित है कि इस अवधि के दौरान लाभ के स्तर में पर्याप्त कमी आई है।

(xii) पीओआई में मूल्य में आई कमी दर्शाती है कि विगत वर्ष (2009-10) की तुलना में लाभ में बढ़ोतरी हुई है।

(xiii) संबंधित पक्षों द्वारा स्वयं यह स्वीकार किया गया है कि बोरल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड का नेट बिक्री मूल्य आयात की गई मर्दों से कम है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि अपनी मार्किट हिस्सेदारी बनाए रखने के लिए बोरल जिप्सम भी आयातित वस्तुओं के मूल्य के लगभग अथवा समकक्ष मूल्य हासिल नहीं कर सकता।

(xiv) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पहले ही यह खुलासा कर दिया है कि यह मामला कानूनी रूप से संग्रहित मूल्यांकन की दृष्टि से सबसे अधिक उपयुक्त है। इसे अलग रखकर किए जाने वाला कार्य कुशलता निष्पादन सरासर तर्कहीन होगा जैसाकि उपर्युक्त उल्लिखित किया गया है।

(xv) लाफार्ज बोरल की पीओआई से पहले मौजूदगी है तथा अतः यह नहीं कहा जा सकता है कि पीओआई से घरेलू उद्योग को आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण नुकसान हो रहा है। घरेलू उद्योग के आकार को ध्यान में रखते हुए, लाफार्ज बोरल बाजार मूल्य को प्रभावित करने की स्थिति में नहीं है।

उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकर्ताओं/तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

57. क्षति तथा कारणात्मक लिंक के संबंध में उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकर्ताओं/तथा अन्य संबंधित पक्षों द्वारा निम्न अनुरोध किए गए हैं :

- (i) घरेलू उद्योग को हुई कथित हानि, मांग की तुलना में अत्यधिक क्षमता निर्माण द्वारा उत्पादन लागत में आई बढ़ोतरी के कारण है।
- (ii) प्रतिपाठन शुल्क लगाने का उद्देश्य बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ाना है। इस संबंध में भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग ने याचिकाकर्ता के विरुद्ध पहले ही जांच शुरू कर दी है।
- (iii) विषय गत याचिका में कमियां हैं क्योंकि याचिकाकर्ता प्रथम दृष्टया: रूप से पाठन, क्षति तथा कारणात्मक संबंध लिंक सिद्ध करने से असफल रहा है।
- (iv) याचिकाकर्ता के चेन्नई प्लांट, जिसमें उत्पादन बंद हो गया है, की लागत का संक्रामण के कारण याचिकाकर्ता को क्षति उठानी पड़ी है।
- (v) कैपटिव उपयोग से प्राप्त होने वाले लाभों का अभी तक विश्लेषण नहीं किया गया है। आंतरिक रूप से उपयोग की गई वस्तुओं के गैर-आर्थिक प्रयोग के कारण हुई क्षति को संबद्ध आयातों के कारण नहीं माना जाएगा।
- (vi) याचिकाकर्ता के एनआईपी का निर्धारण युक्तियुक्त लाभ के मार्जिन के साथ किया जाना अपेक्षित है।
- (vii) आयात लाफार्ज बोरल की भारत में एक संबंधित कंपनी द्वारा किया जाता है जो उत्पादक की बिक्री हेतु विज्ञापन व्यय, बिक्री प्रोन्नयन व्यय तथा वेयर हाऊस जैसे सभी बिक्री संबंधी व्यय करती है। अतः किसी समुद्धित तुलना पर पहुंचने के लिए, जिसकी तुलना किया जाना अपेक्षित है वह है ट्रेडिंग कंपनी की भारत में नेट बिक्री मूल्य का याचिकाकर्ता को नेट बिक्री मूल्य से तलाश करना।

(viii) संबद्ध देशों से आयात में बढ़ोतरी नए उत्पादन तथा यूएई से होने वाला परिणामी आयात के कारण हुई है यूएई से होने वाले आयात को छोड़ दिया जाए तो आयात की मात्रा वही है।

(ix) वर्ष 2008-09 तथा 2009-10 के दौरान आयात की मार्किट हिस्सेदारी में कमी आई है। इसके बावजूद, घरेलू उच्चोग की मार्किट हिस्सेदारी कम हुई है। जबकि, अन्य भारतीय उत्पादक, लफार्ज बोरल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की इस अवधि में बढ़ोतरी हुई है। यह दर्शाता है कि घरेलू उच्चोग की मार्किट हिस्सेदारी में होने वाली क्षति का कारण आंतरिक प्रतिस्पर्धा है अर्थात लफार्ज बोरल जिप्सम प्राइवेट लिमिटेड ने कि संबद्ध देशों से संबद्ध मर्दों का आयात।

(x) यह उल्लिखित किया गया है कि 2008-09 तथा 2009-10 की अवधि हेतु याचिकाकर्ता के उत्पादन में कमी आई है परंतु वास्तव में, पीओआई में उत्पादन में पर्याप्त बढ़ोतरी हुई है। यह भी उल्लिखित किया गया है कि याचिकाकर्ता के उत्पादन में हुई कटौती दूसरे भारतीय उत्पादकों के कारण हुई है, जिन्होंने 2008-09 में विनिर्माण आरंभ किया था।

(xi) कथित रूप से विदेशों से हुए आयात में हुई बढ़ोतरी तथा कथित हानि के बीच कोई आपसी संबंध नहीं है। वास्तव में जब 2008-09 तथा 2009-10 में आयात में कमी हुई तो अन्य बातों के साथ-साथ याचिकाकर्ता के लाभ, नकद लाभ तथा निवेश पर लाभ के मापदंडों में भी कमी हुई। अतः आयात तथा कथित हानि के बीच किसी कारणात्मक संबंध की मौजूदगी नहीं है।

(xii) याचिकाकर्ता घरेलू उच्चोग के लिए गैर क्षतिकारक मूल्य के निर्धारण में संवैधानिक स्थिति के अनुसार समुचित लाभ का प्रावधान है। याचिकाकर्ता द्वारा निवेश पर अनुचित अत्यधिक लाभ न्यायोचित नहीं हैं। अतः याचिकाकर्ता की एनआईपी 3 प्रतिशत के सुसंगत लाभ मार्जिन के साथ निर्धारित की जाए, जो मैसर्स सेंट गोबिन समूह द्वारा अंजित लाभ को ध्यान में रखते हुए सुसंगत लाभ है।

(xiii) पीओआई के दौरान याचिकाकर्ता की कुल क्षमता 4,12,500 एम 3 थी जबकि कुल मांग में 3,80,279 एम 3 थी। पीओआई के दौरान अन्य भारतीय उत्पादकों का उत्पादन लगभग 58,000 एम 3 था। यदि पीओआई के दौरान कोई आयात नहीं किया गया होता तो याचिकाकर्ता की लगभग 90000 एम 3 की क्षमता का प्रयोग नहीं हुआ होता। इसी के मद्देनज़र 90,000 एम 3 की अतिरिक्त क्षमता के लिए हास मूल्य को एनआईपी निर्धारण के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता।

(xiv) पी आई ओ के दौरान घरेलू उच्चोग को कोई क्षति नहीं हुई। असल में पी आई ओ के दौरान, याचिकाकर्ता के प्रदर्शन में काफी वृद्धि हुई। बिक्री की मात्रा में 9 प्रतिशत की वृद्धि के साथ बेचे गए बोर्ड की 74 प्रतिशत प्रति घन मीटर की लाभकारिता में वृद्धि, रूपए की स्थिति में लाभकारिता में 64 प्रतिशत की वृद्धि हुई। लाभकारिता में यह वृद्धि उत्पादन की लागत में गिरावट के कारण हुई। ये आंकड़े स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि पी आई ओ के दौरान घरेलू उच्चोग को कोई क्षति नहीं हुई। इसके विपरीत, याचिकाकर्ता के वित्तीय प्रदर्शन में अविरत विकास हुआ।

(xv) याचिका तथा प्रारंभिक जांच में सूचित किया गया मूल्य कटौती का दावा त्रुटिपूर्ण है और वास्तविक स्थिति को नहीं दर्शाते हैं। पहला, मूल्य की तुलना व्यापार के समान स्तर पर नहीं की गई है। जहां तक थाईलैंड के सहयोगकर्ता निर्यातक मैसर्स सिअम जिप्सम इंडस्ट्री (सॉंगखला) क. लि. तथा मैसर्स सिअम जिप्सम इंडस्ट्री (सरबुरी) क. लि. का प्रश्न है, हालांकि याचिकाकर्ता अपने वितरकों को उत्पाद सीधे बेचता है, वहीं मैसर्स बोरल जिप्सम इंडिया प्रा. लि. वर्णित वस्तुओं की खरीद करता है और उसके बाद पर्याप्त विपणन खर्च करने के बाद उसे वितरकों को पुनः बेचता है। अतः मूल्य कटौती निर्धारित करने में घरेलू उद्योग के फैक्टरी के बाहर बिक्री मूल्य की तुलना मैसर्स बोरल जिप्सम इंडिया प्रा. लि. की पुनः बिक्री मूल्य के साथ किया जाना चाहिए न कि इसके आयात मूल्य के साथ। याचिका तथा प्रारंभिक जांच में मूल्य कटौती का आंकड़ा याचिकाकर्ता के कारखाने के बाहर के मूल्य की तुलना मैसर्स बोरल जिप्सम इंडिया प्रा. लि. के आयात मूल्य के साथ करके प्राप्त की गई है, जो कि अनुचित है।

(xvi) 2008-09 के दौरान संबद्ध देशों से आयात अपने सबसे कम स्तर पर था। आयातों की ऐसी कम मात्रा के बावजूद याचिकाकर्ता 2007-08 के दौरान काफी लाभदायक स्थिति से घाटा उठाने की स्थिति में चला गया। घाटा उठाने की स्थिति में जाने का कारण वर्णित देशों से वर्णित वस्तुओं का आयात नहीं हो सकता बल्कि कुछ हद तक अप्रमाणित क्षमता अनुवृद्धि के कारण है। उसके बाद प्रत्येक अप्रमाणित क्षमता अनुवृद्धि के साथ घाटा बढ़ता गया। यह तथ्य कि याचिकाकर्ता ने उस समय घाटा उठाना शुरू किया जब आयात की मात्रा अपने सबसे कम स्तर पर थी, स्पष्ट रूप से यह दर्शाती है कि घाटे का कारण संबद्ध देशों से आयात नहीं है।

(xvii) अन्य घटक जो याचिकाकर्ता के आयात एवं प्रदर्शन के बीच किसी कड़ी की अनुपस्थिति को दर्शाता है, वह वर्ष 2008-09 के दौरान की स्थिति है। वर्ष के दौरान भारत में संबद्ध वस्तुओं का आयात पिछले वर्ष की तुलना में 8 प्रतिशत तक गिर गया। यहां तक कि जब आयातित माल की लागत में 21 प्रतिशत तक वृद्धि के साथ वर्णित वस्तुओं का आयात गिरा, याचिकाकर्ता का घाटा सन्निकट पूर्ववर्ती वर्ष के दौरान 100 बेसिस प्वाइंट के लाभ की तुलना में 32 बेसिस प्वाइंट था। यह घटक स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि याचिकाकर्ता द्वारा उठाया जा रहा नुकसान आयात के कारण नहीं है।

(xviii) जहां घरेलू रूप से निर्मित वस्तुएं आयातित वस्तुओं से कम मूल्य पर बेची जा रही हैं, वहां पर यदि कोई हानि है तो वह केवल घरेलू प्रतिस्पर्धा के कारण है न कि आयातित उत्पादों के कारण। प्राधिकारी द्वारा इसे भी नोट किया जा सकता है कि हानि की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का बिक्री मूल्य वर्णित वस्तुओं के आयात मूल्य के साथ अग्रानुक्रम में नहीं बढ़ रहा था बल्कि भारत में अन्य घरेलू निर्माताओं के बिक्री मूल्य के साथ अग्रानुक्रम में बढ़ रहा था।

(xix) कंपनी ने अपने वार्षिक रिपोर्ट में क्षमता को भार आधार पर सूचित किया है। तथापि, कंपनी ने वर्तमान याचिका में क्षमता को घन मीटर आधार में सूचित किया है। अतः यह स्पष्ट नहीं है कि कंपनी ने वर्तमान याचिका के प्रयोजनार्थ और क्या-क्या क्षमता माना है।

(xx) लैफर्ज और घरेलू उद्योग लाभ की मात्रा की तुलना से यह स्पष्ट होता है कि सेंट गोबेन की बिक्री 2008-09 में कम हुई जब अन्य उत्पादक बाजार में आए। इस अवधि में आयात भी कम हुआ। इसके अतिरिक्त, 2009-10 में सेंट गोबेन की बिक्री अन्य घरेलू उत्पादकों की बिक्री में और वृद्धि के कारण कम हुई। पी ओ आई में आयात में पर्याप्त वृद्धि हुई, इसके बावजूद सेंट गोबेन ने अपनी बिक्री में वृद्धि की और अन्य उत्पादकों की बिक्री भी बढ़ी।

(xxi) घरेलू उद्योग का खरीद मर्दों में पर्याप्त लाभ है। यह देखा जा सकता है कि कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट भी लाभ दर्शा रही है जबकि याचिकाकर्ता ने हानि का दावा किया है।

(xxii) कथित पाटित आयात में वृद्धि और कथित क्षति में कोई सह-संबंध नहीं है।

(xxiii) पी ओ आई के दौरान उत्पादन की लागत में गिरावट (11.11प्रतिशत तक) बिक्री मूल्य (5.36 प्रतिशत तक) में गिरावट से काफी अधिक है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि याचिकाकर्ता ने उत्पादन की लागत में आई कमी के कारण प्राप्त लाभ को अपने अंतिम उपभोक्ताओं को नहीं दिया। जब याचिकाकर्ता उत्पादन लागत में गिरावट के आधे को अपने अंतिम उपभोक्ताओं को देने की स्थिति में था तो यह दावा करने का आधार नहीं है कि मूल्य कटौती से याचिकाकर्ता का प्रदर्शन प्रभावित हुआ।

(xxiv) याचिकाकर्ता के भारत में चार निर्माण संयंत्र हैं – हरियाणा में जिंद, महाराष्ट्र, चेन्नई और बंगलौर। कंपनी ने अपने चेन्नई संयंत्र में उत्पादन को पूरी तरह से बंद कर दिया है और बंगलौर में एक ग्रीन फील्ड संयंत्र स्थापित किया है। कंपनी ने अभी तक चेन्नई संयंत्र को नहीं छोड़ा है और यह माना जाता है कि यह संयंत्र अभी भी कंपनी की पुस्तिका में विद्यमान है। यह जात नहीं है कि क्या कंपनी ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस संबंध में पूरा तथ्य प्रकट किया है अथवा नहीं और चेन्नई संयंत्र में खर्च और निवेश को क्षति सूचना तथा गैर क्षति मूल्य सूचना में शामिल किया है अथवा नहीं।

(xxv) कंपनी के घरेलू उद्योग ने वर्तमान मामले में यह स्थापित नहीं किया है कि वर्तमान मामले में संचयन की स्थिति को कैसे पूरा किया। जब तक इसे स्थापित नहीं किया जाता निर्दिष्ट प्राधिकारी संचयी मूल्यांकन नहीं करेंगे।

(xxvi) 10 अप्रैल, 2012 को मौखिक सुनवाई के समय अन्य घरेलू उत्पादक, लैफर्ज ने स्वयं माना कि यह घरेलू प्रतिस्पर्धा थी जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रही थी। नियमों में प्रावधान है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी क्षति के घटकों के रूप में घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति पर विचार करेंगे। वर्तमान मामले में, लैफर्ज ने स्वयं घरेलू प्रतिस्पर्धा के अस्तित्व को स्वीकार किया है। यह घरेलू प्रतिस्पर्धा ही है, जो क्षति का प्रमुख कारण है।

(xxvii) मालसूची में कोई नकारात्मक प्रवृत्ति नहीं हैं। वास्तव में औसत अथवेष स्टाक में कमी हुई है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि स्टाक के लिए बिक्री समय पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में अधिक तेज है। इस प्रकार मालसूची में स्पष्ट रूप से सकारात्मक प्रवृत्ति है।

(xxviii) बिक्री मूल्य में वृद्धि हुई है, क्षति अवधि में मजदूरी में वृद्धि हुई है, ऋणात्मक लाभ/क्षति में भी आर ओ सी ई सकारात्मक है जो दर्शाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त लाभ अधिक है, इसके अतिरिक्त, हालांकि नकद प्रवाह कम हुआ है किन्तु वह सकारात्मक है जो दर्शाता है कि मूल्यहास भी अधिक है। ये घटक प्रतिबिंबित करते हैं कि क्षति की अवधि के दौरान बिक्री मूल्य में वृद्धि हुई है किन्तु लाभ/क्षति ऋणात्मक है। यह स्पष्ट रूप से उपरिव्यय के कारण है जो क्षति की अवधि के दौरान बढ़ा है।

(xxix) 2007-08 और 2008-09 के बीच आयात मूल्य 21 प्रतिशत तक बढ़ा और आयात मात्रा में गिरावट आई। इसके बावजूद घरेलू उद्योग 2007-08 में लाभ की स्थिति से वित्तीय घटे में चली गई। उसके बाद, 2008-09 और 2009-10 के बीच आयात मूल्य में पर्याप्त गिरावट आई और आयात मात्रा में वृद्धि हुई किन्तु यह 2007-08 के स्तर से कम था। तथापि, 2009-10 में घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई हानि पर्याप्त रूप से बढ़ गई। 2009-10 तथा जांच की अवधि के बीच आयात मूल्य 2 प्रतिशत बढ़ गया जिसके बावजूद आयात मात्रा 95 प्रतिशत तक बढ़ा। आयात मात्रा में 95 प्रतिशत तक वृद्धि और आयात मूल्य में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई हानि जांच की अवधि में कम हुई।

(xxx) घरेलू प्रतिस्पर्धा में वृद्धि के साथ घरेलू उद्योग के प्रदर्शन में गिरावट आई। इसके अतिरिक्त, आयात से बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा के साथ घरेलू उद्योग के प्रदर्शन में सुधार आया। अतः वर्तमान मामले में कारणात्मक संबंध में थोड़ी बहुत भी संबद्धता नहीं है।

(xxxi) याचिकाकर्ता ने सूचित किया है कि 2003 और 2006 के दौरान भारत में उत्पाद के लिए मांग में अविरत वृद्धि हुई जिसके कारण इसने अपनी क्षमता में वृद्धि करने का निर्णय लिया। जबकि सवाल क्षति अवधि के दौरान क्षमता में वृद्धि के संबंध में था जो कि 2007 और 2010 के मध्य का है, याचिकाकर्ता ने 2003 और 2006 के बीच मांग में वृद्धि का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त, यद्यपि उपभोग में पूर्व में हुई वृद्धि भविष्य की मांग के अनुमान का संकेत हो सकता है, तथापि, यह स्वयं स्थापित नहीं कर सकता कि बाजार का आकार भी भविष्य में उसी अनुपात में बढ़ेगा। और निश्चित रूप से यही पूर्वानुमान गलती है कि बाजार का आकार हमेशा उसी स्तर पर बढ़ेगा, जो घरेलू उद्योग के पूरे नुकसान के लिए उत्तरदायी है।

(xxxii) 2008 और 2009 के दौरान बाजार आकार का लगभग 30 प्रतिशत तक बढ़ने के लिए याचिकाकर्ता के अनुमान के विसर्द्ध यह वास्तव में अनुवर्ती वर्षों में केवल 3 प्रतिशत और 2 प्रतिशत बढ़ा। इस अतिशय क्षमता ने इस अनुमान को जन्म दिया कि बाजार उच्च वृद्धि दर प्राप्त करेगा, जो कि नहीं हुआ जिससे उत्पादन की लागत में वृद्धि हुई (क्षमता के

सृजन आदि के लिए बंधे खर्च में वृद्धि, ब्याज लागत में वृद्धि) जिसके परिणाम स्वरूप याचिकाकर्ता को हानि हुई।

(xxxiii) क्षति, यदि कोई है, तो केवल घरेलू प्रतिस्पर्धा के कारण हुई न कि आयात के कारण। प्रतिवादी आयातक द्वारा आयातित बोर्डों का बिक्री मूल्य बोरल जिप्सम इंडिया प्रा. लि. द्वारा घरेलू रूप से निर्मित बोर्डों के बिक्री मूल्य से अधिक हैं। अतः, यद्यपि आयातित बोर्डों को भारतीय बाजार से पूरी तरह से हटा दिया गया है, फिर भी याचिकाकर्ता को घरेलू प्रतिस्पर्धा के कारण 'आर्थिक क्षति' हुई है।

(xxxiv) याचिकाकर्ता द्वारा एन आई पी की संगणना गलत की गई है क्योंकि याचिकाकर्ता ने 22 प्रतिशत की अत्यधिक दर से प्रतिफल का दावा किया है। प्राधिकारी द्वारा 3 प्रतिशत से अधिक प्रतिफल के दर की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

(xxxv) थार्डलैंड से आयातित वस्तुएं घरेलू से उत्पादित वस्तुओं से केवल उसी स्तर पर प्रतिस्पर्धा करती है जब उनकी भारत में पुनर्बिंक्री की जाती है। अतः, घरेलू उद्योग की क्षति का विश्लेषण प्रत्युत्तरदाता आयातक की पुनर्बिंक्री कीमत के आधार पर किया जाता है।

(xxxvi) देश में मांग की तुलना में क्षमता अधिक होने, घरेलू उद्योग द्वारा अधिक महंगे ईंधन का प्रयोग किए जाने, अन्य उत्पादों के लिए उत्तरदायी लागत को शामिल किए जाने, एनआईपी में बिक्री उपरांत व्यय को शामिल किए जाने, हड्डताल पर हुए व्यय, भंडारणागर पर आई लागत आदि के कारण घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित एनआईपी काफी उच्च हैं।

(xxxvii) घरेलू उद्योग को क्षति, बोरल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड से घरेलू प्रतिस्पर्धा के कारण हुई है, और न कि संबद्ध देश से आयात के कारण।

(xxxviii) जब एनआईपी का निर्धारण करने में याचिकाकर्ता के बिक्री और प्रशासनिक व्यय को शामिल किया जाता है तो भारत में प्रतिवादी से संबद्ध कंपनी द्वारा किए गए व्यय को, निष्पक्ष तुलना करने के लिए शामिल किया जाना चाहिए।

(xxxix) क्षति मार्जिन का निर्धारण, घरेलू उद्योग के एनआईपी के साथ बोरल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की पुनर्बिंक्री कीमत पर विचार करते हुए किया जाता है।

(xli) याचिकाकर्ता के एक संयंत्र में जांच की अवधि के दौरान हड्डताल और बंदी थी। निर्दिष्ट प्राधिकारी को चाहिए कि वे घरेलू उद्योग के निष्पादन पर विचार इसे ध्यान में रखते हुए करें।

(xlii) याचिकाकर्ता ने वर्तमान मामले में यह स्थापित नहीं किया है कि वर्तमान मामले में संचय की शर्त को किस तरह पूरा किया गया। जब तक उसे सिद्ध नहीं किया जाता है तब तक निर्दिष्ट प्राधिकारी संचयी आकलन नहीं कर पाएंगे।

(xlii) जांच अवधि के दौरान आयातों में पर्याप्त वृद्धि हुई। इस अवधि में सेट गोबिन की लाभप्रदायकता में भी काफी सुधार हुआ।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

58. प्राधिकारी द्वारा यहां किए गए क्षति का विश्लेषण तथ्यतः संबद्ध पक्षों द्वारा की गई विभिन्न प्रस्तुतियों का निराकरण करता है। तथापि, संबद्ध पक्षों द्वारा की गई विशिष्ट प्रस्तुतियां तथा प्राधिकारी द्वारा संगत मानी गई प्रस्तुतियों का निम्नवत समाधान किया गया:

- जहां तक क्षति मार्जिन के प्रयोजनार्थ आयातित मूल्य के निर्धारण के लिए भारत में आयातकों की पुनर्बिक्री मूल्य पर विचार करने का संबंध है, निर्यातकों, मैसर्स सिअम जिप्सम इंडस्ट्री (सरबुरी) कंपनी लिमिटेड और मैसर्स सिअम जिप्सम इंडस्ट्री (सॉगछला) क. लि. द्वारा प्रस्तुत कागजातों के आधार पर प्राधिकारी ने यह पाया कि थाईलैंड के निर्यातकों द्वारा यह दावा किया गया कि चूंकि निर्यातक और भारतीय आयातक संबंधित कंपनियां हैं, दोनों के बीच बिक्री मूल्य के बीच अंतरण मूल्य को प्रतिबिंबित करता है और संबद्ध वस्तु के लिए प्रचलित बाजार मूल्य का यथार्थवादी मूल्य प्रतिबिंबित नहीं करता है। अंतरण मूल्य और पुनर्बिक्री मूल्य में भिन्नता को ध्यान में रखते हुए भारत में खरीदारों के पहले स्वतंत्र पुनर्बिक्री मूल्य पर विचार के लिए एक तर्क पेश किया गया अर्थात बिक्री और वितरण खर्च तथा लाभ के अंतर के तत्व पर ध्यान देने के बाद एक स्वतंत्र कंपनी को मैसर्स बोरल जिप्सम इंडिया प्रा. लि. का बिक्री मूल्य। इस संबंध में संबंधित संबद्ध पक्षों ने सीमा-शुल्क आयुक्त, चैन्नई के आदेश संख्या \*\*\* दिनांक \*\*\* की प्रति प्रस्तुत की। उक्त आदेश की जांच पर प्राधिकारी ने यह पाया कि संबंधित संबद्ध पक्षों ने उसमें यह दावा किया है कि उक्त भारतीय आयातक और वर्णित देश से उक्त उत्पादक/निर्यातक के बीच संबंध ने मूल्य को प्रभावित नहीं किया है और इसलिए बिल मूल्य को स्वीकार किया जाए। सीमा शुल्क प्राधिकारी ने उक्त आदेश में यह भी निष्कर्ष दिया कि यथापि भारतीय आयातक और आपूर्तिकर्ता संबंधी है तथापि इस संबंध ने बिल के मूल्य को प्रभावित नहीं किया है। प्राधिकारी, सीमा शुल्क प्राधिकारी के उक्त आदेश से आगे यह नोट करते हैं कि थाईलैंड से कथित उत्पादक/निर्यातक और कथित भारतीय आयातक के अन्य देशों में भी संबंधित कंपनियां/निर्यातक हैं जो वर्णित वस्तुओं में आगीदार हैं किन्तु उन्होंने वर्तमान जांच में आग नहीं लिया। उपर्युक्त तथ्यों के मद्देनजर प्राधिकारी का यह मत है कि संबद्ध फर्मों अर्थात मैसर्स सिअम जिप्सम इंडस्ट्री (सरबुरी) क. लि. और मैसर्स सिअम जिप्सम इंडस्ट्री (सॉगछला) क. लि. तथा मैसर्स बोरल जिप्सम इंडिया प्रा. लि. के बीच अंतरण मूल्य पूरी तरह से नजदीकी संबंध के आधार पर है और आयात मूल्य निर्धारण तथा घरेलू उद्योग के गैर हानिकारक मूल्य के साथ तुलना और मूल्य कटौती/कम बिक्री के विश्लेषण में उस पर विचार करने तथा क्षति अंतर आदि के निर्धारण के लिए आधार के रूप में संबंधित भारतीय आयातक की पुनर्बिक्री मूल्य को स्वीकार नहीं करता है। निर्यातकों द्वारा प्रस्तुतियों के आधार पर वर्णित वस्तुओं की बिक्री/अंतरण मूल्य को सीमा शुल्क प्राधिकारी द्वारा विधिवत रूप से प्रचलित बाजार मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया। उक्त के मद्देनजर प्राधिकारी की यह राय है कि मैसर्स सिअम जिप्सम इंडस्ट्री (सरबुरी)

कंपनी लिमिटेड और मैसर्स सिअम जिप्सम इंडस्ट्री (सॉगखला) कंपनी लिमिटेड तथा उनके संबंधित आरतीय आयातकों के बीच वर्णित वस्तुओं का विक्रय मूल्य नजदीकी आधार पर प्रचलित बाजार मूल्य को प्रतिबिंबित करता है और उसे प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग की क्षति के मूल्यांकन के लिए आयातित माल के मूल्य के निर्धारण के लिए आधार माना।

- संबद्ध पक्षों के दावे के संबंध में कि घरेलू उद्योग को क्षति अन्य घरेलू उत्पादकों अर्थात्, मैसर्स बोरल जिप्सम इंडिया प्रा. लि. के प्रवेश द्वारा उत्पन्न आंतरिक प्रतिस्पर्धा के कारण हुई, प्राधिकारी ने पाया कि यद्यपि घरेलू उद्योग के बाजार शेयर का कुछ हिस्सा नए प्रतियोगी के पास जा सकता है, परंतु इसे घरेलू उद्योग द्वारा बाजार शेयर की क्षति के लिए एकमात्र कारण नहीं माना जा सकता है। इसके विपरीत, घरेलू उद्योग के बाजार शेयर की हानि वर्णित देशों से वर्णित वस्तुओं के पर्याप्त आयात के कारण भी है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा कि घरेलू उद्योग को बाजार शेयर की क्षति केवल मैसर्स बोरल जिप्सम इंडिया प्रा. लि. द्वारा उत्पन्न घरेलू प्रतिस्पर्धा के कारण हुई। प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि थाईलैंड के निर्यातक तथा मैसर्स बोरल जिप्सम इंडिया प्रा. लि. संबंधित कंपनियां हैं। प्रस्तुत की गई तथा प्राधिकारी द्वारा सत्यापित की गई सूचनाओं के आधार पर इस बात की पुष्टि होती है कि थाईलैंड के निर्यातक अर्थात् मैसर्स सिअम जिप्सम इंडस्ट्री (सरबुरी) कंपनी लिमिटेड और मैसर्स सिअम जिप्सम इंडस्ट्री (सॉगखला) कंपनी लिमिटेड दोनों ने वर्णित वस्तुएं भारत को बहुत कम कीमत पर बेची जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई।
- प्राधिकारी यह नोट करती है कि पाटनरेथी शुल्क लगाने का इरादा बाजार से प्रतिस्पर्धा को दूर करना नहीं है, किन्तु उचित प्रतिस्पर्धा की विशेषता वाले अपेक्षाकृत समान अवसर क्षेत्र का सृजन करना है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि संबंधित पक्षों ने अपनी प्रस्तुतियों के समर्थन में कोई कागजी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है कि भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग ने घरेलू उद्योग के खिलाफ इस संबंध में पहले ही एक जांच शुरू की है। घरेलू उद्योग ने भी अपनी कंपनी के खिलाफ सी सी आई द्वारा ऐसे किसी जांच से इनकार किया। तथापि, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग द्वारा शुरू की गई जांच एंटी डंपिंग जांचों की परिधि से बाहर है।
- प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के चैनल्स द्वारा संबंधित हानि लागत को न तो एन आई पी के निर्धारण के लिए विचार किया गया है और न ही क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ। अतएव, इस संबंध में संबंधित पक्षों की प्रस्तुतियां निराधार हैं।
- घरेलू उद्योग द्वारा कुछ बोर्डों के सीमित उपभोग के संबंध में उसका मूल्य नगण्य है। नमूना या दिखावटी मॉडल व्यय का भाग होने के कारण इसे बिक्री संवर्धन के लिए व्यापार खर्च के रूप में माना गया।
- नियोजित पूंजी पर प्रतिफल के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियोजित पूंजी पर प्रतिफल सख्ती से समय-समय पर यथा संशोधित एंटी डंपिंग नियमों के प्रावधानों के अनुसार एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पालन किए जा रहे सुसंगत प्रथाओं के अनुसार माना गया है। इसके अतिरिक्त यह स्पष्ट किया जाता है कि प्राधिकारी द्वारा नियोजित पूंजी के कुछ प्रतिशत के रूप

में स्वीकृत प्रतिफल में न केवल घरेलू उद्योग का प्रतिफल/लाभ अंतर शामिल है बल्कि वित्तीय प्रभार एवं करों के तत्व भी शामिल हैं।

- भार के आधार पर वार्षिक रिपोर्ट में सूचित क्षमता की तुलना में धन भीटर के आधार पर स्थापित क्षमता के निर्धारण के संबंध में प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन की जा रही वर्णित वस्तुओं के नमूना चौड़ाई के आधार पर मानक चौड़ाई के लिए साधारण जिप्सम प्लास्टर बोर्ड की मानक चौड़ाई के आधार पर धन भीटर बेसिस पर क्षमता को माना है।
- प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट सभी गतिविधियों के लिए कंपनी की वित्तीय स्थिति का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें मानक जिप्सम बोर्ड, मूल्य वर्धित जिप्सम बोर्ड तथा अन्य उत्पाद शामिल हैं।

59. क्षति के विभिन्न मापदंडों की प्रवृत्ति के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों की विशिष्ट प्रस्तुतिकरणों को प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग को क्षति की जांच करते हुए उपयुक्त रूप से ध्यान में रखा गया है। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को होने वाली कुछ क्षति के लिए पाटित आयातों के अलावा अन्य तथ्यों को भी उत्तरदायी ठहराया जा सकता है, विभिन्न संगत तथा यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण भी हुई है। पाटनरोधी नियमावली के प्रावधान प्राधिकारी से यह अपेक्षा करते हैं कि पाटन मार्जिन या क्षति मार्जिन के न्यूनतर को पाटनरोधी शुल्क के रूप में अधिरोपित करने की सिफारिश करे। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के लिए गैर-क्षतिकारी कीमत पर आधारित होने के बावजूद क्षति मार्जिन सकारात्मक है।

60. जहां तक क्षति के संग्रहित मूल्यांकन का संबंध है, प्राधिकारी ने टिप्पणी की है कि प्रतिपाटन नियमावली के पैरा (iii) के अनुबंध-II में प्रावधान है कि एक से अधिक देशों से आयात किए जाने वाले उत्पादों पर विचार पाटनरोधी जांच के साथ ही किया जाता है, निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयात को संग्रहित मूल्यांकन निम्न स्थिति अनुसार निर्धारित करता है :

- प्रत्येक देश से किए गए आयात के संबंध में पाटन का मार्जिन निर्यात मूल्य के 2 प्रतिशत से अधिक के रूप में व्यक्त किया जाता है तथा प्रत्येक देश से आयात की मात्रा, उस तरह की वस्तु पर, तीन प्रतिशत अथवा जहां देश विशेष से होने वाला निर्यात 3 प्रतिशत से कम हो वहां आयात को उसी तरह की वस्तुओं के आयात के सात प्रतिशत संग्रहित आयात के रूप में माना जाता है।
- आयातित वस्तुओं के बीच तथा उसी तरह की घरेलू वस्तुओं के लिए प्रतिस्पर्धा की शर्तों के प्रकाश में आयात का संग्रहित मूल्यांकन उपयुक्त है। इस संबंध में प्राधिकारी ने टिप्पणी की है कि :
  - प्रत्येक संबद्ध देश से आयात का मार्जिन निर्धारित सीमा से अधिक है।
  - प्रत्येक संबद्ध देश से आयात की मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक है।
  - आयात का संग्रहित मूल्यांकन उपयुक्त है क्योंकि संबद्ध देशों से निर्यात की गई वस्तुएं भारतीय बाजार में सीधे घरेलू उद्योग द्वारा वैसी वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा करती हैं। यह निम्नलिखित से स्पष्ट होता है।

क. संबद्ध देशों से उत्पादकों द्वारा विनिर्भित संबद्ध वस्तुएं, घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्भित वस्तुओं जैसी होती हैं। अन्य शब्दों में, विभिन्न संबद्ध देशों द्वारा आपूर्ति की गई वस्तुएं तथा घरेलू उद्योग द्वारा तैयार की गई वस्तुओं के समान होती हैं।

ख. कुछ ऐसे पक्षकार हैं जो विभिन्न स्रोतों तथा घरेलू सामग्री से आयातित सामग्री का प्रयोग समान रूप से करते हैं। अतः आयातित तथा घरेलू सामग्री का प्रयोग आपसी अदलाबदली हेतु किया जाता है तथा घरेलू उत्पादक और आयातित उत्पादक के बीच सीधी प्रतिस्पर्धा होती है।

ग. संबद्ध देशों से निर्यातकों तथा घरेलू उद्योग ने वही उत्पाद, उसी अवधि के दौरान, उसी प्रकार के उपभोक्ताओं को बेचे हैं। बिक्री चैनल की तुलना की जा सकती है।

घ. प्रत्येक संबद्ध देश से आयात की मात्रा पर्याप्त है।

ड. उपभोक्ता विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं द्वारा दिए गए मूल्यों के आधार पर क्रय का निर्णय लेते हैं।

61. उपर्युक्त के मद्देनज़र, प्राधिकारी, चीन पीआर, इंडोनेशिया, थाईलैंड तथा यूएई से संबद्ध वस्तुओं के आयात प्रभाव का संग्रहित मूल्यांकन आयातित उत्पादों तथा उस तरह के घरेलू उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तों के प्रकाश में घरेलू उद्योग के आधार पर करने को उपयुक्त समझते हैं। प्राधिकारी ने टिप्पणी की है कि विदेशों से आयात मार्जिन निर्धारित सीमा से अधिक है।

62. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में दोनों की वस्तुपरक जांच का प्रावधान है, (क) आयात की मात्रा तथा वैसी वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में मूल्यों पर उनका प्रभाव तथा (ख) ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का प्रभाव। अयातित वस्तुओं की मात्रा के प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी को इस बात की जांच करनी होती है कि क्या भारत में उत्पादन अथवा उपयोग के आधार पर इन आयातित वस्तुओं में पर्याप्त वृद्धि हुई है। आयात करके लाई गई वस्तुओं के मूल्यों के प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी द्वारा उनकी आरत में वैसे उत्पादों के मूल्य से तुलना करते हुए आयातित वस्तुओं के मूल्य में पर्याप्त कमी की जांच अथवा क्या ऐसे आयात के कारण मूल्यों में अन्यथा भारी कमी तो नहीं होती की जांच करना अपेक्षित होता है।

63. जहां तक पाटित आयातों का घरेलू उद्योग पर प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के पैरा IV का अनुबंध-II निम्न उल्लिखित करता है :

“संबंधित घरेलू उद्योग पर आयात की गई वस्तुओं के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक तथ्यों का मूल्यांकन तथा जिसमें बिक्री, लाभ, आउटपुट, मार्किट शेयर, उत्पादक का शेयर, निवेश पर लाभ अथवा क्षमता निर्माण, घरेलू मूल्यों को प्रभावित करने वाले तथ्य, वास्तविक रूप से आयात की गई वस्तुओं के मार्जिन तथा रोकड़, इनवेंटरी, रोजगार, वेतन वृद्धि तथा निवेश पर पूंजी उगाहने जैसे घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले सूचकांक का मूल्यांकन शामिल होता है।”

64. भारत के घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के संबंध में प्राधिकारी ने उत्पादन, क्षमता उपयोगी, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभ, नेट बिक्री प्राप्ति, आयात की गई वस्तुओं की मात्रा

तथा मार्जिन पर प्रभाव डालने वाले अन्य सूचकांकों पर, उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-II (iv) के अनुसार, विचार किया है।

#### ट. मांग एवं बाजार हिस्सा

65. संबद्ध वस्तु की घरेलू खपत/मांग का आकलन करने के उद्देश्य से घरेलू तथा अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री मात्रा को भारत में कुल आयातों में जोड़ लिया गया और उसका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :-

घन मीटर (एम 3)

	अप्रैल 07- मार्च 08	अप्रैल 08- मार्च 09	अप्रैल 09- मार्च 10	जांच अवधि
संबंधित माल का आयात	54082	49851	54005	106062
घरेलू उद्योग की बिक्री	226928	211235	198999	216092
अन्य उत्पादकों की बिक्री	-	30000	45000	58125
कुल मांग	281010	291086	298004	380279
संबद्ध देशों का % हिस्सा	19.24	17.13	18.12	27.89
अन्य देशों का हिस्सा	-	-	0.06	0.24
घरेलू उत्पादन का हिस्सा	80.75	82.87	81.88	72.1
घरेलू उद्योग का हिस्सा (%)	80.75	72.56	66.78	56.82
अन्यों का हिस्सा	-	10.31	15.10	15.28

66. उक्त सारणी से प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि वर्ष 2007-08, 2008-09 और 2009-10 के दौरान संबंधित देशों से संबद्ध माल का कुल आयात वर्ष 2008-09 के दौरान आयात की मात्रा में हुई कुछ गिरावट को छोड़कर कमोवेश स्थिर बना रहा। पीओआई में ही आयात की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई और मूल वर्ष की तुलना में आयात लगभग 96 प्रतिशत की वृद्धि हुई। प्राधिकारी ने यह भी नोट किया है कि पीओआई सहित पूरी क्षति अवधि के दौरान घरेलू उत्पादकों की बिक्री कमोवेश स्थिर बनी रही जबकि इसी अवधि के दौरान अन्य उत्पादकों की बिक्री में निरंतर रूप से वृद्धि हुई।

#### ठ. पाटन आयात का मात्रा प्रभाव

##### आयात की मात्रा और विपणन का हिस्सा

67. पाटन आयात की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या भारत में निरपेक्ष संदर्भ में या उत्पादन या उपभोग के संदर्भ में पाटन आयात में अत्यधिक वृद्धि हुई है या नहीं। क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने डीजीसीआई और एस सोत से प्राप्त आयात के आंकड़ों पर विश्वास किया है। संबद्ध देशों से संबद्ध माल की आयात की मात्रा का विश्लेषण नीचे दिया गया है :

घन मीटर (एम 3)

व्यौरा	अप्रैल 07- मार्च 08	अप्रैल 08- मार्च 09	अप्रैल 09- मार्च 10	जांच अवधि
निरपेक्ष संदर्भ में आयात				
क. थाईलैंड	50027	43525	27486	53645

ख. इंडोनेशिया	2397	4839	11382	11777
ग. चीन पी आर	1652	1487	5598	4298
घ. यूएई		0	9357	35414
ड. संबंधित देशों से आयात	54076	49851	53823	105134
अन्य देशों से आयात	6	-	182	928
कुल आयात	54082	49851	54005	106062
कुल बिक्री विचाराधीन उत्पाद (घरेलू उद्योग)	226928	241235	243999	274217
कुल मांग	281010	291086	298004	380279
कुल आयात के % के रूप में आयात	23.8	23.2	22.1	38.7
क. थाइलैंड	92.5	87.3	50.9	50.6
ख. इंडोनेशिया	4.4	9.7	21.1	11.1
ग. चीन पी आर	3.1	3.0	10.4	4.1
घ. यूएई	0.0	0.0	17.3	33.4
संबद्ध देश	100.0	100.0	99.7	99.1
अन्य देश	0.0	0.0	0.3	0.9
सकल जोड़	100.0	100.0	100.0	100.0
भारत में मांग	281010	291086	298004	380279
भारत में प्रवृत्ति	100	104	106	135
मांग में हिस्सा				
क. घरेलू उद्योग	80.75	72.56	66.78	56.82
ख. अन्य भारतीय उत्पादक	-	10.31	15.10	15.28
ग. कुल (क+ख)	80.75	82.87	81.88	72.1
घ. संबद्ध देश	19.25	17.13	18.06	27.66
ड. अन्य देश	-	-	0.06	0.24

68. प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि :

- आयात में निरपेक्ष संदर्भ में वृद्धि हुई है लेकिन वर्ष 2008-09 के दौरान हुई लगभग 8 प्रतिशत की गिरावट को छोड़कर यह वर्ष 2007-08, 2008-09 और 2009-10 के दौरान सामान्य रूप से स्थिर बनी रही। केवल पीओआई में ही आयात की मात्रा में वृद्धि हुई है। पीओआई में हुई यह वृद्धि मूल वर्ष की तुलना में 96 प्रतिशत हुई है।
- प्लेन जिप्सम प्लास्टर बोर्ड की मांग, क्षति और पीओआई अवधि के दौरान धीरे-धीरे बढ़ी है। मूल वर्ष की तुलना में वर्ष 2009-10 तक मांग में वृद्धि लगभग 6 प्रतिशत रही है। तथापि, मूल वर्ष की तुलना में पीओआई में मांग में हुई कुल वृद्धि लगभग 35 प्रतिशत रही। ऐसी ही प्रवृत्ति, संबंधित देशों से हुए आयात की मात्रा में नोट की गई है।

(iii) घरेलू उत्पादों का हिस्सा और संबंधित देशों से संबंधित माल का आयात, वर्ष 2009-10 तक सामान्यतया स्थिर रहा। तथापि, संबंधित देशों से आयात की मात्रा में वृद्धि होने के कारण भारत में उत्पाद की मांग में आयात का हिस्सा 19 प्रतिशत से बढ़कर 27 प्रतिशत हो गया।

(iv) प्राधिकारी ने नोट किया है कि वर्ष 2009-10 तक कुल मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा लगभग 80 प्रतिशत था। तथापि, आधार वर्ष की तुलना में पीओआई के दौरान कुल मांग में से लगभग 9 प्रतिशत की गिरावट आई। इस 9 प्रतिशत को संबद्ध देशों से आयात की मात्रा में तीव्र वृद्धि से पूरा किया गया। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से का विश्लेषण यह प्रदर्शित करता है कि घरेलू उद्योग ने भी अपनी बाजार का कुछ हिस्सा नवागन्तुक मैसर्स लाफार्ज बोराल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए खो दिया। हालांकि जांचावीध में आधार वर्ष की तुलना में संबद्ध वस्तु की मांग में 99,269 सी<sup>3</sup> की वृद्धि परंतु उसी अवधि के दौरान अन्य घरेलू उत्पादक मैसर्स लाफार्ज बोराल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के हिस्से में वृद्धि केवल 58123 सी<sup>3</sup> थी। उसी समय जब घरेलू उद्योग ने 10836 सी<sup>3</sup> मीटर की गिरावट नोट की, वही संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में 51980 सी<sup>3</sup> मीटर तक की वृद्धि देखी गई।

(v) सत्यापन के दौरान प्राधिकारी यह नोट किया कि घरेलू उद्योग के कुछ संयंत्र, पीओआई के दौरान लगभग \*\*\* अवधि के लिए बंद कर दिए गए थे। प्राधिकारी ने यह भी नोट किया कि इस संयंत्र की क्षमता, घरेलू उद्योग की स्थापित क्षमता का \*\*\* प्रतिशत है। इसके अलावा, पीओआई के दौरान इस संयंत्र को उत्पादन क्षमता, घरेलू उद्योग की कुल उत्पादन क्षमता का \*\*\* प्रतिशत थी।

### ड. आयातों का कीमत प्रभाव

69. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी से अपेक्षा है कि वे यह विचार करें कि क्या भारत में समान उत्पादों की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमतों का अत्यधिक अधोरुद्धन किया गया है या इन आयातों के प्रभावस्वरूप कीमतों में अन्यथा कमी आई है या इन्होंने कीमतों में वृद्धि को रोका है जो अन्यथा काफी अधिक मात्रा में बढ़ गई होती। घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का कीमत अधोरुद्धन, कम कीमत पर बिक्री, कीमत अवनमन और कीमत निग्रहण, यदि कोई, के संदर्भ में विचार किया गया।

### कीमत अधोरुद्धन

70. यह निर्धारण करने के लिए कि क्या आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरुद्धन हो रहा है प्राधिकारी ने आयातों की उत्तराई कीमत से घरेलू उद्योग की निवल बिक्री अर्जन से तुलना की। प्राधिकारी ने निवल बिक्री अर्जन का निर्धारण करों और शुल्कों, छूटों, बट्टा और कमीशन के अतिरिक्त बिक्री कीमत पर विचार करके किया। घरेलू उद्योग की समस्त बिक्री मात्रा को इस गणना में शामिल किया गया। आयातों की उत्तराई कीमत का निर्धारण समुद्री पत्तन से अंतर्भूमि पत्तन तक का, 1 प्रतिशत उत्तराई प्रभार सहित, समुद्री भाड़ा और लागू आधारभूत सीमा शुल्क का अपवर्जन करने के पश्चात भारित औसत सीआईएफ आयात कीमत पर विचार करके किया गया। निवल बिक्री प्रापण और आयातों की उत्तराई कीमत के बीच तुलना की गई। प्राधिकारी ने पाटित आयातों द्वारा भारित औसत कीमत पर अधोरुद्धन का निर्धारण किया। थाईलैंड के निर्यातकों द्वारा यह तर्क दिया गया कि कीमत अधोरुद्धन का निर्धारण करने के उद्देश्य से संबंधित निकाय अर्थात मैसर्स लाफार्ज बोराल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की पुनर्बिक्री कीमत अधिक

संगत एवं उपर्युक्त है क्योंकि यह उस वास्तविक कीमत का प्रदर्शन करती है जिसपर संबद्ध वस्तु की घरेलू बाजार में प्रविष्टि होती है। इस मुद्दे का प्राधिकारी ने इस अंतिम जांच परिणाम में निराकरण पहले ही कर दिया है और प्राधिकारी द्वारा यथा उल्लिखित तथ्यों के मद्देनज़र, प्राधिकारी ने संबंधित उत्पादक/निर्यातक का तर्क स्वीकार नहीं किया है।

71. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की उत्तराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण अत्यधिक कीमत अधोरदन हो रहा है जैसाकि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है।

रुपए/घनमीटर (एम<sup>3</sup>)

क्रम सं.	विवरण	यूएई	चीन	इंडोनेशिया	थाईलैंड	संबद्ध वस्तु
1.	घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	***	***	***	***	***
2.	उत्तराई कीमत	***	***	***	***	***
3.	अधोरदन	***	***	***	***	***
4.	अधोरदन %	***	***	***	***	***
5.	अधोरदन % रेज	25-35	30-40	20-30	40-50	32-42

72. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की उत्तराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है, जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक कीमत अधोरदन हुआ है।

#### कम कीमत पर बिक्री

73. निम्नलिखित तालिका से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कीमतों का कम बिक्री पर सकारात्मक एवं पर्याप्त प्रभाव है।

क्रम सं.	विवरण	यूएई	चीन	इंडोनेशिया	थाईलैंड	संबद्ध वस्तु
1.	घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमत	***	***	***	***	***
2.	उत्तराई मूल्य	***	***	***	***	***
3.	कम बिक्री	***	***	***	***	***
4.	कम बिक्री का %	***	***	***	***	***
5.	कम बिक्री % रेज	30-40	40-50	25-35	45-55	35-45

#### कीमत अधिलंघन/कीमत निग्रहण

74. यह निर्धारण करने के लिए कि क्या पाटित आयातों से घरेलू कीमतों का अधिलंघन/निग्रहण हो रहा है प्राधिकारी ने यह निर्धारण किया कि क्या इन आयातों का प्रभाव कीमतों का अधिलंघन करना है या कीमतें बढ़ने से रोकना है, जो अन्यथा काफी हद तक घटित हुआ होता।

रुपए/घनमीटर (एम<sup>3</sup>)

	अप्रैल 07- मार्च 08	अप्रैल 08- मार्च 09	अप्रैल 09 – मार्च 10	जांच अवधि
बिक्री कीमत रुपए/एम <sup>3</sup>	***	***	***	***
अभिसूचीबद्ध लागत -रुपए/एम <sup>3</sup>	100	109	108	106
अभिसूचीबद्ध	100	124	121	122

75. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत और बिक्री कीमत में विभिन्न प्रवृत्तियां रही हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पादन लागत में परिवर्तन से प्राथमिकतः घरेलू उद्योग के निष्पादन में उतार-चढ़ाव आया। घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2008-09 के दौरान 24 प्रतिशत और वर्ष 2009-10 के दौरान 21 प्रतिशत बढ़ी। समसामयिक वर्ष के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में वृद्धि केवल क्रमशः 9 प्रतिशत और 12 प्रतिशत रही।

#### इ. घरेलू उद्योग के आर्थिक पैरामीटर्स

76. पाटनरोधी नियमावली का अनुबंध-II। यह अपेक्षा करता है कि क्षति निर्धारण में उन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की उद्देश्यपरक जांच शामिल होनी चाहिए। इन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इनके आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में पाटनरोधी नियमावली में पुनः प्रावधान है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में उन सभी संगत आर्थिक तथ्यों तथा अभिसूचकों का उद्देश्यपरक एवं पक्षपात रहित मूल्यांकन शामिल होना चाहिए जिनका उद्योग पर प्रभाव पड़ता है जिसमें बिक्री में वास्तविक एवं संभावित गिरावट, लाभ, आउटपुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश से आय या क्षमता उपयोग; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले तथ्य, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकदी प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूजी निवेश उगाहने की क्षमता शामिल हैं।

77. घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति पैरामीटरों का वर्णन निम्नलिखित है :

#### (i) घरेलू उद्योग का उत्पादन, क्षमता एवं क्षमता उपयोग

रुपए/घनमीटर (एम<sup>3</sup>)

	अप्रैल 07- मार्च 08	अप्रैल 08- मार्च 09	अप्रैल 09 – मार्च 10	जांच अवधि
क्षमता	287500	350000	412500	412500
कुल उत्पादन	226987	210860	204675	219882
क्षमता उपयोग %	79%	60%	50%	53%

78. उपर्युक्त तालिका संकेत करती है कि घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में क्षति अवधि के दौरान कमी आई है। हालांकि जांच की अवधि के दौरान क्षमता उपयोग में तत्काल विगत वर्ष की तुलना में मामूली सी वृद्धि हुई है। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षमता में वर्ष 2008-09 और वर्ष 2009-10 के दौरान वृद्धि दर्ज हुई है। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा जोड़े गए नए संयंत्रों का उपयोग तुलनात्मक रूप से न्यूनतर स्तर पर हुआ है। प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि क्षमता संवर्धन के बावजूद घरेलू उद्योग की उसी अवधि के दौरान की कुल उत्पादन मात्रा में मामूली सी गिरावट आई है, हालांकि जांच की अवधि के दौरान उत्पादन की मात्रा में विगत वर्ष की तुलना में थोड़ी सी वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत जानकारी का सत्यापन करते समय यह नोट किया गया कि घरेलू उद्योग के संयंत्रों में से एक संयंत्र जांच की अवधि के दौरान हड्डताल के कारण बंद हो गया। यह संयंत्र घरेलू उद्योग की कुल संस्थापित क्षमता के \*\*\*% का प्रतिनिधित्व करता था। प्राधिकारी नोट करते हैं कि अगर जांच की अवधि के दौरान इस संयंत्र में यदि हड्डताल न हुई होती तो घरेलू उद्योग का वास्तविक उत्पादन और क्षमता उपयोग इससे उच्चतर रहा होता। इस संयंत्र का उस अवधि का उत्पादन जब यह प्रचालन में था, जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के कुल उत्पादन के \*\*\*% उत्पादन के लिए उत्तरदायी था।

### (ii) बिक्री मात्रा और मूल्य

79. क्षति जांच अवधि के दौरान मांग में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में लगभग 5 प्रतिशत तक की गिरावट आई। घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में गिरावट के लिए मैसर्स लाफार्जी बोराल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा घरेलू उत्पादन शुरू किए जाने तथा संबद्ध देशों से आयातों में अत्यधिक वृद्धि को रांशिक रूप से उत्तरदायी ठहराया जा सकता है।

रूपए/घनमीटर (एम<sup>3</sup>)

	अप्रैल 07- मार्च 08	अप्रैल 08- मार्च 09	अप्रैल 09- मार्च 10	जांच अवधि
कुल बिक्री मात्रा घरेलू	226928	211235	198999	216092
अभिसूचीबद्ध	100	93	88	95

### (iii) लाभप्रदायकता

80. वर्ष 2007-08 से वर्ष 2009-10 तक तथा जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री के संबंध में बिक्री लागत, निवल बिक्री प्राप्ति, और लाभ/हानि का व्यौरा निम्नलिखित तालिका में दिया जा रहा है :-

क्रम सं.	विवरण	इकाई	अप्रैल 07- मार्च 08	अप्रैल 08- मार्च 09	अप्रैल 09- मार्च 10	जांच अवधि
1	बिक्री	लाख रुपए	***	***	***	***
	अनुक्रमणिका		100	102	98	101
2	बिक्री लागत (घरेलू)	लाख रुपए	***	***	***	***
	अनुक्रमणिका		100	115	109	116
3	लाभ/हानि (घरेलू)	लाख रुपए	***	(***)	(***)	(***)

	अनुक्रमणिका		100	(32)	(14)	(49)
4	बिक्री की लागत (घरेलू)	रुपए/भी.टन	***	***	***	***
	अनुक्रमणिका		100	124	121	122
5	बिक्री मूल्य (घरेलू)	रुपए/भी.टन	***	***	***	***
	अनुक्रमणिका		100	109	109	106
6	लाभ/हानि (घरेलू)	रुपए/भी.टन	***	(***)	(***)	(***)
	अनुक्रमणिका		100	(36)	(152)	(51)
7	मूल्यहास	लाख रुपए	***	***	***	***
	अनुक्रमणिका		100	141	164	163
8	ब्याज लागत	लाख रुपए	***	***	***	***
	अनुक्रमणिका		100	1793	2980	2571
9	पीबीआईटी	लाख रुपए	1517	267	1019	338
	अनुक्रमणिका		100	18	67	22
10	नकद लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
	अनुक्रमणिका		100	35	55	34
11	लगाई गई पूँजी	लाख रुपए	***	***	***	***
	अनुक्रमणिका		100	24	34	9
12	लगाई गई पूँजी पर आय	%	***	***	***	***

81. प्राधिकारी नोट करते हैं कि :

- (i) घरेलू उद्योग क्षति अवधि के आधार वर्ष में लाभ अर्जन कर रहा था। घरेलू उद्योग का फायदा वर्ष 2008-09 में घाटे में परिवर्तित हो गया। पुनर्श्च, घरेलू उद्योग को वर्ष 2009-10 के दौरान संबद्ध वस्तु की बिक्री से घाटा होता रहा हालांकि नुकसान की प्रमात्रा में मामूली सी गिरावट आई। तथापि, घरेलू उद्योग के नुकसान में जांच अवधि के दौरान एक बार फिर काफी बढ़ोतरी हो गई।
- (ii) घरेलू उद्योग के बिक्री प्रापण और उत्पादन की लागत का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन लागत में वर्ष 2008-09 और 2009-10 में तीव्र उछाल आया। जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत में आधार वर्ष की तुलना में 22 प्वाइंट की वृद्धि हुई। दूसरी ओर घरेलू उद्योग की बिक्री प्रापण में उत्पादन लागत के समनुरूप वृद्धि नहीं हुई। वर्ष 2009-10 तक उत्पादन लागत में 21 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में बिक्री प्रापण में केवल 9 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को वित्तीय क्षति हुई।
- (iii) घरेलू उद्योग के लागत ढांचे का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि घरेलू उद्योग के स्थिर प्रभारों, खासकर मूल्यहास और ब्याज व्यय के संबंध में अत्यधिक वृद्धि हुई।
- (iv) जांच की अवधि के दौरान जब संबद्ध देश से आयात की मात्रा में पर्याप्त वृद्धि हुई थी तो घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा और उत्पादन दोनों में वृद्धि हुई।

(v) सांखिकीय विश्लेषण से पुनः यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने क्षति अवधि तथा जांच अवधि के दौरान सतत नकद लाभ अर्जन किया यद्यपि उक्त अवधि के दौरान लाभ के स्तर में अत्यधिक उतार-चढ़ाव रहा। घरेलू उद्योग के नकद लाभ में जांच अवधि के दौरान, तत्काल विगत वर्ष एवं आधार वर्ष की तुलना में अत्यधिक गिरावट आई।

#### (iv) रोजगार एवं मजदूरी

82. घरेलू उद्योग की क्षति अवधि तथा जांच की अवधि के दौरान रोजगार एवं मजदूरी की प्रवृत्ति का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है -

	अप्रैल 07- मार्च 08	अप्रैल 08- मार्च 09	अप्रैल 09 - मार्च 10	जांच अवधि
कर्मचारियों की संख्या	***	***	***	***
अभिसूचीबद्ध	100	99	94	95
कुल मजदूरी (लाख रुपए)	***	***	***	***
अभिसूचीबद्ध	100	124	130	135

83. मजदूरी : प्राधिकारी, उपर्युक्त तालिका से यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के कर्मचारियों की संख्या में क्षति अवधि और जांच अवधि के दौरान 5 प्रतिशत की गिरावट आई। दूसरी ओर कमागारों के कुल वेतन में लगभग 35 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई।

84. मालसूची : संबद्ध वस्तु के संबंध में मालसूची से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित सारणी में दर्शाए गए हैं :

रुपए/घनमीटर (एम<sup>3</sup>)

	अप्रैल 07- मार्च 08	अप्रैल 08- मार्च 09	अप्रैल 09 - मार्च 10	जांच अवधि
अथशेष माल	***	***	***	***
इति शेष माल	***	***	***	***
औसत स्टॉक	***	***	***	***
सूची	100	81	77	98

85. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के औसत भंडार में वर्ष 2008-09 और वर्ष 2009-10 के दौरान कमी आई। तथापि, जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के भंडार में वृद्धि हुई परंतु यह आधार वर्ष के दौरान औसत भंडार की तुलना में आंशिक रूप से न्यूनतर रहा।

86. उत्पादकता : उत्पादकता से संबंधित आंकड़े निम्नलिखित हैं :

रुपए/घनमीटर (एम<sup>3</sup>)

	अप्रैल 07- मार्च 08	अप्रैल 08- मार्च 09	अप्रैल 09 - मार्च 10	जांच अवधि

उत्पादन	226987	210860	204675	219882
कर्मचारी	***	***	***	***
उत्पादन प्रति कर्मचारी	***	***	***	***
अभिसूचीबद्ध	100	93	96	102

आधार अवधि की तुलना में जांच अवधि के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं आया है।

#### (v) पाटन का परिमाण

87. पाटित आयात घरेलू उद्योग को जिस सीमा तक क्षति पहुंचा सकते हैं उसके संकेतक के रूप में पाटन का परिमाण दर्शाता है कि संबद्ध देशों के विरुद्ध निर्धारित पाटन मार्जिन न्यूनतम से ज्यादा एवं अत्यधिक है।

88. निधियां उगाहने की क्षमता : प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री से घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में क्षति अवधि और जांच अवधि के दौरान गिरावट आई। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग का, विचाराधीन उत्पाद के अलावा अन्य प्रचालनों से कारोबारी एवं लाभप्रदायकता की राशि काफी अधिक है। इसलिए, ऐसा प्रतीत होता है कि निधियां उगाहने की उनकी क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

#### (ण) वास्तविक क्षति और कारणात्मक संबंध

89. संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र रूप से महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। संबद्ध वस्तु की कुल मांग में पाटत आयातों के बाजार हिस्से में भी पर्याप्त वृद्धि हुई। यह भी नोट किया जाता है कि पाटित आयात, बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत का अधोरदन कर रहे हैं। पुनः यह नोट किया जाता है कि पाटित आयातों का, कीमत अधोरदन, कीमत निग्रहण और कम कीमत पर बिक्री के रूप में अत्यधिक विपरीत कीमत प्रभाव हुआ है। इसके अतिरिक्त, संबद्ध देशों से पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया और महत्वपूर्ण है।

#### (त) अन्य जात तथ्य

90. वास्तविक क्षति, पाटित आयातों का घरेलू उद्योग की कीमतों पर, कम कीमत पर बिक्री एवं कीमत अधिलंघन एवं निग्रहण प्रभावों के रूप में कीमत एवं मात्रा प्रभाव की मौजूदगी की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी ने यह देखने के लिए कि क्या घरेलू उद्योग की क्षति में पाटित आयातों के अलावा किसी अन्य तथ्य ने भी योगदान दिया है पाटनरोधी करार और भारतीय नियमों के अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य संकेतक प्राचलों की जांच की जो निम्नलिखित है :

(क) उन आयातों की मात्रा एवं कीमत जिनकी बिक्री पाटित कीमतों पर नहीं की गई थी।

आयात आंकड़ों से यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु के 99 प्रतिशत आयात संबद्ध देश से हुए हैं। इसके अतिरिक्त अन्य देशों से आयात महत्वहीन हैं। इसलिए अन्य देशों से आयात घरेलू बाजार की कीमतों को प्रभावित नहीं कर सकते हैं।

(ख) मांग में संकुचन और खपत की पढ़ति में परिवर्तन प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की मांग में जांच अवधि के दौरान आधार अवधि की तुलना में लगभग 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई। खपत प्रणाली में परिवर्तन का कोई संकेत नहीं है।

(ग) तकनीकी में विकास :

प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने यह प्रदर्शित करने के लिए कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया कि तकनीक परिवर्तन से घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

(घ) व्यापार प्रतिबंधन प्रक्रियाएं और विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा :

प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात करने योग्य है। आवेदक संबद्ध वस्तु के प्रमुख उत्पादक हैं और उनका घरेलू उत्पादन एवं बिक्री में पर्याप्त हिस्सा है, इसके लिए अतिरिक्त घरेलू उत्पादकों के बीच, स्पष्टतः बाजार अर्थव्यवस्था होने के सिवाय कोई अन्य वोधगम्य प्रतिस्पर्धा नहीं है।

(इ.) घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन :

प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तु का निर्यात क्षति अवधि तथा जांच अवधि के दौरान नहीं किया गया। इसलिए निर्यातों के कारण घरेलू उद्योग के निष्पादन को प्रभावित किए जाने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

(ज) घरेलू उद्योग की उत्पादकता :

प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रति कर्मचारी उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में आधार वर्ष की तुलना में पांच अवधि में सुधार हुआ है। इसलिए उत्पादकता में संभावित गिरावट घरेलू उद्योग की क्षति पहुंचाने का एक कारक नहीं हो सकता है।

(झ) बेशी क्षमता :

कुछ हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग की संस्थापित क्षमता संबद्ध वस्तु के लिए मांग से कहीं अधिक बढ़ गई है और घरेलू उद्योग की कुछ क्षति इस बेशी क्षमता के कारण भी आई है। इस संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की संस्थापित क्षमता 412500 घन मीटर थी जबकि जांच के दौरान संबद्ध वस्तु की कुल मांग 380279 घनमीटर थी। इस मांग में अन्य घरेलू उत्पादकों का 58,125 घनमीटर हिस्सा भी शामिल था। यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग की बेशी क्षमता देश में कुल मांग की तुलना में अधिक थी।

(ज) हड्डाल के कारण उत्पादन घाटा :

प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग का एक संयंत्र जांच अवधि के दौरान हड्डाल के कारण लगभग \*\*\* दिनों तक बंद रहा, तद्वारा उसने घरेलू उद्योग के उत्पादन को प्रभावित किया।

(झ) घरेलू उत्पादन से प्रतिस्पर्धा :

प्राधिकारी नोट करते हैं कि मैसर्स लाफार्ज बोराल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड नामक एक अन्य घरेलू उत्पादक ने वर्ष 2008-09 के दौरान संबद्ध वस्तु का वाणिज्यिक उत्पादन और उसकी बिक्री करना शुरू कर दी थी। इसी वर्ष 2008-09 के दौरान घरेलू उद्योग ने भी संबद्ध वस्तु की अपनी उत्पादन क्षमता में वृद्धि की थी। प्राधिकारी पुनः नोट करते हैं कि यह भी एक कारण हो सकता है जिसने घरेलू उद्योग के निष्पादन को प्रभावित किया हो।

## (थ) क्षति का परिमाण एवं क्षति मार्जिन

क्षति मार्जिन

91. जांच अवधि के दौरान क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए संबद्ध देशों से निर्यातों के उत्तराई मूल्य की तुलना घरेलू उत्पाद द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की प्राधिकारी द्वारा यथानिर्धारित गैर क्षतिकारी कीमत से की गई। इस संदर्भ में प्राधिकारी ने मैसर्स सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सॉग्खला) कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड और मैसर्स सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सराबुरी) कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड तथा भारत में उनके संबद्ध उत्पादक/आयातक मैसर्स बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा किए गए इस प्रस्तुतिकरण की जांच की कि संबंधित आयातक की पुर्नबिक्री कीमत को उत्तराई कीमत के रूप में लिया जाना चाहिए और उसे प्राधिकारी द्वारा क्षति विश्लेषण एवं क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए आधार के रूप में माना जाना चाहिए। प्राधिकारी, मैसर्स बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रस्तुत सीमा शुल्क आयुक्त, चैन्नई के दिनांक \*\*\* के आदेश संख्या \*\*\* की एक प्रति से यह नोट करते हैं कि संबद्ध पक्षकारों ने सीमा शुल्क प्राधिकारी के समक्ष स्वयं यह नोट किया है कि उक्त भारतीय आयातक एवं संबद्ध देशों से उक्त उत्पादक/निर्यातक के लिए संबंध का कीमत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है और अतः बीजक मूल्य को स्वीकार किया जा सकता है। सीमा शुल्क प्राधिकारीयों ने उपर्युक्त आदेश में यह भी निष्कर्ष निकाला है कि तथापि भारतीय आयातक और आपूर्तिकर्ता एक दूसरे से संबंधित हैं तथापि उस संबंध का बीजक कीमत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी मैसर्स सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सॉग्खला) कंपनी लिमिटेड थाईलैंड और मैसर्स सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सराबुरी) कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, थाईलैंड तथा भारत में उनके संबद्ध भारतीय उत्पादक/आयातक मैसर्स बोराल जिप्सम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा किए गए इस प्रस्तुतिकरण को स्वीकार नहीं करते हैं कि क्षति विश्लेषण और क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए उनकी पुनर्बिक्री कीमत को आधार के रूप में निम्नवत माना जाए :

## अमरीकी डालर/घनमीटर

क्रम सं.	देश	उत्पादक/निर्यातक	एनआईपी	उत्तराई मूल्य	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन % रेज
1.	थाईलैंड	दि सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सॉग्खला) कंपनी लिमिटेड थाईलैंड	***	***	***	***	65-75
		दि सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सराबुरी) कंपनी लिमिटेड थाईलैंड	***	***	***		
		समूह के लिए भारित औसत	***	***	***		
		कोई अन्य उत्पादक	***	***	***	***	90-100
2.	यूएई	मैसर्स जिप्समना कंपनी (एलएससी) दुबई	***	***	***	***	40-50
		कोई अन्य उत्पादक	***	***	***	***	45-55

3.	चीन	सभी निर्यातक/उत्पादक	***	***	***	***	70-80
4.	इंडोनेशिया	सभी निर्यातक/उत्पादक	***	***	***	***	35-45

#### द. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन विवरण संबंधी टिप्पणियां

92. प्राधिकारी ने जांच के अनिवार्य तथ्यों का खुलासा 6 सितम्बर, 2012 और 4 जनवरी, 2013 के विवरण के तहत किया। प्रकटन पश्चात घरेलू उद्योग और विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त टिप्पणियां जिन्हें इस जांच के लिए उपयुक्त माना गया संक्षेप में निम्नलिखित हैं :-

#### घरेलू उद्योग द्वारा की गई प्रकटन पश्चात टिप्पणी -

- (i) पाटनरोधी शुल्क नियमावली के अनुबंध-1 के पैराग्राफ 3(ii) में दी गई शर्तों के अनुसार लागत समायोजन की अनुमति केवल तभी दी जाती है जब स्टार्ट-अप कार्य जांच की अवधि के दौरान हुआ हो और उसने उक्त अवधि की लागत को प्रभावित किया हो। यूएई से प्रत्युत्तरदाता निर्यातक की शुरुआत वर्ष 2007 में हुई थी और इसने वाणिज्यिक उत्पादन जून 2009 में शुरू किया था, जैसा कि संबंधित निर्यातक के प्रश्नावली प्रत्युत्तर से स्पष्ट होता है। चूंकि यह एक स्वीकृत तथ्य है कि स्टार्ट-अप कार्य जांच अवधि के दौरान घटित नहीं होता है, इसलिए स्टार्ट-अप कार्य के कारण समायोजन करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।
- (ii) यूएई के लिए घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य को अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए क्योंकि प्राकृतिक गैस की कीमतों में सरकारी हस्तक्षेप के कारण विशिष्ट बाजार स्थिति उत्पन्न की जा रही है।
- (iii) संबद्ध देशों से असहयोगकारी निर्यातकों की निर्यात कीमत, भाड़ा एवं बीमा का समायोजन करने के पश्चात डीजीसीआईएस आंकड़ों से उपलब्ध न्यूनतम सीआईएफ कीमत पर आधारित होनी चाहिए।
- (iv) असहयोगकारी निर्यातकों के लिए परिकलित/किए गए सामान्य मूल्य के तरीके और अंतिम आंकड़ों का खुलासा किया जाना चाहिए।
- (v) अपवर्जित उत्पादों की तकनीकी विनिर्देशनों का अंतिम जांच अधिसूचना में उल्लेख किया जाना चाहिए।

#### हितबद्ध पक्षकारों द्वारा की गई प्रकटन-पश्चात टिप्पणियां

- (i) घरेलू उद्योग को क्षति का प्रमुख कारण कथित आयात नहीं है बल्कि (i) घरेलू उत्पादकों के बीच आंतरिक प्रतिस्पर्धा (ii) नई उत्पादन क्षमता से सृजित उच्च निर्धारित लागत की घटना जिसे पूरी तरह से अधिकतम नहीं बनाया जा सका (iii) स्टार्ट-अप कार्य (iv) लागत में उतार-घदाव और (v) देश में सृजित क्षमता का उपयोग करने के लिए मांग में कमी, हैं। अतः कारणात्मक संबंध नहीं है।
- (ii) याचिकाकर्ता ने यूएई में दोहरी कीमत निर्धारण नीति के संबंध में कोई साक्ष्य प्रदान नहीं किया है।
- (iii) पाटनरोधी शुल्क भारतीय रूपये में अभिव्यक्त बैंचमार्क रूप में होना चाहिए।

- (iv) चूंकि विचाराधीन उत्पाद का दायरा 'सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड' है इसलिए, 'सीलिंग टाइल्स' जिन्हें माडयूलर सीलिंग में प्रयोग किया जाता है, को जांच के दायरे से विशेष रूप से हटा दिया जाना चाहिए।
- (v) भारत में आयात कीमतों का घरेलू उद्योग की कीमतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। भारत में संबद्ध आयातक की पुनर्बिंकी कीमत का प्रभाव ही घरेलू उद्योग पर पड़ता है।
- (vi) यह जांच शुरू करना उचित नहीं है क्योंकि जांच प्रारंभ करने वाले व्यक्ति को जांच शुरू करने की तारीख को यह क्षेत्राधिकार प्राप्त ही नहीं था।
- (vii) घरेलू उद्योग को घरेलू प्रतिस्पर्धा के कारण हुई क्षति को अलग कर दिया जाना चाहिए।
- (viii) घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी लागत का, अप्रामाणिक क्षमता संवर्धन और हड्डियाल के कारण अतिरिक्त लागत को अपवर्जित करके, समुचित रूप से समायोजन किया जाना चाहिए।
- (ix) प्राधिकारी ने नोट किया है कि लगाई गई मूँजी पर अर्जन का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत किया गया है परंतु इसमें उस दर का उल्लेख नहीं है जिस पर इसका विचार किया गया।
- (x) प्रतिस्पर्धा अधिनियम की धारा 21 के अनुसार कोई जांच सीसीआई को भेजी जा सकती है यदि हितबद्ध पक्षकार यह आपत्ति उठाता है कि लिया जाने वाला निर्णय प्रतिस्पर्धा अधिनियम के उपबंधों के विपरीत होगा।
- (xi) थाईलैंड के दोनों नियातकों दि सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सराबुरी) कंपनी लिमिटेड, और दि सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सांगखला) कंपनी लिमिटेड ने एक कीमत वचनबद्धता प्रस्तुत की। हम प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे हमें उस कीमत और प्रपत्र, यदि कोई, का उल्लेख करें जिस पर वह वचनबद्धता दी गई थी।
- (xii) प्राधिकारी को डीजीसीआई एंड एस आंकड़ों के अ-गोपनीय पाठ का प्रकटन करना चाहिए।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

93. प्रकटन पश्चात, घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पक्षकरों ने अधिकांशतः अपनी पिछली प्रस्तुतिकरणों को ही दोहराया, जिसका इस अंतिम निष्कर्ष में निराकरण कर दिया गया है।

94. हितबद्ध पक्षकारों ने प्रस्तुत किया है कि सीलिंग टाइल्स विचाराधीन उत्पाद से अभिन्न हैं और वे वर्तमान जांच के दायरे से परे हैं। घरेलू उद्योग ने अपने प्रस्तुतिकरण में यह भी स्वीकार किया है कि सीलिंग टाइल्स विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर हैं और इस कारण वे वर्तमान जांच के अंतर्गत नहीं आते हैं। इसको देखते हुए, प्राधिकारी ने सीलिंग टाइल्स को विचाराधीन उत्पाद के दायरे और पाटनरोधी उपायों के दायरे से हटा दिया है।

95. स्टार्ट-अप प्रचालन लागत के कारण समायोजन के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के संगत प्रावधानों के संबंध में घरेलू उद्योग के प्रकटन पश्चात दावे के बारे में प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह तर्क वस्तुतः सही नहीं है।

96. जहां तक अन्य हितबद्ध पक्षकारों के प्रकटन पश्चात इस प्रस्तुतिकरण का संबंध है, कि पाटनरोधी शुल्क भारतीय रूपए में अभिव्यक्त बैचमार्क फार्म में होना चाहिए, प्राधिकारी ने सभी संगत तथ्यों पर विचार किया और निम्नलिखित के रूप में निर्धारित शुल्क की संस्तुति की।

97. दि सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सराबुरी) कंपनी लिमिटेड और दि सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सांगखला) कंपनी लिमिटेड द्वारा प्रस्तुत कीमत वचनबद्धता के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि कीमत वचनबद्धता की मानिटरिंग करने में व्यावहारिक दिक्कतों के महेनज़र, प्राधिकारी इस प्रस्ताव को स्वीकार करना उचित नहीं समझते हैं।

98. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उल्लिखित प्रतिस्पर्धा अधिनियम के उपबंधों के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच पाटनरोधी नियमावली में दी गई शर्तों के अनुरूप आयोजित की गई हैं।

#### ध. निष्कर्ष

99. प्राधिकारी के समक्ष उठाए गए मुद्दों और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा की गई प्रस्तुतियों और जांच की अवधि के दौरान प्राधिकारी को उपलब्ध कराए गए तथ्यों की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :

- (i) संबद्ध वस्तु का भारत की बाजार में संबद्ध देशों से इसके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर प्रवेश हुआ, जिसके परिणामस्वरूप संबद्ध वस्तु का पाटन हुआ;
- (ii) प्रत्येक संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु का पाटन मार्जिन न्यूनतम स्तर से ऊपर हुआ;
- (iii) घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तु के लिए सारवान क्षति हुई; और
- (iv) संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति हुई।

#### न. भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

100. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने का भारत में उत्पाद के कीमत स्तर पर प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी शुल्क लगाने से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी शुल्क लगाने से पाटन प्रक्रिया द्वारा अर्जित अनुचित लाभ दूर हो जाएगा, घरेलू उद्योग के पतन से बचाएगा और उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तु की व्यापक पसंद की उपलब्धता कायम रखने में सहायता करेगा। सामान्यतः पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार प्रक्रियाओं द्वारा घरेलू उद्योग को की जा रही क्षति का उपशमन करना है ताकि भारतीय बाजार में ऐसी मुक्त और उचित प्रतिस्पर्धा पुनः स्थापित की जा सके जो देश के आम हित में हो। इसलिए पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं करेगा। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण संबद्ध देश से आयात को किसी भी तरह से अबरुद्ध नहीं करेगा और इसलिए इसका उपभोक्ता को उत्पाद की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उपभोक्ता अब भी आपूर्ति के दो या दो से अधिक स्रोत बनाए रख सकते हैं।

#### प. सिफारिश

101. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह जांच शुरू की गई थी और इसकी सूचना सभी जात हितबद्ध पक्षकारों को दे दी गई थी। निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति तथा कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सूचना प्रदान करने के लिए पर्याप्त अवसर दिया गया था। पाटनरोधी नियमावली में दी गई शर्तों के अनुरूप पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंधों की जांच शुरू करने और आयोजित करने तथा इन पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को कारित पाटन मार्जिन और वास्तविक क्षति का

सकारात्मक निर्धारण करने के पश्चात प्राधिकारी का विचार है कि पाटन एवं क्षति प्रतितुल्न करने के लिए निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करना अपेक्षित है।

102. प्राधिकारी द्वारा न्यूनतम शुल्क नियम का अनुपालन किए जाने के संबंध में प्राधिकारी पाटन माजिन और क्षति माजिन के न्यूनतर के बराबर निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उयोग की क्षति दूर की जा सके। तदनुसार, संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर, अधोलिखित तालिका के कालम 8 में उल्लिखित राशि के बराबर पाटनरोधी शुल्क केंद्र सरकार द्वारा अधिरोपित करने की सिफारिश की जाती है।

### शुल्क तालिका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
क्रम सं.	टैरिफ मद का उप-शीर्षक	वस्तु का विवरण*	उत्तम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यात	शुल्क राशि	ईकाई	मुद्रा
1	68091100, 68091900	साटा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड	चीन जन गण	चीन जन गण	कोई	कोई	32.85	घनमीटर (एम <sup>3</sup> )	अमरीकी डालर
2	वही	वही	चीन जन गण	कोई	कोई	कोई	32.85	वही	अमरीकी डालर
3	वही	वही	कोई	चीन जन गण	कोई	कोई	32.85	वही	अमरीकी डालर
4	वही	वही	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	कोई	कोई	24.11	वही	अमरीकी डालर
5	वही	वही	इंडोनेशिया	कोई	कोई	कोई	24.11	वही	अमरीकी डालर
6	वही	वही	कोई	इंडोनेशिया	कोई	कोई	24.11	वही	अमरीकी डालर
7	वही	वही	थाईलैंड	थाईलैंड	सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सराबुरी) कंपनी लिमिटेड	सियाम जिप्सम इंडस्ट्री (सराबुरी) कंपनी लिमिटेड	54.46	वही	अमरीकी डालर
8	वही	वही	थाईलैंड	थाईलैंड	सियाम जिप्सम इंडस्ट्री	सियाम जिप्सम	54.46	वही	अमरीकी डालर

					(सांग्खला) कंपनी लिमिटेड	इंडस्ट्री (सांग्खला) कंपनी लिमिटेड			
9	वही	वही	थाईलैंड	थाईलैंड	उपर्युक्त 7 और 8 के अलावा कोई अन्य संयोजन	उपर्युक्त 7 और 8 के अलावा कोई अन्य संयोजन	73.80	वही	अमरीकी डालर
10	वही	वही	थाईलैंड	कोई	कोई	कोई	73.80	वही	अमरीकी डालर
11	वही	वही	कोई	थाईलैंड	कोई	कोई	73.80	वही	अमरीकी डालर
12	वही	वही	यूएई	यूएई	मैसर्स जिप्समना कंपनी (एल एल सी) दुबई	मैसर्स जिप्समना कंपनी (एल एल सी) दुबई	12.30	वही	अमरीकी डालर
13	वही	वही	यूएई	यूएई	उपर्युक्त 12 के अलावा कोई अन्यके अलावा संयोजन	उपर्युक्त 12 के अलावा कोई अन्य संयोजन	20.15	वही	अमरीकी डालर
14	वही	वही	यूएई	कोई	कोई	कोई	20.15	वही	अमरीकी डालर
15	वही	वही	कोई	यूएई	कोई	कोई	20.15	वही	अमरीकी डालर

\*चूंकि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद सभी मोटाई एवं आयाम का सादा जिप्सम प्लास्टर बोर्ड है, इसलिए, उपरोक्त शुल्क तालिका में यथा संस्तुत पाटनरोधी शुल्क के दायरे से निम्नलिखित उत्पादों का अपवर्जन किया जाता है :

- 5 प्रतिशत सहित और तक की जल अवशोषण क्षमता युक्त जिप्सम बोर्ड (नमी अवरोधन बोर्ड)
- जिप्सम बोर्ड जिनका मोटाई के अनुसार प्रति मिमी. न्यूनतम ब्रेकिंग लोड अनुलम्ब दिशा में 24 न्यूट्रान्स और अनुदैर्घ्य दिशा में 50 न्यूट्रान्स हो (इम्पैक्ट अवरोधन बोर्ड या अग्नि अवरोधन बोर्ड)
- फायर बोर्ड
- फायर हीट बोर्ड्स
- इम्पैक्ट बोर्ड्स
- नमी अवरोध युक्त जिप्सम सीलिंग बोर्ड्स
- ईसीएचओ बोर्ड

- ताप बोर्ड
- मोल्ड प्रतिरोधक बोर्ड या वैदर बोर्ड
- थरमल बोर्ड
- श्वेत फिल्म में सीलबद्ध एल्युमिनियम के किनारों युक्त जिप्सम सीलिंग बोर्ड
- सीलिंग टाइल्स

103. उपर्युक्त के अध्यधीन प्राधिकारी दिनांक 19 मार्च, 2012 की अधिसूचना संख्या 14/45/2010-डीजीएडी के तहत जारी प्रारंभिक जांच परिणाम में की गई सिफारिशों की संपष्टि करते हैं।

104. इस उद्देश्य के लिए आयातों का उत्तराइ मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क प्राधिकारी द्वारा यथानिर्धारित कर निर्धार्य मूल्य और सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत शुल्कों को छोड़कर अन्य सभी सीमाशुल्क रहेगा।

105. इस जांच परिमाण को केंद्र सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के पश्चात इसके विरुद्ध अपील, वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ नियमावली, 1995 के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद कर और सेवा कर अपीलीय अधिकरण (सीईएसटीएटी) के समक्ष की जाएगी।

जे. एस. दीपक, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**  
**(Department of Commerce)**  
**(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)**  
**NOTIFICATION**  
**New Delhi, the 15th January, 2013**

**Final Findings**

**Subject :** Anti-dumping investigation concerning imports of Plain Gypsum Plaster Boards, originating in or exported from China PR, Indonesia, Thailand, and UAE.

**No. 14/45/2010-DGAD:-** Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and thereafter (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

**A. Background of the case:**

1. The background of the case is as follows:
  - i. Whereas M/s. Saint-Gobain Gyproc India Ltd, Mumbai (hereinafter referred to as the domestic industry) filed an application before the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) for initiation of Anti-dumping duty investigation concerning imports of Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions (hereinafter also referred to as the subject goods), originating in or exported from China PR, Indonesia, Thailand and UAE (hereinafter referred to as the subject countries) and requested for levy of anti-dumping duties on the subject goods.
  - ii. Whereas, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 21st July 2011, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the anti-dumping duty, in accordance with the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and thereafter (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Rules) thereof.
  - iii. Whereas, the Designated Authority issued the Preliminary Findings vide Notification No. 14/45/2010-DGAD dated, 19<sup>th</sup> March 2012 and recommended imposition of provisional

anti-dumping duties on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries.

- iv. Whereas, the Designated Authority conducted an oral hearing on 10th April, 2012 followed by another oral hearing on 26th November, 2012, due to the change in the incumbency in the office of the Designated Authority and written submissions and rejoinder submissions were made by the interested parties.
- v. Whereas, the Designated Authority had earlier issued a disclosure statement on 6<sup>th</sup> September, 2012 disclosing the essential facts of the investigation to the interested parties. The present disclosure statement is being issued due to the change in the incumbency in the office of the Designated Authority and following the written submissions and rejoinder submissions.

## **B. PROCEDURE**

2. Procedure described below has been followed with regard to the subject investigation:
  - i. The Authority notified the embassies of the subject countries in India about the receipt of the application for anti-dumping investigation and imposition of anti-dumping measures on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, in accordance with sub-Rule 5(5) of the Anti-dumping Rules supra, before proceeding to initiate the investigation.
  - ii. The Authority issued a public notice dated 21<sup>st</sup> July 2011, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries.
  - iii. The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters (whose details were made available by the Applicant) and industry associations and gave them opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2) of the Anti-dumping Rules.
  - iv. The Authority also forwarded a copy of the public notice to all the known importers of the subject goods in India (whose details were made available by the Applicant) and gave them opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter.
  - v. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application of the domestic industry to the known exporters and the embassies of the subject countries in India in accordance with Rule 6(3) of the Anti-dumping Rules. A copy of the non-confidential version of the application of the domestic industry was also provided to other interested parties, wherever requested.

vi. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters in subject countries in accordance with Rule 6(4) of the Anti-dumping Rules:

S.N.	Name of Producer/ Exporter
1	Gypsemna Company (L.L.C) PO Box 74682, Plot No. 51 MR2 Industrial City of Abu Dhabi (ICAD-II) Mussafah, Abu Dhabi, United Arab Emirates.
2	The Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co., Ltd. No.9, Pakin Bldg, 5th Floor, Ratchadapisek Road, Dindang, Bangkok -10400, Thailand
3	Pt. Siam Indo Gypsum Industry Jl. Inspeksi, Kalimalang Km 2 kp Cikedokan RT/RW. 001/01 Cibitung, Bekasi 17520, Indonesia
4	Pt Petrojaya Boral Plasterboard Graha Mobisel building 4th Floor, Mampang, Prapatanraya No 139 Jakarta, Selatan 12790 Indonesia
5	Shandong Baier Bbuilding Materials Ziqiu Pingri Linyi Shandong Linyi City , China PR
6	Linyi HuameiGypsum Building Materials Co.Ltd Luozhuang District, Linyi, Qingdao, China PR
7	CNBM International Corporation Floor 17th No.4 Building Zhuyu International Commercial Center No.9, Shouti South Road Haidian District, China PR

vii. In response to the initiation notification, the following producers/exporters from the subject countries filed exporters questionnaire response in the prescribed format:

- (a) M/s Gypsemna Co. L.L.C., Abu Dhabi, UAE.
- (b) M/s Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co. Ltd. Bangkok, Thailand.
- (c) M/s Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd. Bangkok, Thailand.

viii. After the initiation of the investigation, another company namely M/s Knauf LLC, Dubai, UAE had submitted only a letter informing the Authority that they have not exported the subject goods during the POI. Subsequent to the issue of the Preliminary Finding by the Authority, M/s Knauf also submitted exporter's questionnaire response. But, since the company did not export the subject goods to India during the POI, the Authority has not accepted their belated response.

ix. Importers' Questionnaires were sent by the Authority to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Anti-dumping Rules:

S.No.	Name of Importers/Exporters
1	Sastha Senior Building Product, 34 Spurtank Road, Chetpet, Chennai 600 031
2	Lafarge Boral Gypsum India Private Limited, A-10 Green Park, New Delhi-110016
3	Lafarge Boral Gypsum India Pvt Ltd, Door No.34 Spurtank Road , Chetpet, Chennai 600 031
4	Vikash Trading Company, No.10/12nd Floorold, Bangalore Road, Hosur 635 109, Tamil Nadu
5	Total Solutions Building Material Co,Head office 318,3rd Cross, Baba Lane,Dharga Mohalla, Old Madras Road, Bangalore-16

x. Importer's questionnaire response in the prescribed format were received from the following importers/users of the subject goods In India:

- (a) M/s Vikas Trading Company, Bangalore.
- (b) M/s Aramstrong World Industries, Mumbai.
- (c) M/s Lafarge Boral Gypsum India, Gurgaon, (Renamed as M/s Boral Gypsum India Pvt. Ltd).

xi. Submissions were also made by M/s Total Solution Building Materials Co Ltd, Bangalore and M/s India Gypsum, Cochin.

xii. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.

xiii. Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry.

xiv. Investigation was carried out for the period starting from 1<sup>st</sup>January 2010 to 31<sup>st</sup> December 2010 (POI). The examination of trends, in the context of injury analysis covered the period from April 2007-March 2008, April 2008-March 2009 and April 2009-March 2010 and the POI.

xv. The Designated Authority issued the Preliminary Findings vide Notification No. 14/45/2010-DGAD dated, 19th March 2012 and recommended imposition of provisional anti-dumping duties on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries.

xvi. In accordance with Rule 6(6) of the Anti-dumping Rules, the Authority provided opportunity to all the known interested parties to present their views orally in the oral hearing held on 10<sup>th</sup> April, 2012 and 26<sup>th</sup> November, 2012. The parties, which presented their views in the oral hearings, were requested to file written submissions and rejoinders of the views expressed by them orally.

xvii. The submissions made by the interested parties during the course of the investigation, including comments received post disclosure, considered relevant by the Authority, have been addressed in this final finding.

xviii. Verification to the extent deemed necessary was carried out in respect of the information & data submitted by the interested parties.

xix. In accordance with Rule 16 of Rules Supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to the known interested parties vide disclosure statement dated 6th September, 2012 and 4<sup>th</sup> January, 2013 and comments received thereon, considered relevant by the Authority, have been addressed in this final finding.

xx. \*\*\* in this Final Finding represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

xxi. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority considered such interested parties as non-cooperative and recorded this final finding on the basis of the facts available.

xxii. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claims. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis and the same were kept in the public file maintained by the Authority as per the Rules.

xxiii. The competent Authority has extended the time period for completing the subject investigation up to 20<sup>th</sup> January, 2013 vide their letter No. 354/70/2012-TRU dated 3<sup>rd</sup> October, 2012.

xxiv. The exchange rate adopted by the Authority for the subject investigation is 1 US \$ = Rs 46.44.

#### **Litigation before the High Court of Madras**

3. A Writ Petition was filed by M/s Boral gypsum India Pvt. Ltd (formerly known as Lafarge Boral Gypsum Pvt. Ltd) before the High Court of Madras vide No. 10348 of 2012. The

Hon'ble Court vide their order dated 2.7.2012 disposed the writ petition and directed *inter alia* as under:

*"7. As the petitioner has sought to consider their objections raised at the time of passing of the Preliminary Findings without going in to the merits of the case, the first respondent is directed to consider the objections in paragraph 46(vii) and (ix) at the time of passing of the Final Finding and pass orders in accordance with law as per provisions of the Act, after giving opportunity to the petitioner to substantiate their case.*

*8. Accordingly, the writ petition is disposed of. No. costs. Consequently connected miscellaneous petitions are closed."*

4. The relevant paragraphs of the preliminary findings issued by the Authority, on which the Hon'ble High Court has issued the above stated orders are as under:

*"vii. The imports are made by a related company in India which incurs all the selling expenses like advertisement expenses, sales promotion expenses, warehousing charges etc. to sell the product. Hence, in order to arrive at a fair comparison, what is to be compared is the net selling price of the trading company in India with the selling price of the petitioner."*

*"ix. During the period of 2008-09 and 2009-10, the market share of imports decreased. Despite this, market share of the domestic industry declined. At the same time, the market share of the other Indian producer, Lafarge Boral Gypsum India Pvt. Ltd. increased in the same period. This shows that the loss of market share to the Domestic industry is on account of internal domestic competition i.e., Lafarge Boral Gypsum Indian Pvt. Limited and not because of alleged dumping by the subject countries."*

5. In compliance with the orders of the Hon'ble High Court, an opportunity was allowed to the petitioners before the High Court and the other interested parties to make their submissions. The submissions made by the petitioners before the High Court and other interested parties are summarized as below:

#### **5.1 Submissions made by M/s Gypsum Boral India Pvt. Ltd (petitioners before the High Court of Madras)**

- a. Anti-dumping Duty is intended to remedy any injury suffered by the domestic producer in India due to the sale of imported dumped goods in the domestic market at prices less than the prices of the domestic producers. As a principle, India has adopted the policy of imposing Anti-dumping Duty on the lower of dumping margin or injury margin.

b. Annexure III to the AD Rules prescribes the "Principles for determination of non-injurious price", i.e. fair selling (notional) price at which the domestic industry would not suffer any injury. The NIP includes administrative expenses and selling expenses. This Non-injurious price of the domestic producer then has to be compared with the price at which imported products are actually competing with the domestically manufactured products. A comparison amongst two factors always has to be done at a same level, which is referred to in trade parlance as 'same level of trade'.

c. The Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co Limited and The Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co Limited export the subject goods only to their related importer in India, namely, Boral Gypsum India Pvt. Ltd. who in turn re-sells them in India after incurring selling and administrative expenses in India. These expenses are, inter-alia, for marketing the product and therefore are incurred before the goods are ready to be sold to the end customers. Thus, the price at which the end customer in India can get the imported goods is the price at which Boral Gypsum India Pvt. Ltd. re-sells these imported goods in India.

d. The injury margin based on the difference between the Non-Injurious Price of the petitioner and the re-sale price of Boral Gypsum India Pvt. Ltd. would be sufficient to remove the injury, if any, suffered by the domestic producers because the imported goods compete with the domestically manufactured goods only at the level when they are resold in India.

e. In this regard the following findings of the European Union are relevant:

(i) Council Regulation (EC) No 598/2009 of 7 July 2009 imposing a definitive countervailing duty and collecting definitively the provisional duty imposed on imports of biodiesel originating in the United States of America

*"(116) Certain exporting producers claimed that the prices used for the injury margin calculations were the CIF Community frontier prices rather than the resale prices to the first unrelated customer. They claimed that these calculations have to be corrected in order to take into account the value and quantities of sales to the first unrelated customer.*

*(117) This claim was found to be relevant for two exporting producers and the injury calculations were corrected accordingly."*

(ii) Commission Regulation (EU) No 446/2011 of 10 May 2011 imposing a provisional anti-dumping duty on imports of certain fatty alcohols and their blends originating in India, Indonesia and Malaysia

*"(74) For the purposes of analysing price undercutting, the weighted average sales prices per product type of the Union industry to unrelated customers on the Union market, adjusted to an ex-works level, were compared to the corresponding weighted average prices of the imports from the countries concerned to the first independent customer on the Union market, established on a CIF basis, with appropriate adjustments for the existing customs duties and post-importation costs. This price comparison was made for transactions at the same level of trade, duly adjusted where necessary, and after deduction of rebates and discounts.*

(iii) Council Regulation (EC) No 261/2008 of 17 March 2008 imposing a definitive anti-dumping duty on imports of certain compressors originating in the People's Republic of China

*"(74) A comparison for comparable models of the product concerned was made between the sampled exporting producers' and the Community industry's average selling prices in the Community. To this end, Community industry's ex-works prices to unrelated customers, net of all rebates and taxes have been compared with the cif Community frontier prices of exporting producers of the PRC, duly adjusted for unloading and customs clearance costs. Given that Community industry normally sells its Community production directly to retailers, whereas the Chinese goods are sold to retailers via related or unrelated importers and/or traders, an adjustment to the import price was made where appropriate to ensure that the comparison is made at the same level of trade. ...."*

f. It is an admitted fact that Boral Gypsum India Pvt. Ltd. is a producer of plain gypsum plasterboards in India. The products of the petitioner and those produced and marketed by Boral Gypsum India Pvt Ltd compete in the same market. The details of selling price of domestically manufactured goods by Boral Gypsum India Private Limited and those imported from Thailand and resold by them in the Indian market are given below:

Selling price (Rs per meter cube)	2008-09	2009-10	POI
A. Domestically manufactured goods	***	***	***
B. Imported goods resold	***	***	***

C. Difference (A-B) (%)	10-15	15-20	5-10

g. From the above table, it can be seen that the selling price of Boral Gypsum India Pvt. Ltd. for domestically manufactured goods has been much lower than the selling price of imported goods throughout the injury investigation period. In such circumstances, where the selling price of domestically manufactured goods has been much lower than the selling price of imported goods, the injury if any, suffered by the domestic industry is only due to domestic competition and not due to imported products.

h. The claim is further proved by the fact that the profitability of the domestic producer deteriorated since the setting up of production unit by Boral Gypsum India Private Limited, despite fall in volume of imports into India. The following can be noted from the above table:

i. Boral Gypsum India Pvt. Ltd. started selling its own manufactured goods in India during the year 2008-09. The imports from the subject countries decreased during the year 2008-09 as compared to the year 2007-08. The sales of the petitioner also decreased during the year 2008-09 as compared to the year 2007-08. This clearly shows that there is no causal link between the imports from the subject countries and the volume injury suffered by the petitioner. The real cause of volume injury suffered by the petitioner is the domestic competition from Boral Gypsum India Pvt. Ltd.

j. The profit making situation of the petitioner during the year 2007-08 turned into a loss making situation during the year 2008-09. During the year 2008-09, the imports from subject countries recorded a decline as compared to the year 2007-08. On the other hand, the sale of goods produced by Boral Gypsum India Private Limited started off during the year 2008-09 with sales of 26,547 M3. The fact that the petitioner started incurring losses during the year 2008-09 when the imports from subject countries actually declined clearly shows that there is no causal link between the imports from subject countries and the injury suffered by the petitioner. The real cause of injury suffered by the petitioner is the domestic competition from Boral Gypsum India Pvt. Ltd.

k. The sales of Boral Gypsum India Private Limited further increased by ~~about 30%~~ during the year 2009-10 as compared to the year 2008-09 causing a ~~further volume~~ effect to the petitioner. The increase in sales of the other domestic producer ~~caused~~ the losses of the petitioner to inflate to 117 basis points during the year 2009-10 from a loss of 36 basis points during the year 2008-09.

l. The losses of the petitioner reduced during POI as compared to the year 2009-10 despite a 100% increase in imports from the subject countries during POI. This also

demonstrates that there is no causal link between the imports from the subject countries and the injury suffered by the petitioner.

### 5.2 Submissions made by the Domestic Industry.

- a. While calculating NIP post manufacturing expenses are not to be considered i.e. NIP should be at ex-factory level. Therefore, calculating the landed value taking into consideration the expenses being incurred by the related parties of the exporter and then comparing it with the NIP which is at ex-factory level will lead to absurd figure.
- b. The methodology suggested by the interested parties for determination of landed value and ultimately for injury margin is contrary to established and consistent practice of the Designated Authority. In addition to the above, it is submitted that the methodology suggested by the interested parties is not laid down under the Act or the Rules.
- c. The case law cited by the interested parties are misplaced and hence denied as principle emerging out of these cases laws of comparison at "same level of trade" will get violated in the context of the Indian anti-dumping rules and procedures if the Authority will follow the methodology prescribed by them.
- d. As regards injury to domestic industry, it is noted in the preliminary finding that the sales of the domestic applicant has declined to 95% in the POI as compared to the base year i.e. 2007-08 inspite of the fact that the adjusted demand has increased by 15% in the POI as compared to the base year. While the imports from the subject countries had almost doubled in the POI as compared to the base year. In view of the above, it is clear that the contention of the interested parties that domestic competition from Lafarge Boral Gypsum India Pvt. Ltd. is the real cause of injury to the domestic industry is wrong and hence denied.

### 5.3 Submissions made on behalf of M/s Gypsemna, UAE.

- a. The movement in selling prices and consequently profit/loss are not at all attributable to the dumped imports. Instead these are directly reflective of (i) the incidence of high fixed cost coming out of new production facility which could not be fully optimized; (ii) start up operations; (iii) movements in the costs; (iv) domestic competition; (v) lack of demand to utilize the capacities. It is natural that the plant could not run optimum in view of lack of demand of the product in the country and capacities far outstripping the demand in the Country. Further, Lafarge commenced commercial production in 2008-09 and started fiercely competing with domestic industry in this period. Thus, the domestic industry was not able to increase its price in proportion to the import price and suffered financial losses.

- b. Inability of the domestic industry to increase selling prices despite increase in the import price is clearly due to introduction of domestic competition in this period from a new manufacturer who has set up significant production capacities in the country and is now competing with the domestic industry on one hand and increase in the incidence of

fixed cost on the other hand from the setting up of another production facility by the domestic industry.

c. Positive price undercutting of similar region throughout the period and significant variation in profitability despite undercutting in similar region clearly establishes lack of causal link between undercutting and profitability.

d. Positive price underselling of similar region throughout the period clearly establishes that profitability of the domestic industry has not changed because of any suppressing/depressing effect of imports. This is clearly not a case where the extent of price underselling increased significantly over the period. The extent of price underselling was in the similar region throughout the period.

e. The mere fact that the importer in their case is a related party and the importer in our case is an unrelated party is entirely irrelevant for the present purpose, particularly in view of the reasons advanced by SIAM for consideration of resale price. Whether the buyer is related or unrelated, since the goods have moved between two customs authorities, both the seller and the buyer should have admittedly sold the goods at arm's length in either situation. It does not appear a case that the importer has claimed before Indian customs authorities that its import price is unreliable because of association with the exporter. If the import price at CIF level has been claimed at arm length before the Indian customs authorities, there is no difference between the situation of SIAM and our situation in so far as the issue raised by SIAM is concerned.

6. After the issue of the earlier disclosure statement by the Authority on 6<sup>th</sup> September, 2012, M/s Vikas Trading Corporation and M/s Boral Gypsum India (P) Ltd filed writ petitions vide No. 25304 of 2012 and 25669 of 2012 before the Hon'ble Madras High Court challenging the disclosure statement. The Hon'ble Court vide their orders dated 30<sup>th</sup> November, 2012 dismissed the writ petitions.

#### Examination by the Authority

7. The submissions made by the interested parties in the context of the above stated orders of the Hon'ble High Court of Madras and other submissions raised by the interested parties during the course of the investigation have been addressed by the Authority in the respective areas of this final finding.

#### C. Product Under Consideration and Like Article

##### Submissions made by the domestic industry

8. The following are the submissions made by the domestic industry with regard to the product under consideration (PUC) and like article during the course of the investigation:

i. The product under consideration is "Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions", excluding the following:

- a. Gypsum Boards having water absorption up to and including 5%. These Boards are generally referred to as "Moisture Resistant Boards" which have specific application in places where moisture resistance is desired. These moisture resistant properties are acquired by addition of certain water-repelling additives.
- b. Gypsum Boards having a minimum breaking load of 24 Newtons in the transverse direction and 50 Newtons in the longitudinal direction per millimetre of thickness of the Board. Boards that are typically designed for special application are characterized as "Impact Resistant Boards" or "Fire Resistant Boards".
- ii. Plain Gypsum Boards are also referred to as standard gypsum boards, regular gypsum boards or gypsum boards in common trade parlance across the world. The subject goods are used in interior construction in suspended ceiling and partition applications. The subject goods are classified under chapter heading 68091100. The subject goods are also being imported under tariff headings 68099900 and 68091900.
- iii. There is no known difference in the subject goods produced by the Indian industry and the subject goods exported from the subject countries. The subject goods produced by the Indian industry and imported from the subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.
- iv. The interested parties have not filed sufficient grounds justifying their claim of exclusion. It is a settled principle of law that the onus to prove exclusion from the Product under Consideration rests completely on the party who makes such claim. Further, the interested parties have referred to technical specifications, but the same have been kept confidential.
- v. Moisture resistant boards of water absorption upto and including 5% have not even been claimed as the "Product under Consideration". Therefore, the question of exclusion of Gypsum Ceiling Boards with Moisture Barrier', does not arise.
- vi. *Fire Boards and "shaft wall" boards* are already excluded from the purview of the "Product under Consideration". However, the Domestic Industry has no comments if the Fire boards meeting the specifications in the table below are excluded:

Properties	Specifications	Test Method	End Use
Weight	Minimum 9.8Kg/m <sup>2</sup> for 12.5mm & 11.7Kg/m <sup>2</sup> for 15mm	IS 2542	Areas requiring higher fire rating like server room, lift area etc .
Branding on Board	Type of board to be mentioned		Complies with EN 520 Type F

Strength of board (Longitudinal)	9.5mm- Min 400 N 12.5mm- Min 550 N 15mm- Min 650 N	IS 2542	
Fire Rating	Min 60 Minutes for 80mm thick system	BS 476 Part 6 Bs 476 Part 7 BS 476 part 20 & 22	

vii. The Heat board with the specification given by the interested parties should not be excluded as this board is a like article to the product under consideration and can commercially and technically substitute the same. Further there was no material import, if any, of this board into India during the POI from subject countries.

viii. *Fire Heat Board or* fire resistant boards are already excluded from the "Product under Consideration" provided they fulfill the technical criteria mentioned therein and, therefore, there is no question of making any specific exclusion. However, the Domestic Industry has no comments if the Fire boards meeting the specifications in the table below are excluded:

Properties	Specifications	Test Method	End Use
Weight	Minimum 9.8Kg/m <sup>2</sup> for 12.5mm & 11.7Kg/m <sup>2</sup> for 15mm	IS 2542	
Branding on Board	Type of board to be mentioned		Wall lining & ceiling system to give increased fire system with vapour control.Complies with EN 14190
Strength of board (Longitudinal)	9.5mm- Min 400 N	IS 2542	
	12.5mm- Min 550 N		
	15mm- Min 650 N		
Fire Rating	Min 60 Minutes for 80mm thick system	BS 476 Part 6 Bs 476 Part 7 BS 476 part 20 & 22	
Thermal conductivity	Min 0.24 W/Mk		

ix. The Echo boards having the below mentioned specification may be excluded from the PUC:

Properties	Specifications	Test Method	End Use
Weight	Minimum 9.8Kg/m <sup>2</sup> for 12.5mm & 11.7Kg/m <sup>2</sup> for 15mm	IS 2542	Wall lining & ceiling system to give increased fire system with vapour

Branding on Board	Type of board to be mentioned		control.Complies with EN 14190
Strength of board (Longitudinal)	9.5mm- Min 400 N	IS 2542	
	12.5mm- Min 550 N		
	15mm- Min 650 N		
Fire Rating	Min 60 Minutes for 80mm thick system		BS 476 Part 6 Bs 476 Part 7 BS 476 part 20 & 22
Thermal conductivity	Min 0.24 W/Mk		

x. Domestic Industry has no comments if the impact boards meeting the specifications in the table below are excluded:

Properties	Specifications	Test Method	End Use
Weight	Minimum 9.8Kg/m <sup>2</sup> for 12.5mm & 11.7Kg/m <sup>2</sup> for 15mm	IS 2542	Wall lining & ceiling system to give increased fire system with vapour control.Complies with EN 14190
Branding on Board	Type of board to be mentioned		
Strength of board (Longitudinal)	9.5mm- Min 400 N	IS 2542	
	12.5mm- Min 550 N		
	15mm- Min 650 N		
Fire Rating	Min 60 Minutes for 80mm thick system	BS 476 Part 6 Bs 476 Part 7 BS 476 part 20 & 22	
Thermal conductivity	Min 0.24 W/Mk		

xi. The Anti-mold or weather board mentioned by the respondents should not be excluded as this board is a “like article” to the product under consideration and can commercially and technically substitute the same. Further, the interested parties have not made out a cogent case as to how these boards are not technically and commercially substitutable with the Product under Consideration.

xii. The thermal board mentioned by the respondents should not be excluded as this board is a “like article” to the product under consideration and can commercially and technically substitute the same. Further, the interested parties have not made out a cogent case as to how

these boards are not technically and commercially substitutable with the Product under Consideration.

- xiii. As regards the submission for exclusion of 'Gypsum Ceiling Boards with Moisture Barrier', being imported by M/s Armstrong, from the purview of the PUC, Authority's attention is invited to the Product under Consideration defined by the applicant wherein moisture resistant boards of water absorption up to and including 5% have not even been claimed as the "Product under Consideration".
- xiv. It is a well-settled principle that anti-dumping is a special measure and the protection sought to be restricted only where dumping is taking place and injury is caused to the Domestic Industry. It is preposterous to suggest that the Domestic Industry has been selective in defining the Product under Consideration. As regards the products being manufactured by the Domestic Industry, full information has been provided to the Authority.
- xv. Imports of *moisture resistant boards and fire resistant boards* had been taking place at much higher prices which did not have any adverse effect on the domestic industry. Had the domestic industry included these products in the scope of the "Product under Consideration", the same interested parties would have raised the issue as to why those products which are not "Like Article" and which do not cause injury to the Domestic Industry have been included. Further, such specialty products constitute a very small portion of the domestic industry's turnover and also the total domestic market.
- xvi. The technical specifications of all the excluded boards should be mentioned in the findings.
- xvii. The onus to prove exclusion of certain boards rests solely upon the party who is making the claim for exclusion. Such claims have to be based on discernible evidence and should necessarily pass the test of technical and commercial substitutability.
- xviii. The Authority has incorrectly excluded several varieties of boards from the Product under Consideration on the basis that the Domestic Industry had not shown any documentary evidence of the production and supply of these goods. Gypsum ceiling board with aluminum edges sealed in white film, Heat board, Anti-mold board, Weather board and Thermal board are "like article" to the Product under Consideration as these boards can commercially and technically substitute the same.
- xix. The Domestic Industry has no objection if ceiling tiles (generally in size 600 mm x 600 mm) are excluded from the purview of the investigations as the same were never intended to be included in the product under consideration.
- xx. The claim made by interested parties that one of the key factors for deciding the substitutability of the product is the "end use". As the end use of the plain board and specialty boards are altogether different, these cannot be termed as like article. The claim made by interested parties for exclusion itself goes to strengthen the claim of domestic industry regarding like article.

**Submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties**

9. The following submissions have been made by the producers/exporters/importers/and other interested parties with regard to product under consideration and like article during the course of the investigation:

- i. Gypsum Boards are primarily of two types: Plain Boards and Technical Boards. The following varieties of technical gypsum plaster boards should be excluded from the scope of the PUC:
  - a) Fire Board: Gypsum Boards that meet the fire rating standard of more than 30 minutes on fire exposure as per BS 476: Part 20 and 22, including "shaft wall" boards. These Boards have specially formulated Core which gives superior fire resistance and higher strength. These boards are used for areas which require higher fire rating like Server Rooms, Lift areas etc.
  - (b) Heat Board: Gypsum Boards with polyester metalized foil firmly bonded on to the backside which gives at least 75% solar reflectance. These boards are used as partition around places where large amount of heat radiation is generated like generator rooms or in places which need insulation from a hot atmosphere around it, like top floor of a building.
  - (c) Fire Heat Board: Gypsum Boards that meet the Fire rating standards of more than 30 minutes on Fire Exposure as per BS 476: Part 20 and 22 (copies enclosed as Exhibit 1B and Exhibit 1C) and also have a polyester metalized foil firmly bonded on to the backside that gives at least 75% solar reflectance. These Boards have a specially formulated Core which gives superior Fire resistance and higher strength and also have a polyester metalized foil firmly bonded on to the backside to reduce the risk of condensation forming on the back of the board. These boards are used for protection around places that are exposed to risk of fire and also as wall lining.
  - (d) ECHO Board: Gypsum Boards that have square or circle perforations on their sides which provides them special sound absorption properties. These boards have a Noise Reduction Coefficient ('NRC') in the range of 0.65 to 0.80 as per IS 8225-1987 in reverberation room. These boards are used in Cinema Halls, Recording rooms and other places where reverberation effect of sound has to be minimized.
  - (e) Impact Board: Gypsum Boards with high density core giving them higher breaking load strength than a regular Standard Board. This is mainly used in high traffic zone areas like foot-steps, stair cases etc., where there is frequent heavy weights movement. These boards weigh 12.5 kilograms per meter square of 12.5 mm thickness (+/- 0.35 kg/m<sup>2</sup>) as against a standard board that weighs around 9 kilograms per meter square of 12 mm thickness. Thus the Impact Boards are 50 percent heavier than the standard boards and hence are used in places where heavy loads are to be stored or moved.

(f) Anti-mold Board or Weather Board: Gypsum Boards with certain special additives added to the core and a special paper liner added to the surfaces to give them enhanced protection against mold or fungus growth falling within Anti Mold standard (ASTM Standard) D 3273. These boards find special use in hospitals, warehouses and other areas which are exposed to moisture or abnormal environmental conditions.

(g) Thermal Board: Gypsum Boards with XPS Composite Panel at the back side using PVA Glue which offers additional thermal Insulation with the lower thickness of the Board.

ii. 'Gypsum Ceiling Boards with Moisture Barrier', being imported by M/s Armstrong, falls under the excluded category of the PUC and therefore should be specifically excluded from the scope of the present investigation. Similarly, 'Gypsum Ceiling Boards with Aluminium Edges Sealed in White Film' should also be excluded from the scope of the PUC.

iii. The definition of the product under consideration in the present case is highly selective and abusive of anti dumping law. Petitioner has very selectively considered scope of the product under consideration and excluded those product types which the petitioner is not producing in India and which are being imported by the petitioner from its affiliated plants overseas.

iv. The petitioner has specifically excluded 'moisture resistant boards' and 'fire resistant boards'; as petitioner itself is importing these excluded category from its own subsidiary/sister concern, in Thailand.

v. The scope of the investigation is only 'plain gypsum plaster board' and any board other than 'plain boards' should be excluded from the scope of the investigation.

vi. Petitioner has very selectively considered scope of the product under consideration and excluded those product types which the petitioner is not producing in India and which are being imported by the petitioner from its affiliated plants overseas that make them earn high profits. The petitioner has deliberately restricted the scope of the product under consideration to establish its standing.

vii. Exclusion of specialty board from the scope of product under consideration has enabled Saint Gobain to establish its "standing" as a domestic industry despite significant imports by the company. Since specialty boards are sold along with plain boards as a basket product, in any case, the consumers at large would not import specialty board from different suppliers in subject countries and thus, domestic industry, in any case, is protected in this specialty boards.

viii. It is a well settled principle that only dislike articles can be excluded from the scope of the product under consideration. If the excluded and included products are like/one article, the same cannot be excluded. There is nothing in the petition which establishes

how the excluded products are dislike articles and how all included products are like/one article. The petitioner needs to justify the reasons for selectively proceeding with the scope of the product under consideration. The cost difference between plain and specialty board is 5-10%. Such being the case, the like article should be considered as specialty boards.

- ix. If circumvention is feared, it is the petitioner who should provide technical specifications since they have restricted the product under consideration as Plain Gypsum Board. All other products should be considered as excluded product from the scope of product under consideration.
- x. Petitioner has selectively considered scope of the product under consideration and excluded those product types which the petitioner is not producing in India and which are being imported by the petitioner from its affiliated plants overseas.
- xi. Only dislike products can be excluded from the scope of the product under consideration. If the excluded and included products are like/one article, the same cannot be excluded. The cost difference between plain and specialty board is 5-10%. Such being the case, the like article should be considered as specialty boards.
- xii. Ceiling tiles are different products from Plain Gypsum Plaster Boards and should be excluded from the scope of investigation.

#### Examination by the Authority

10. The product under consideration in the present investigation, as defined by the Authority in the initiation notification, is "Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions", excluding the following:-
  - (i) Gypsum Boards having water absorption up to and including 5%. These Boards are generally referred to as "Moisture Resistant Boards" which have specific application in places where moisture resistance is desired. These moisture resistant properties are acquired by addition of certain water-repelling additives.
  - (ii) Gypsum Boards having a minimum breaking load of 24 Newtons in the transverse direction and 50 Newtons in the longitudinal direction per millimetre of thickness of the Board. Boards that are typically designed for special application are characterized as "Impact Resistant Boards" or "Fire Resistant Boards".
11. Plain Gypsum Boards are also referred to as standard gypsum boards, regular gypsum boards or gypsum boards in common trade parlance across the world. The subject goods are used in interior construction in suspended ceiling and partition applications.
12. Plain Gypsum Boards are classified under chapter heading 68091100 as given below:

Tariff Item	Description of Goods
68	Articles of stone, plaster, cement, asbestos, mica or similar materials; ceramic products; glass and glassware
6809	Articles of plaster or of compositions based on plaster- Boards, sheets, panels, tiles and similar articles, not ornamented.
68091100	Faced or reinforced with paper or paperboard only

13. The domestic industry submitted that the subject goods are also being imported under other tariff headings 68099900 and 68091900, apart from 68091100. But, the Authority notes that as per the DGCI&S data, the subject goods are found to be imported only under the tariff sub-heads 68091100 and 68091900. However, customs classification is indicative only and is in no way binding upon the scope of the present investigation.

14. The submissions concerning the product under consideration and like article, made by the interested parties during the course of the subject investigation and considered relevant by the Authority are addressed hereunder:

- i. The Authority initiated the subject investigation by defining the product under consideration as Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions, excluding the Gypsum Boards having water absorption up to and including 5% and the Gypsum Boards having a minimum breaking load of 24 Newtons in the transverse direction and 50 Newtons in the longitudinal direction per millimetre of thickness of the Board.
- ii. The Authority notes that the Plain Gypsum Plaster Boards are also referred to as Standard Gypsum Boards, Regular Gypsum Boards or simply Gypsum Boards in common trade parlance across the world. The subject goods are used in interior construction in suspended ceiling and partition applications.
- iii. The Authority notes that the Gypsum Plaster Boards that are typically designed for special applications to provide moisture resistance or fire resistance or impact resistance are characterized as "Moisture Resistant Boards", "Impact Resistant Boards" or "Fire Resistant Boards", respectively and are as such beyond the scope of the product under consideration in the present investigation.
- iv. The Authority further notes that broadly there are two types of Gypsum Plaster Boards viz. Plain Gypsum Plaster Boards and Specialized or Technical or Value Added Gypsum Plaster Boards. The production process of the various types of the Gypsum Plaster Boards is more or less same. However, specific inputs/additives are added to obtain desired properties in the end product.

v. Post initiation, the interested parties claimed exclusion of Fire Boards, Heat Boards, Fire Heat Boards, ECHO Boards, Impact Boards, Anti-mold Boards or Weather Boards, Thermal Boards, Gypsum Ceiling Boards with Moister Barrier and Gypsum Ceiling Boards with Aluminum Edges Sealed in White Film', from the scope of the product under consideration. The matter is examined as below:

#### **Fire Boards**

- ❖ The interested parties submitted that "Fire Boards" are gypsum plaster boards that meet the fire rating standard of more than 30 minutes on fire exposure as these boards have specially formulated core which gives superior fire resistance and higher strength to the product and requested for their exclusion from the purview of the PUC. The domestic industry also agreed for the exclusion of this type of boards subject to the specifications provided by them. The Authority notes that the product under consideration in the subject investigation is Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions and Fire Boards or "Fire Resistant Boards" are as such excluded from the purview of the product under consideration".

#### **Fire Heat Boards**

- ❖ The interested parties have submitted that "Fire Heat Boards" are gypsum plaster boards that meet the fire rating standards of more than 30 minutes on Fire Exposure as per BS 476: Part 20 and 22 (copies enclosed as Exhibit 1B and Exhibit 1C) and also have a polyester metalized foil firmly bonded on to the backside that gives at least 75% solar reflectance. These boards are used for protection around places that are exposed to risk of fire and also as wall lining. The domestic industry submitted that *Fire Heat Boards* or fire resistant boards are already excluded from the "Product under Consideration" provided they fulfill the technical criteria mentioned by them and, therefore, there is no question of making any specific exclusion. The Authority notes that the product under consideration in the subject investigation is Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions and the "Fire Heat Boards" being fire resistant boards are as such excluded from the purview of the product under consideration.

#### **Impact Boards**

- ❖ The Authority notes that "Impact Boards" are that type of gypsum plaster boards that have high density core which give them higher breaking load strength. As submitted by the interested parties, such type of gypsum boards having higher breaking load strength are mainly used in high traffic zone areas like foot-steps, stair cases etc., where there is frequent heavy weights movement. The interested parties have further submitted that these boards weigh 12.5 kilograms per meter square of 12.5 mm thickness (+/- 0.35 kg/m<sup>2</sup>) as against a standard board that weighs around 9 kilograms per meter square of 12 mm thickness. The domestic industry submitted that the "Impact Boards" are already excluded from the "Product under Consideration" provided they fulfill the technical criteria mentioned by them and, therefore, there is no question of making any specific exclusion. The Authority notes that the product under consideration in the subject

investigation is Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions and the "Impact Boards" are as such excluded from the purview of the product under consideration.

#### Gypsum Ceiling Boards with Moisture Barrier

- ❖ The Authority notes that the interested parties have requested for exclusion of "Gypsum Ceiling Boards with Moisture Barrier". The Authority further notes that the domestic industry has also informed that the moisture resistant boards of water absorption up to and including 5% have already been excluded from the purview of the "Product under Consideration" and therefore, the question of specific exclusion of Gypsum Ceiling Boards with Moisture Barrier, does not arise. The Authority notes that the product under consideration in the subject investigation is Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions and "Gypsum Ceiling Boards with Moisture Barrier" being moisture resistant boards are as such excluded from the purview of the product under consideration.

#### ECHO Boards

- ❖ The Authority notes that "ECHO Boards" are gypsum plaster boards which provide special sound absorption properties. The interested parties have submitted that "ECHO Boards" have square or circle perforations on their sides and a Noise Reduction Coefficient ('NRC') in the range of 0.65 to 0.80 as per IS 8225-1987 in reverberation room, that provide special sound absorption properties. They have further submitted that due to their special sound absorption properties, these boards are used in Cinema Halls, Recording rooms and other places where reverberation effect of sound has to be minimized. The Authority further notes that the domestic industry has also agreed for the exclusion of the "ECHO Boards" from the purview of the PUC, with specifications as provided by them. The Authority notes that the PUC in the present investigation is Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions and the "ECHO Board" is a special/value added variant of gypsum plaster board. The Authority further notes that the domestic industry has not provided any documentary evidence to substantiate production of "ECHO Board" by them during the injury period including POI, in conformity with the technical specifications being claimed by them. In view of the above position, the Authority notes that "ECHO Board", being a special/value added variant of the gypsum plaster boards, is excluded from the purview of the PUC.

#### Heat Boards

- ❖ The interested parties stated that "Heat Board" is gypsum plaster boards with polyester metalized foil firmly bonded on to the backside which gives at least 75% solar reflectance and claimed its exclusion from the purview of the PUC. But, the domestic industry has argued that this type of board is a like article to the product under consideration and can commercially and technically substitute the same. Further, domestic industry has submitted that there was no material imports, if any, of this board into India during the POI from subject countries and requested not to exclude the "Heat Boards" from the

purview of the PUC. The Authority notes that the product under consideration in the present investigation is Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions and "Heat Board" is a special/value added variant of gypsum plaster board. The Authority further notes that the domestic industry has not furnished any documentary evidence to substantiate production and supply of the same variety during the injury period including POI. In view of the above position, the Authority notes that "Heat Board", being a special/value added variant of the gypsum plaster boards, is excluded from the purview of the product under consideration.

#### **Anti-mold Boards or Weather Boards**

- ❖ As submitted by the interested parties, the "Anti-mold Boards or Weather Boards" are gypsum plaster boards with certain special additives added to the core and a special paper liner added to the surfaces to give them enhanced protection against mold or fungus growth. They have further submitted that these boards find special use in hospitals, warehouses and other areas which are exposed to moisture or abnormal environmental conditions. The interested parties have requested for the exclusion of such type of gypsum plaster boards from the purview of the PUC. On the contrary, the domestic industry has submitted that it is a "like article" to the product under consideration and can commercially and technically substitute the same. The Authority notes that the product under consideration in the present investigation is Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions and "Anti-mold Board or Weather Board", is a special/value added variant of the gypsum plaster board. The Authority further notes that the domestic industry has not furnished any documentary evidence to substantiate production and supply of this variety of gypsum plaster board during the injury period including POI. In view of the above position, the Authority notes that "Anti-mold Boards or Weather Boards", being a special/value added variant of the gypsum plaster boards, is excluded from the purview of the product under consideration.

#### **Thermal Boards**

- ❖ The interested parties have submitted that "Thermal Boards" are gypsum plaster boards with XPS Composite Panel at the back side using PVA Glue which offers additional thermal insulation with the lower thickness of the Board and therefore be excluded from the purview of the PUC. On the contrary, the domestic industry has submitted that thermal board should not be excluded as this board is a "like article" to the product under consideration and can commercially and technically substitute the same. The Authority notes that the product under consideration in the present investigation is plain gypsum plaster board and "Thermal Board", is a special/value added variant of the gypsum plaster boards. The Authority further notes that the domestic industry has not furnished any documentary evidence to substantiate production and supply of "Thermal Boards" during the injury period including POI. In view of the above position, the Authority notes that "Thermal Board", being a special/value added variant of the gypsum plaster boards, is excluded from the purview of the PUC.

### **Gypsum Ceiling Board with Aluminium Edges Sealed in White Film**

- ❖ The interested parties requested for exclusion of “Gypsum Ceiling Boards with Aluminium Edges Sealed in White Film” from the purview of the PUC. The Authority notes that the product under consideration in the present investigation is plain gypsum plaster boards of all thicknesses and dimensions and “Gypsum Ceiling Board with Aluminium Edges Sealed in White Film”, being a special/value added variant of the gypsum plaster board, is excluded from the purview of the PUC. The Authority further notes that the domestic industry has also not furnished any documentary evidence to substantiate production and supply of the same variety during the injury period including POI.

### **Ceiling Tiles**

- ❖ The interested parties have submitted that Ceiling Tiles are different from the PUC and beyond the scope of the present investigation. The domestic industry also in its submissions has acknowledged that ceiling tiles are beyond the scope of the PUC and therefore beyond the purview of the present investigation.

15. As the product under consideration in the present investigation is plain gypsum plaster boards of all thicknesses and dimensions and in view of the above position the Authority recommended exclusion of the following products from the scope of the anti-dumping measures in the Preliminary Findings and also excludes the same from the final determination as well:

- Gypsum Boards having water absorption up to and including 5% (Moisture Resistant Boards)
- Gypsum Boards having a minimum breaking load of 24 neutrons in the transverse direction and 50 neutrons in the longitudinal direction per millimeter of thickness (Impact Resistant Boards or Fire Resistant Board)
- Fire Boards
- Fire Heat Boards
- Impact Boards
- Gypsum Ceiling Boards with Moisture Barrier
- ECHO Boards
- Heat Boards
- Anti-mold Boards or Weather Boards
- Thermal Boards
- Gypsum Ceiling Boards with Aluminium Edges Sealed in White Film.
- Ceiling Tiles

16. As regards the submission of the domestic industry that technical specifications of all the excluded boards must specifically be mentioned in the findings as their absence may lead to circumvention, the Authority notes that the technical specifications provided by the domestic industry and other interested parties in their submissions have very much been reflected in this final finding. The Authority has already noted in the examination of the Product Under Consideration that since the product under consideration is Plain Gypsum Plaster Board, all the

special / technical / value added Gypsum Plaster Boards are beyond the scope of PUC. Moreover, the domestic industry has not demonstrated any documentary evidence to substantiate production and supply of the excluded products. Considering the fact that the PUC in the present investigation is Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions, all other products are hereby excluded from the scope of the product under consideration. As regards circumvention, the Authority notes that the fear expressed by the domestic industry is hypothetical. Nevertheless, in the event of such a situation, there is another set of Rules concerning circumvention, which can be taken recourse to.

17. Keeping in view the submissions made by the interested parties and the examination of the submissions, as above, the Authority holds that the product under consideration in the present investigation is "Plain Gypsum Plaster Boards of all thicknesses and dimensions", excluding the following:-

- Gypsum Boards having water absorption up to and including 5% (Moisture Resistant Boards)
- Gypsum Boards having a minimum breaking load of 24 neutrons in the transverse direction and 50 neutrons in the longitudinal direction per millimeter of thickness (Impact Resistant Boards or Fire Resistant Board)
- Fire Boards
- Fire Heat Boards
- Impact Boards
- Gypsum Ceiling Boards with Moisture Barrier
- ECHO Boards
- Heat Boards
- Anti-mold Boards or Weather Boards
- Thermal Boards
- Gypsum Ceiling Boards with Aluminium Edges Sealed in White Film.
- Ceiling Tiles

#### Like Article

18. Rule 2(d) of the Anti-dumping Rules defines like article as follows:

*"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has the characteristics closely resembling those of the articles under investigation.*

19. The domestic industry has claimed that the subject goods, which are being dumped into India, are identical to the domestic like product being produced by them. The domestic industry has further claimed that there is no known difference in their product and the subject goods exported from the subject countries and are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods and there is no significant difference in the subject goods produced by the domestic industry and those exported from the subject countries and both are technically and

commercially substitutable. The interested parties have also not disputed the likeness of the subject goods being produced by the domestic industry and those exported from the subject countries.

20. The Authority notes that there is no known difference in the subject goods produced by the domestic industry and those exported from the subject countries. The subject goods produced by the Indian industry and that imported from subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably. None of the interested parties have raised any objection in this regard. In view of the above, the subject goods produced by the domestic industry are being treated as domestic like articles to the product under consideration imported from subject countries and the two are considered to be technically and commercially substitutable and therefore like articles in terms of the Rules.

#### **D. Standing and Scope of Domestic Industry**

##### **Submissions made by the domestic industry**

21. The views of domestic industry with regard to the standing and scope of domestic industry are as follows:

- i. The Domestic Industry is not related to any exporter of the Product under Consideration from the subject countries. The Domestic Industry had categorically clarified in the application itself that they are not related to any exporter of the Product under Consideration from the subject countries.
- ii. Some of the interested parties have claimed that the applicant Domestic Industry has related exporters from the subject countries and, therefore, cannot be considered as an eligible "Domestic Industry" in terms of Rule 2(b). The exclusions under Rule 2(b) gets triggered only when a producer is related to an exporter, importer or has self imports or has imports through a related importer. None of the interested parties have produced any evidence contrary to declarations made by domestic industry in the context of Rule 2(b).

##### **Submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties**

22. The submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties with regard to the standing and scope of domestic industry during the course of the investigation are as follows:

- i. The petitioner has plants in UAE and Thailand, details of which have not been disclosed to the Designated Authority.
- ii. Since the technical product types are being exported by related entities, the petitioner has excluded these from the scope of the product under consideration.

**Examination by the Authority**

23. The submissions concerning Standing and Scope of Domestic Industry made by the interested parties during the course of the subject investigation and considered relevant by the Authority are addressed hereunder:

i. Rule 2(b) of the Anti-dumping Rules, as amended, defines domestic industry as under: -

*"domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers.*

ii. The Authority notes that in the subject investigation the application was filed by M/s. Saint-Gobain Gyproc India Ltd, on behalf of the domestic industry. As per the information furnished by M/s. Saint-Gobain Gyproc India Ltd, there is another producer of the subject goods in India namely M/s Lafarge Boral Gypsum India Pvt. Ltd. (LBGI), subsequently renamed as Boral Gypsum India Pvt. Ltd (LBGI). The share of the applicant company in the total domestic production of the subject goods was claimed to be 79% and the balance accounted for by M/s Lafarge Boral Gypsum India Pvt. Ltd. However, as claimed by the applicant company, M/s Lafarge Boral Gypsum India Pvt. Ltd is a regular importer of the subject goods and has also imported the subject goods in the period of investigation, thereby making them ineligible for the status of domestic industry under the Rules. The Authority notes that none of the interested parties, including M/s Lafarge Boral Gypsum India Pvt. Ltd, have disputed this fact.

iii. The Authority further notes that none of the interested parties have substantiated their claim by furnishing documentary evidence that M/s. Saint-Gobain Gyproc India Ltd's related companies in the subject countries have exported the subject goods to India during the POI. It may be the position that some of their related companies in the subject countries may have exported certain excluded variety of the Gypsum Plaster Boards, but that does not make them ineligible for the status of domestic industry under the Rules. In view of the above position, the Authority considers M/s. Saint-Gobain Gyproc India Ltd as commanding a major proportion of the production of the subject goods in India and therefore constituting domestic industry under the Rules. Moreover, the domestic industry has submitted the information concerning imports of value added Gypsum Plaster Boards by themselves from the subject countries. The Authority notes that since the value added Gypsum Plaster Boards are beyond the scope of the PUC, the information submitted by the domestic industry concerning imports of value added Gypsum Plaster Boards by themselves from the subject countries is not relevant to the present investigation.

## **E. Confidentiality**

### **Submissions made by the domestic industry during the course of investigation with regard to confidentiality**

24. The submissions made by the domestic industry with regard to confidentiality are as follows:

- i. The volume related information of capacity and production cannot be claimed as confidential.
- ii. The Authority should disclose the computation of normal value for non-cooperative exporters and detailed calculation of residual duties.
- iii. Letter filed by UAE embassy to Designated Authority during the course of the hearing should be circulated to the domestic industry.

### **Submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties**

- i. The DGCI&S data relied upon by the Authority have not been made available to the respondents.
- ii. Raw Import Data as provided by IBIS (International Business Information Services) has not been provided with the petition by the petitioner. No confidentiality can be claimed on such data.
- iii. The contention of the domestic industry that the final figures for the non-cooperative exporters must be disclosed is without any legal basis.

### **Examination by the Authority**

25. The Authority has examined the confidentiality claims of the interested parties. The Authority made available to all interested parties the public file containing non-confidential version of evidences submitted by various interested parties for inspection, upon request as per Rule 6(7).

26. With regard to confidentiality of information Rule 7 of Anti-dumping Rules provides as follows:-

Confidential information: (1) Notwithstanding anything contained in sub-rules and (7) of rule 6, sub-rule (2), (3) (2) of rule 12, sub-rule (4) of rule 15 and sub-rule (4) of rule 17, the copies of applications received under sub-rule (1) of rule 5, or any other information provided to the designated authority on a confidential basis by any party in the course of investigation, shall, upon the designated authority being satisfied as to its confidentiality, be treated as such by it and no such information shall be disclosed to any other party without specific authorization of the party providing such information.

(2) The designated authority may require the parties providing information on confidential basis to furnish non-confidential summary thereof and if, in the opinion of a

party providing such information, such information is not susceptible of summary, such party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarization is not possible.

(3) Notwithstanding anything contained in sub-rule (2), if the designated authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorize its disclosure in a generalized or summary form, it may disregard such information.

27. The provision for disclosure of essential facts before giving final findings has been laid down at Rule 16 of the Anti-dumping Rules. Even under Rule 16, the confidential facts are required to be disclosed to "respective interested parties", while non-confidential facts are required to be disclosed to all interested parties. At no stage the Designated Authority is empowered to disclose the confidential information to the parties with competing and conflicting interests.
28. The Authority notes that it would be sufficient if full explanation of the reasons for the methodology used in the establishment and comparison of the normal value, NIP etc is disclosed instead of disclosing the actual figures. Normal Value, export price and non-injurious price are based on the confidential information submitted by the parties and disclosure of computation of the same would be of significant competitive advantage to a competitor and its disclosure could have a significantly adverse effect upon the persons supplying the information.
29. It is noted that disclosure of the commercially sensitive and confidential information, provided by the interested parties to the Designated Authority, by reposing trust and confidence, to facilitate the investigation, will completely vitiate the market atmosphere both in the domestic as well as international fronts. The disclosure of confidential information relating to the cost of production, cost of sales, project report, etc. of the domestic industry will provide undue advantage to its domestic as well as overseas competitors and place the domestic industry in a disadvantageous position before the consumers. Likewise disclosure of the confidential information relating to the exporters such as normal value, net export price, landed price etc. will jeopardize their commercial interest vis-à-vis their competitors as well as buyers.
30. The Authority notes that details regarding export price, dumping margin, injury margin, CNV, NIP, etc, which are based on commercially sensitive information of the Domestic Industry and producers/exporters cannot be disclosed to all the interested parties. However, the information with regard to the Normal Value, Export Price and Dumping Margin and NIP in respect of individual cooperating exporters and domestic industry has been disclosed to the respective parties.
31. As regards the submission of the domestic industry that the letter submitted by the UAE embassy during the course of the oral hearing should be provided to them, the Authority notes that the copy has been kept in the public file for inspection by the interested parties.
32. As regards the submission of the interested parties that the DGCI&S data relied upon by the Authority have not been made available to the respondents, the Authority notes that the transaction wise DGCIS data also contains confidential information like name of the importers,

invoice details etc. therefore, the Authority has not shared the transaction wise DGCIS import data with the interested parties.

#### F. Methodology for determination of Dumping Margin

##### Submissions made by the domestic industry during the course of investigation

33. The submissions made by the domestic industry with regard to Normal Value, Export Price and Dumping Margin are, as follows:

- i. In UAE the prices of Gas is Government supported and controlled and Zones Corp which supplies the gas in UAE is a government controlled company. In view of this, the prices of the gas in UAE cannot be said to be reflective of market price. Due to this particular market situation, the Authority should reject the normal value of the exporter in UAE and adopt constructed methodology based on market determined prices. Moreover, the Authority should disregard the domestic selling price of the exporter for the purpose of normal value as the capacity utilization of the concerned exporter is around 25%-30% and in such a case it is not possible for any company to fetch profit due to the high per unit fixed cost.
- ii. Authority should reject domestic selling prices of Gypsum in Thailand since being Government controlled and not reflective of market price. In view of this, the normal value based on the domestic prices and costs of the exporter should be disregarded as well. The Authority should take into account the market price of gypsum to arrive at the Constructed Normal Value (CNV) in respect of Thailand.
- iii. The ex-factory price for non-cooperative exporter should not be based on the lowest ex-factory price of the cooperative exporter as this will give undue advantage to the non-cooperative exporters. Ex-factory price for non-cooperative exporter should be based on the basis of lowest CIF price available from the DGCIS data.
- iv. The exporters from Thailand have themselves accepted in the questionnaire response that they have not sold any quantity of the same thickness in the domestic market which had been exported to India. However, in the Preliminary Findings, it has been stated that the normal value is based on the domestic selling prices of the same thickness as the one exported to India. It needs to be clarified.
- v. The objection of the interested parties that the domestic industry has not provided the actual selling price of the subject good in Thailand even when it has a related company in Thailand is without any basis. Each entity within the group is different legal entity with independent management. The related entity refused to share their confidential information with domestic industry.

##### Submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties

34. The submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties with regard to normal value, export price and dumping margin are as follows:

- i. The appropriate unit of measurement for the subject goods is meter square (M2) and not meter cube (M3).
- ii. The ocean freight claimed by the domestic industry at 143% of the FOB price itself is untenable. The transport cost is around USD 20 per meter cube.
- iii. In the preliminary finding, the Authority has rightly concluded that the minimum export price for Gypsum fixed by Government of Thailand would not impact the domestic selling prices of Gypsum available in Thailand. In this regard we also wish to highlight that even the Government of India is imposing export duty on export of iron ore from India. This by itself would not mean that the domestic selling price of iron ore in India is influenced by the Government.
- iv. Saint Gobain has constructed normal value for UAE/Thailand. This is despite the fact that they have their own subsidiaries in UAE/Thailand producing Gypsum Plaster Boards. Such being the case, petitioner deliberately did not provide evidence of normal value on the basis of actual selling price in these countries. They misled the Designated Authority in claiming that the prices of product in the subject countries were not available and adopted its own high cost of production to show dumping, despite the fact that they have easy access to domestic prices in the exporting countries.
- v. Imports from subject countries have increased during the POI only because of fresh production and resultant exports from UAE.
- vi. Gypsemna submits that due adjustment for startup operations is provided under the Rules. In view of start up operations of the company, the cost of production in the POI is required to be adjusted appropriately. Such adjusted costs of production are materially below the selling price in respect of domestic sales. Gypsemna's profitable position during the POI, despite low capacity utilization, is due to the adjusted start-up cost.
- vii. No facts or evidences have been provided by the domestic industry in support of their claim that the natural gas prices in UAE are not based on market forces. The parallel drawn by the petitioner with the polypropylene AD case is factually misplaced. The utilities in India are also being supplied by Govt. of India agencies. It does not, however, mean that the prices of product sold by them are not reflective of market values.
- viii. The petitioner's claim that the Thailand Government controls the prices of Gypsum in Thailand is not supported by any evidence. The argument of the petitioner that the domestic selling price of Gypsum in Thailand is Government controlled and therefore normal value based on the domestic prices and costs of the exporter should be disregarded, is without any basis. Government of India is also imposing export duty on export of iron ore from India. This by itself would not mean that the Indian Government is regulating the domestic selling price of iron ore.

- ix. In so far as UAE is concerned, the volume of exports reported by Gypsemna in the questionnaire response is higher than the volume of imports considered by the petitioner. Such being the case, there is no question of existence of "any other exporter" in the present case and therefore there is no justification for adopting a different price for "any other exporter". The question of differential and lower price shall arise only if there is a producer or exporter who has preferred non-cooperation.
- x. M/s Knauf commenced commercial production up to the end of the POI. They have no export of the subject goods during the POI. In view of this, the authority should specify Knauf as a new exporter in the duty table and take up New Shipper Review (NSR) investigation for the company at this stage itself.
- xi. IBIS imports of gypsum board are reported in the units of measurement such as pcs, pac, nos, bag, kgs, sht, sqm, ctn, etc. Whereas import listing of product under consideration provided by the petitioner (which is also from IBIS) includes imports reported in pcs, nos and sqm only. It thus appears that petitioner possibly has not included imports made by it.

#### Examination by the Authority

35. The submissions made by the domestic industry and the interested parties with regard to Normal Value, Export Price and Dumping Margin have been appropriately dealt with by the Authority while determining the dumping margin for the co-operative and the non-cooperative exporters. However, the specific issues as raised by the interested parties in the course of the present investigation have been addressed by the Authority as follows:

- i. The domestic industry submitted that in UAE the prices of Gas is Government supported and Government controlled and therefore the prices of the gas in UAE cannot be said to be reflective of market price. They further submitted that due to this particular market situation, the Authority should reject the normal value of the exporter in UAE and adopt constructed methodology based on market determined prices. In their counter argument the interested parties submitted that the utilities in India are also being supplied by Govt. of India agencies. It does not, however, mean that the prices of product sold by them are not reflective of market values. The Authority notes that it has not been denied by any of the interested parties that the prices of gas in UAE are not Govt. controlled. However, the existence of Government control on the supply of gas in the UAE cannot be the basis to conclude that a dual pricing policy exists in the UAE. The domestic industry alleged that a separate rate of gas is charged on the domestic producers as compared to the one being charged on the exporters. In support of their argument, the domestic industry submitted import data for Japan in respect of import of gas. The Authority further notes that the domestic industry's related company has manufacturing facilities for production of the subject goods in UAE. However, no substantive documentary evidence of the Govt. Policy in UAE having dual pricing for supply of gas has been furnished by the domestic industry. The Authority further notes that comparison of the domestic prices of gas in UAE with the import statistics from Japan cannot be a convincing evidence on the

alleged dual pricing prevalent in the UAE, as the domestic prices for gas in UAE and import statistics in Japan are not on an even platform, so as to be considered for a like-to-like comparison. The documents submitted by the domestic industry itself show that various types of gases are exported from UAE to Japan. In view of the same, the Authority does not consider that a particular market situation is prevailing in the UAE in the context of the Normal Value for product under consideration.

- ii. The domestic industry further submits that Authority should disregard the domestic selling price of M/s Gypsemna, UAE for the purpose of normal value as their capacity utilization is around 25%-30% and in such a case it is not possible for any company to fetch profit due to the high per unit fixed cost. M/s Gypsemna in their counter argument submitted that it is for this reason the company has considered start-up cost and segregated the cost of production for the start-up operations. The Authority notes that the submissions in this regard have been examined with reference to the relevant provisions of the Anti-Dumping Rules, apart from the project report of M/s Gypsemna for the project for the subject goods, while determining the normal value.
- iii. The domestic industry submitted that Authority should reject domestic selling prices of Gypsum in Thailand, since being Government controlled and not reflective of market price. They further submitted that in view of this, the normal value based on the domestic prices and costs of the exporter should be disregarded as well and Authority should take into account the market price of gypsum to arrive at the constructed normal value in respect of Thailand. The concerned interested parties in their counter argument submitted that Government of India is imposing export duty on export of iron ore from India. This by itself would not mean that the Indian Government is regulating the domestic selling price of iron ore. The Authority notes that the export price of Gypsum in Thailand, a major raw material for manufacturing the subject goods, is Government controlled. However this by itself cannot construe that a dual pricing policy is prevailing in Thailand, signifying a particular market situation. No evidence has been furnished by the domestic industry with regard to any Government control on the domestic prices of Gypsum in Thailand, despite themselves having related producer in that country. Moreover, during the verification of data submitted by the co-operating exporters from Thailand, the Authority has not come across any evidence of Govt. control on the domestic prices of Gypsum.
- iv. The domestic industry submitted that the ex-factory export price for non-cooperative exporter should be based on the basis of lowest CIF price available from the DGCIS data, instead of the lowest ex-factory export price of the cooperative exporter, as this will give undue advantage to the non-cooperative exporters. The Authority notes that the ex-factory export price for non-cooperative exporters has been determined by the Authority as per the consistent practice of the DGAD. Moreover, the Anti-Dumping Rules do not provide for any specific guidelines in this regard.
- v. Post initiation, M/s Knauf, Dubai informed that they have not made any exports of the subject goods to India during the POI. But, post-PF they submitted exporter's

questionnaire response as well, which being much belated, has not been considered by the Authority. Since, M/s Knauf LLC has not exported the subject goods to India during the POI, no separate Dumping-Margin could be assessed by the Authority for M/s Knauf. However, the company may take recourse to the provisions of New Shipper Review (NSR) as laid down under the Anti-Dumping Rules, if they so desire.

- vi. As regards the submissions of the interested parties that the domestic industry has failed to submit the information on Normal Value in the subject countries despite having the related entities producing the subject goods in the subject countries, the Authority notes that the entities in the subject countries even though may be related to each other but may not necessarily share information particularly with regard to the cost of production and the prices of the subject goods. In view of the same the Authority does not agree with the submissions by the interested parties that the domestic industry has deliberately withheld the information on the cost and price structure of the subject goods in the subject countries while submitting the application for initiation of the investigation. Based on *prima-facie* evidence of existence of dumping and injury to the domestic industry from the imports of the subject goods from the subject countries, the Authority initiated the present investigation. However, the Authority has relied upon verified data for the final determination.
- vii. As regards the query of the domestic industry that the basis of calculation of normal value in respect of the producers/exporters of Thailand needs to be clarified by the Authority, the methodology of determination of normal value as given in the Preliminary Finding and this final finding is self-explanatory.
- viii. As regards the submission of the interested parties that the appropriate unit of measurement for the subject goods is meter square (M2) and not meter cube (M3), the Authority notes that in the instant case since thickness of the PUC is also a factor of analysis, it is appropriate to cause such analysis on the basis of meter cube (M3) and not meter square.
- ix. The interested parties argued that ocean freight has been claimed by the domestic industry at 143% of the FOB price itself and on a transaction by transaction basis the transport cost was around USD 20 per meter cube, the Authority notes that while calculating the Net Export Price, the ocean freight has been taken on the basis of verified data.

#### **G. NORMAL VALUE**

**Determination of Normal value in respect of Non-cooperative Exporters/Producers from China PR and Indonesia**

**CHINA PR**

36. The Authority notes that none of the producers/exporters from China PR have submitted questionnaire response and are therefore non-cooperative. In the absence of any response and China PR being a non-market economy, the Authority therefore considers it appropriate to proceed with para-7 of Annexure-I to the Rules for determination of normal value for China PR. Para 7 of Annexure I of the Rules provides that:

*"In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated Authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments."*

37. The domestic industry proposed that Thailand be taken as an appropriate market economy third country for determination of normal values for China PR, without making available any reliable information as required under the Rules. Moreover, the Authority notes that China PR and Thailand cannot be considered as at the same level of development. In view of the above, in terms of Para 7 of Annexure I of the Rules, the Authority determines the Constructed Normal Value (CNV) in respect of China PR *"on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin"*.

#### Indonesia

38. The Authority notes that none of the producers/exporters from Indonesia have submitted exporter's questionnaire response and are therefore non-cooperative. Therefore, the Authority has relied upon the facts available in terms of Rule 6(8) of the Rules for the determination of normal value in respect of Indonesia and determined the Normal Value accordingly.

#### Determination of Normal value in respect of Co-operative Exporters/Producers from Thailand and [REDACTED]

#### General Methodology for working out dumping margin for responding exporters

39. It was first determined by the Authority that whether the total domestic sales of the subject goods by the producers/exporters concerned in the subject country was representative when compared to their total sales of the subject goods in the exporting country. Thereafter, it was examined

whether their sales are under ordinary course of trade in terms of Rule 2 of the annexure I to the Anti-dumping Rules. Wherever the exporters have provided transaction wise details of sales made in home market and same has been accepted by the Authority after verification of information, the said verified information has been relied upon to determine the average selling price of various thicknesses of the subject goods sold in the home market. For the determination of the ordinary course of trade test, the cost of production of the product concerned was examined with reference to the records maintained by the producers. Further, all domestic sales transactions were examined with reference to the cost of production of the subject goods to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade or not. Thus, only the profitable transactions have been taken into consideration for the determination of normal value for the cooperating producers/exporters where sales below costs exceed 20%.

**UAE**

**M/s Gypsemna Company (L.L.C), UAE:**

40. The data submitted by M/s Gypsemna and verified by the Authority has been considered for determination of the Normal Value. M/s Gypsemna submitted details of sales of the subject goods in the domestic market. The Authority notes that the company sold a total quantity of \*\*\* square meter (\*\*\* cubic meter) of the subject goods in the domestic market. The Authority further notes that the thickness of the subject goods sold in domestic market varied from \*\*\* mm to \*\*\* mm. An analysis of the domestic sales of the company during the POI reveals that there were significant differences in the sales price based on thickness of the goods sold to the consumers. The sales price of the subject goods in the domestic market along with the quantity sold in domestic market is as follow:

Sl. No.	Thickness	Volume			Value in AED
		No. Of Boards	SQM	M3	
1	***	***	***	***	***
2	***	***	***	***	***
3	***	***	***	***	***
4	***	***	***	***	***
5	***	***	***	***	***
6	***	***	***	***	***
7	***	***	***	***	***
	Total	***	***	***	***

41. The Authority further notes that the subject goods have been sold by the subject company to the independent entities as well as to a related company. The sales of the subject goods to the related company have been noted to be in the ordinary course of trade and have been accepted by the Authority for the determination of Normal Value. The Authority further notes that the company has

incurred operating losses during the POI, as the capacity utilization was noted to be at \*\*\* %. In this regard the company claimed adjustments on account of startup expenses in respect of some of the elements of the fixed cost in terms of the Anti-Dumping Rules. In support of their claim, the company submitted a copy of project report for the production of Gypsum Plaster Boards. The adjustment on account of startup expenses was claimed by the company at \*\*\* % capacity utilization. The Authority notes from the report that the company was likely to attain the capacity usages of \*\*\* % during the \*\*\* year of its commercial production. Accordingly, the claim of the company for start up expenses has been accepted by the Authority. Further, the deductions claimed by the company on account of the packing cost, inland freight and credit cost in the domestic sales have also been accepted by the Authority. For the purpose of determining the normal value for the PUC in respect of Gypsemna, only the sales of the width of the subject goods, as have been exported to India, have been considered by the Authority.

**Thailand****M/s Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co. Ltd, Thailand**

42. The information submitted by the company in its questionnaire response was verified by the Authority. The company submitted details of sales of the subject goods in the domestic market. The Authority notes that the company sold a total quantity of \*\*\* Cubic Meter of the subject goods in the domestic market. The Authority further notes that the thickness of the subject goods sold in domestic market varied from \*\*\* mm to \*\*\* mm. An analysis of the domestic sales of the company during the POI revealed that there were significant differences in the sales price based on thickness of the goods sold to the consumers. The ex-factory sales price of subject goods, based on thickness varied from US \$ \*\*\* per Cubic Meter to US \$ \*\*\* per Cubic Meter. Therefore, for the purpose of arriving at the normal value and for comparison on a like-to-like basis, the domestic sales price of the thickness of the Gypsum Plaster Board, as exported by the company to India, has been considered by the Authority. During verification the Authority noted that the subject goods are also being sold by the company through related entities i.e. M/s \*\*\* , \*\*\* and M/s Siam Gypsum (Saraburi) Co. Ltd. The ex-factory sales price of the goods sold through \*\*\* and M/s Siam Gypsum (Saraburi) Co. Ltd were noted by the Authority to be at a price significantly lower than the average selling price to other entities. Therefore, the sales of the goods through these two related entities have not been considered by the Authority in determining the Normal Value. The company has claimed adjustments on account of inland transportation, ocean freight, insurance, port handling charges, customs fees, differential in marketing / advertising expenses and the administrative expenses, credit cost and loyalty and target setting expenses. The expenses as verified and to the extent based on actual have been allowed.

**M/s Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd**

43. The data submitted by the company in its questionnaire response was verified by the Authority. The company submitted details of sales of the subject goods in the domestic market. The Authority notes that the company sold a total quantity of \*\*\* Cubic Meter of the subject goods in the domestic market. The Authority further notes that the thickness of the subject goods sold in domestic market varied from \*\*\* mm to \*\*\* mm. An analysis of the domestic sales of the company during the POI revealed that there were significant differences in the sales price based

on thickness of the goods sold to the consumers. The ex-factory sales price of subject goods, based on thickness varied from US \$ \*\*\* per cubic meter to US \$ \*\*\* per cubic meter. During the verification the Authority noted that the subject goods are also being sold by the company through related entities i.e. M/s \*\*\*, \*\*\* and M/s Siam Gypsum (Songkhla) Co. Ltd. The ex-factory sales price of the goods sold through \*\*\* and M/s Siam Gypsum (Songkhla) Co. Ltd were noted by the Authority to be at a price significantly lower than the average selling price to other entities. Therefore, the sales of the goods to these two related entities have not been considered by the Authority in determining the Normal Value. Further, the Authority has considered only the thicknesses of the subject goods which have been exported to India. The Authority notes that the company sold subject goods of the thickness of \*\*\* mm in the exports to India. In the absence of the sales of the thickness \*\*\* mm in the domestic market, the Authority has considered the sales of the subject goods of thickness \*\*\* mm in the domestic market for determination of normal value. Therefore, for the purpose of arriving at the normal value and for comparison on like-to-like basis, the domestic sales price of the thickness of the Gypsum Plaster Board, as exported by the company to India has been considered. The company has claimed further adjustments on account of inland transportation, ocean freight, insurance, port handling charges, custom fees, differential in marketing / advertising expenses and the administrative expenses, credit cost and loyalty and target setting expenses and Bank charges. The adjustments claimed by the company have been allowed as verified based on actual of the expenses incurred by the company.

**Determination of Normal value in respect of Non-Cooperative Exporters/Producers from Thailand and UAE**

**Non Cooperative exporters, UAE**

44. The Authority determined normal value for non-cooperative producers/exporters from UAE, on the basis of facts available as per the Rules.

**Non Cooperative exporters, Thailand**

45. The Authority determined normal value for non-cooperative producers/exporters from Thailand, on the basis of facts available as per the Rules

**EXPORT PRICE**

**UAE**

**M/s Gypsemna Co. (L.L.C.), Dubai**

46. M/s Gypsemna, UAE submitted details of their exports of the subject goods to India in the prescribed proforma. Based on verification of the data submitted by the company, the Authority notes that the company has exported the subject goods to India only of the thickness of \*\*\* mm during the POI. In the export price, the company has claimed adjustments on account of packing, credit cost, local transportation, documentation charges, ocean freight and BL&THC charges. The deductions claimed by the company as stated above have been accepted by the Authority based on verification and being based on actual. Based on the verification of claims and based on

actual the above stated adjustments from the export price as above have been allowed by the Authority.

#### Non Cooperative exporters from UAE

47. The Authority notes that no other exporter from UAE has submitted exporter's questionnaire response. Therefore, the Authority has adopted the lowest representative net export price to India of the cooperating exporters from UAE.

#### Thailand

##### The Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co. Ltd. Thailand

48. The data submitted by the company in response to the exporter's questionnaire was verified by the Authority. The Authority notes that the company has exported the subject goods of the thickness of \*\*\* mm and \*\*\* mm to Indian market. In the export price, the company has claimed adjustments on account of Ocean freight, port handling charges, credit cost and bank charges. Based on the verification of claims and based on actual the above stated adjustments from the export price as above have been allowed by the Authority.

##### The Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd. Thailand

49. The data submitted by the company in response to the exporter's questionnaire was verified by the Authority. The company submitted details of its exports of subject goods to India in the prescribed proforma. The Authority notes that the company has only sold the subject goods of the thickness of \*\*\* mm to Indian market. In the export price, the company has claimed adjustments on account of inland transportation, Ocean freight, port handling charges, credit cost and bank charges. Based on the verification of claims and based on actual adjustments from the export price as above have been allowed by the Authority.

#### Non Cooperative exporters from Thailand

50. The Authority notes that no other exporter from Thailand has submitted exporter's questionnaire response. Therefore, the Authority has adopted the lowest representative net export price to India of the cooperative exporters from Thailand for determining the net export price in case of non-cooperative exporters.

#### Determination of Export Price in respect of China PR and Indonesia

51. The Authority notes that none of the exporters/producers of subject goods from China PR and Indonesia have responded to the Authority in the form and manner prescribed. In the absence of response from the producers/exporters from the said countries, the Authority has determined the export price in respect of these countries on the basis of best available information in terms of Rule 6(8) of the anti-dumping Rules. The Authority has relied upon DGCI&S import data for the purpose of arriving at the weighted average CIF value of imports from the said countries during the POI. Adjustments on account of ocean freight, insurance, port

expenses etc have been considered as claimed by the petitioner and subject to appropriate adjustments to arrive at the net export price in respect of the said countries.

#### **H. DUMPING MARGIN**

52. The Authority has considered the Normal Value of the cooperative exporters for the subject goods based on domestic sales after considering the adjustments as claimed and verified. The Normal Value has been accordingly determined based on thickness of the subject goods sold in a domestic market. The comparison of the export price has been made with the Normal Value in respect of the thicknesses of the PUC exported to India during the POI. Based on the comparison of the normal values and the export price, the dumping margin is determined as follows:

In US\$/Cubic Meter

Sl. No.	Country	Producer Exporter	Normal Value	Net Export Price	Dumping Margin	Dumping Margin %	Dumping Margin % range
1.	Thailand	The Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co. Ltd. Thailand	***	***	***	***	90-100
		The Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd. Thailand	***	***	***		
		Weighted Average for the Group	***	***	***		
		Any other producer	***	***	***	***	120-130
2.	UAE	M/s Gypsemna Co. (L.L.C.), Dubai	***	***	***	***	10-20
		Any other producer	***	***	***	***	20-30
3.	China PR	All exporters/ producers	***	***	***	***	35-45
4.	Indonesia	All exporters/ producers	***	***	***	***	20-30

#### **I. Miscellaneous Submissions**

##### **Miscellaneous Submissions made by domestic industry**

53. The following miscellaneous submissions have been made by domestic industry during the course of the investigation:

- i. Authority may kindly disregard any submission made by any party who has failed to provide the information called for by the Designated Authority in the prescribed format. Submissions made by M/s India Gypsum, Cochin or any other party who have not filled the questionnaire response as per the prescribed procedure ought to be rejected outrightly.
- ii. The issue concerning jurisdiction of the Authority was raised before the Hon'ble Bombay high Court in the case of "Hamilton Housewares Pvt Ltd V/s DA" [2012 (276) E.L.T. 191]. The Hon'ble Bombay High Court dismissed the petition vide order dated 14.10.2011.
- iii. The investigation has been initiated by the Authority on the basis of detailed analysis of the injury factors to establish injury, causal link and dumping given by the domestic industry in the application.
- iv. The mere fact that the subject goods may find their application in the infrastructure sector, cannot and has never been a ground for decision-making in anti-dumping matters
- v. The representative of the Government of UAE submitted a letter to the Designated Authority during the course of the hearing without providing copies to the other interested parties including the Domestic Industry. The contention of the UAE government is completely bereft of merit and is not sustainable in law.
- vi. The belated submissions filed by some of the parties after the expiry of the time limit of 40 days cannot be taken on record and needs to be rejected by the Authority.
- vii. The present Act and the Rules do not permit the Designated Authority to consider public interest as a basis to deny any remedy that is sought to be provided through the present legislation.
- viii. No intimation about change in name or change in structure of Lafarge Boral India Ltd has been placed on record.
- ix. As per the consistent practice of the DGAD, Authority may not take cognizance of the submissions made by an importer who has not filed the prescribed importer's questionnaire response.

#### **Submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties**

54. The following miscellaneous submissions have been made by the producers/exporters/importers/and other interested parties during the course of the investigation:

- i. The subject investigation is without jurisdiction since the person holding the office of the Designated Authority as on the date of initiation of the investigation was of the rank of

Additional Secretary to Government of India, whereas as per the Rules, the Designated Authority should have been of the rank of Joint Secretary to the Government of India.

- ii. The investigation has been initiated without examining the adequacy and accuracy of the information provided by the petitioner in the petition.
- iii. Subject goods are concerned with the infrastructure sector. In the interest of macro-economic growth, anti-dumping duty should not be imposed on the imports of the subject goods from the subject countries.
- iv. The petition is intended to create monopoly for the domestic industry in the Indian market at the cost of the consumers.
- v. As regards the contention of the DI that submissions of M/s India Gypsum, Cochin and any other party who has not filed the questionnaire response should be rejected, it is submitted that there is no such practice. Since the Designated Authority has in the past accepted submissions from the interested parties without questionnaire response, the same should be accepted in the present case as well.
- vi. The 40 days' time limit is applicable only for filing of questionnaire responses and not for filing written submissions.

#### Examination by Authority

55. The miscellaneous submissions made by the interested parties and the domestic industry are addressed by the Authority as under:

- i. As regards the submission made by the interested parties that the subject investigation is without jurisdiction since the person holding the office of the Designated Authority as on the date of initiation of the investigation was of the rank of Additional Secretary to Government of India, whereas as per the Rules, the Designated Authority should have been of the rank of Joint Secretary to the Government of India, the Authority notes that Hon'ble High Court of Mumbai, vide their order dated 14.10.2011, in the WP No. 6791 of 2011 of "Hamilton Housewares Pvt. Ltd V/s DA" [2012 (276) E.L.T. 191], dismissed a petition with similar prayer.
- ii. The Authority notes that the subject investigation has been initiated by the Authority having been satisfied *prima facie* with the evidences submitted by the applicant concerning dumping, injury and causal link of the subject goods, originating in or exported from the subject country. The data/information submitted by the domestic industry and the cooperating interested parties have been verified by the Authority to the extent considered necessary.

- iii. As regards the submission made by the interested parties that subject goods are concerned with the infrastructure sector and in the interest of macro-economic growth, anti-dumping duty should not be imposed on the imports of the subject goods from the subject countries, the Authority notes that the argument has no logic under the anti-dumping provisions. The Authority further notes that the intent behind anti-dumping provisions is not to curb imports but rather to create a level playing field for the domestic industry vis-a-vis the dumped imports.
- iv. The copies of the non-confidential version of the responses/submissions made by various interested parties and the domestic industry, including the copy of the letter received from the representatives of Govt. of UAE during the public hearing, have been kept in the public file and the submissions made by the interested parties considered relevant by the Authority have been addressed in this finding.
- v. The submissions made by the interested parties only up to the time limits, as allowed under the rules or as allowed by the Authority on the specific request of any of the interested parties, have been considered by the Authority.
- vi. The contention of the interested parties that the exporters operate in the infrastructure sector and imposition of the Anti-Dumping duty on the subject goods may affect growth of an important sector of the economy is irrelevant. In the present investigation, the Authority has been guided by the provisions of the Anti-Dumping Rules.
- vii. The investigation has been initiated by the Authority on the basis of detailed analysis of the injury factors to establish injury, causal link and dumping given by the domestic industry in the application. Therefore the contention of the interested parties that the investigation has been initiated by the Authority without examining the adequacy and accuracy of the information provided by the petitioner is baseless.
- viii. As regards the contention of the domestic industry that the information that is provided in the application is relevant for the purposes of initiation only and recedes into background once the initiation is done, the Authority notes that the anti-dumping investigation is a continuous process and the information brought before the Authority at each stage of the investigation is important for arriving at a logical and judicious conclusion.
- ix. The information regarding change in name/structure of M/s Lafarge Boral India Ltd, submitted by the concerned party, has been placed in the public file by the Authority.
- x. The intent behind anti-dumping investigation is neither to encourage monopoly by the domestic industry nor to prevent imports. The basic purpose of the anti-dumping investigation is to create a level playing field for the domestic producers of commodity of subject goods vis-à-vis dumped imports.
- xi. The Authority has relied upon the import data received from the DGCI&S source for conducting necessary dumping and injury analysis. Therefore, petitioner's data based upon IBIS source has no relevance.

**J. Injury Determination**  
**Domestic Industry**

56. The submissions made by the domestic industry with regard to injury and causal link are as follows:

- i. The contention that petitioner is intending to drive competition from the market is misplaced. The basic premise of anti-dumping duty is to protect against unfair practice of dumping. Moreover, there is no enquiry either against the petitioner or with regard to the Product under Consideration by the CCI.
- ii. It is only on the basis of sufficient evidence of dumping, injury and causal link that the Authority initiates investigations. The information in the context of the injury, causal link and dumping has already been provided in the application filed by the domestic industry.
- iii. The contention of the interested parties that injury allegedly suffered by domestic industry is due to increased cost of production caused by excessive production capacity and not because of imports is incorrect. Decisions concerning capacity creation/expansion are made based on the development of the market in terms of size and growth rates of the preceding years, which form the primary basis for the market projections for the future. The domestic market data shows that there has been a steady average growth of 30 - 40% over the years. Therefore, there is no merit in the argument that decisions of the Domestic Industry to increase capacities of production in excess of the demand in the country were misplaced.
- iv. The increase in the cost of production is overwhelmingly due to the increase in the variable cost of production, as increase in the fixed cost per unit is marginal. Thus, the increase in costs has no relation with the increase in capacity.
- v. The impairment costs related to the Chennai plant have not been considered either to calculate the injury related factors nor for the purpose of injury margin.
- vi. The quantity of captive consumption referred in the submissions of the interested parties is in the nature of boards utilized as samples or mock ups. The total quantity in 2009-10 was 45.10 MT which is equivalent to 59 M3 which is 0.03% of total sales during 2009-10. The cost for the same has been considered under the sales promotion expenses.
- vii. Allowing 22% return on capital employed is the consistent and uniform practice of the Authority.
- viii. The methodology for injury margin suggested by the interested parties is contrary to established practices of the Designated Authority and not laid down under the Act or the Rules. Moreover, as far as the issue of excluding the depreciation cost for calculating the

NIP is concerned it is submitted that the methodology suggested by the interested parties is not in accordance with the consistent practice of the Authority.

- ix. The respondents have admitted that the injury is suffered by the domestic Industry but the cause of injury has been attributed to other factors.
- x. M3 is the only unit of measurement which can take care of the variation in the thicknesses of the boards having a direct impact on the cost and prices of the boards.
- xi. It is true that there is only marginal increase in the imports from the subject countries during the year 2009-10 as compared to 2008-09. But, the pricing decision is taken not only on the basis of the import prices but it depends upon several other injury factors associated and operating at the same time. As the quantum of increase in imports is only marginal and the cost has also increased in 2009-10 as compared to the base year, the domestic industry had increased its prices to a certain extent. Moreover, it is submitted that had the dumped imports not there, then possibly domestic industry could have increased its prices in proportion to the increase in the cost so as to earn a reasonable profit. Evidently, it is undisputed that the level of profit had declined substantially during this period.
- xii. The reduction of price in POI goes to show increase in profits as compared to immediately preceding year (2009-10).
- xiii. The interested parties have themselves accepted the fact that the net selling price of the Boral Gypsum India Pvt Ltd is lower than that of the imported goods. This clearly goes to show that even Boral Gypsum to retain its market share is not in a position to recover prices that are around or equal to import prices.
- xiv. The Designated Authority has already disclosed that this is a fit case in which cumulative assessment is most appropriate in terms of law. The performance viewed in isolation would lead to absurd results as explained above.
- xv. The existence of Lafarge Boral is much prior to the POI and hence it cannot be said that the suffering of domestic industry in the POI is due to inter-se competition. Keeping in view the size of domestic industry, Lafarge Boral is not really in a position to influence market price.

#### Submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties

57. The submissions made by the producers/exporters/importers/and other interested parties with regard to injury and causal link are as follows:

- i. The injury allegedly suffered by domestic industry is due to increased cost of production caused by excessive production capacity as compared to demand.

- ii. The application for imposition of anti-dumping duty is intended to drive away competition from the market. The Competitive Commission of India has already initiated an investigation against the petitioner company in this regard.
- iii. The subject petition is flawed since the petitioner has failed to establish *prima facie* that there was dumping, injury and causal link.
- iv. Amortization of the cost of petitioner's Chennai plant that has discontinued production has caused the alleged injury to the petitioner.
- v. Advantages gained out of captive consumption have not been analyzed. Any injury caused due to uneconomical usage of internally consumed goods shall not be attributed to the subject imports.
- vi. NIP of the petitioners should be determined with a reasonable profit margin.
- vii. The imports are made by a related company of Lafarge Boral in India which incurs all the selling expenses like advertisement expenses, sales promotion expenses, warehousing charges etc. to sell the product. Hence, in order to arrive at a fair comparison, what is to be compared is the net selling price of the trading company in India with the selling price of the petitioner.
- viii. Imports from subject countries have increased only because of fresh production and resultant exports from UAE. If imports from UAE are excluded, the volume of imports is in the same region.
- ix. During the period of 2008-09 and 2009-10, the market share of imports decreased. Despite this, market share of the domestic industry declined. At the same time, the market share of the other Indian producer, Lafarge Boral Gypsum India Pvt. Ltd, increased in the same period. This shows that the loss of market share to the Domestic industry is on account of internal domestic competition i.e., Lafarge Boral Gypsum Indian Pvt. Limited and not because of alleged dumping by the subject countries.
- x. It is submitted that there was a decrease in the production of the petitioner for the period 2008-09 and 2009-10, but the production has in fact increased substantially in the POI. It is also observed that the loss in the production of the petitioner was because of the other Indian producer, which started manufacturing in 2008-09.
- xi. There is no correlation between the increase in the alleged dumped imports and the alleged injury. In fact, when the imports declined in 2008-09 and 2009-10, the injury parameters for the petitioner declined too, *inter alia*, profits, cash profit and return on investment. Therefore, the existence of causal link between the imports and the alleged injury is absent.

xii. In determining the Non Injurious Price for the petitioner domestic industry, the statute provides for a reasonable rate of return to be included. It is quite unjustified on the part of the petitioner to claim exorbitant rate of return. Therefore, the NIP of the petitioners be determined with a reasonable profit margin of 3 percent which is the reasonable return considering the return earned by the M/s Saint Gobain group.

xiii. The total capacity of the petitioner during the POI was 412500 M3 as against the total demand of 380279 M3. The production of other Indian producer during the POI was around 58,000 M3. Even, if no imports would have taken place during POI, around 90,000 M3 of capacity with the petitioner would have been unusable. In view of the same, the depreciation cost for the surplus capacity of around 90,000 M3 cannot be taken into account for determination of NIP.

xiv. The domestic industry has not suffered any injury during the POI. In fact, during the POI, the performance of the petitioner has seen a strong growth. The increase in profitability of 74% per meter cube of board sold coupled with 9% increase in sales volume, profitability in Rupee terms has increased by 64%. This increase in profitability has been due to a fall in cost of production. These figures clearly show that the domestic industry has not suffered any injury during the POI. On the contrary, the financial performance of the petitioner has seen a steady growth.

xv. The claim of price undercutting made in the petition and noted in the preliminary finding are erroneous and do not show the factual position. Firstly, the price comparison has not been made at the same level of trade. As far as co-operative exporter for Thailand M/s The Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co. Ltd. and M/s Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd. are concerned, while the petitioner sells the products to its distributors directly, M/s Boral Gypsum India Pvt. Ltd imports the subject goods and thereafter re-sells them to the distributors after incurring significant marketing expenses. Therefore, in determining price undercutting, the ex-factory selling price of the domestic industry has to be compared to the re-sale price of M/s Boral Gypsum India Private Limited and not its import price. The price undercutting figure in the petition and the preliminary finding have been arrived at by comparing the ex-works price of the petitioner with the import price of M/s Boral Gypsum India Pvt. Ltd., which is incorrect.

xvi. Imports from subject countries were at their lowest volume during 2008-09. Despite such low volumes of imports, the petitioner slipped into loss making situation from a healthy profitable situation during 2007-08. The reason for slipping into loss making situation cannot be due to imports of the subject goods from the subject country but rather due to the unsubstantiated capacity addition. Thereafter, with every unsubstantiated capacity addition, losses kept increasing. The fact that the petitioner started incurring losses when the import volumes were at their lowest level clearly shows that the reasons for losses were not imports from subject countries.

xvii. Other factor that establishes the absence of any link between the imports and the performance of the petitioner is the position during the year 2008-09. During that year, imports of subject goods into India fell by more than 8% compared to the previous year. Even when the imports of subject goods had fallen coupled with an increase in landed value as high as 21%, the petitioner incurred loss of 32 basis points as against the profit of 100 basis points during the immediately preceding year. This factor clearly shows that the losses being suffered by the petitioner are not due to imports.

xviii. Where domestically manufactured goods are being sold at a price less than the imported goods, the injury if any is caused only due to domestic competition and not due to imported products. It can also be noted by the Authority that the selling prices of the domestic industry over the injury period have not been moving in tandem with the import prices of the subject goods but have been moving in tandem with the selling prices of the other domestic manufacturer in India.

xix. The Company has reported capacity on weight basis in its Annual Report. However, the company has reported capacity on Cubic Meter basis in the present petition. Therefore, it is not clear whether and what capacity company has considered for the purpose of present petition.

xx. Comparison of sales volume of Lafarge & domestic industry profits make it clear that Saint Gobain sales declined in 2008-09 when other producer came in to the market. Imports also declined in this period. Further, in 2009-10, Saint Gobain sales declined with the further increase in the sales of other domestic producers. In the POI, imports increased significantly, despite which Saint Gobain increased its sales and also the other producer sales increased.

xxi. The domestic industry has significant profits in bought out items. It would also be seen that the annual reports of the company should be showing profits, whereas the petitioner has claimed financial losses.

xxii. There is no correlation between the increase in the alleged dumped imports and the alleged injury.

xxiii. The fall in cost of production (by 11.11%) is far higher than the fall in selling price (by 5.36%) during the POI. This clearly shows that the petitioner has not passed on the benefit that accrued to it due to fall in cost of production to its end customers. When the petitioner has been in a position to pass on just half of the fall in cost of production to its end customers, there lays no ground to claim that the price undercutting has impacted the performance of the petitioners.

xxiv. The petitioner has four manufacturing plants in India – Jind in Haryana, Maharashtra, Chennai and Bangalore. The Company has completely suspended production at its Chennai Plant and has set up a green field plant at Bangalore. The company has not yet dismantled the Chennai plant and it is understood that the plant exist in its books even

today. It is not known whether the company has disclosed full facts in this regard to the Designated Authority and whether expenses and investments at Chennai Plant are included in the injury information and non injurious price information.

- xxv. The petitioner domestic industry has not established in the present case how the conditions for commutation are met in the present case. Unless the same is established, the Designated Authority shall not do cumulative assessment.
- xxvi. At the time of oral hearing on 10<sup>th</sup> April, 2012, the other domestic producer, Lafarge itself admitted that it was domestic competition which was causing injury to the domestic industry. The rule provides that the Designated Authority shall consider conditions of competition between domestic producers as a possible factor of injury. In the present case, Lafarge itself has admitted existence of domestic competition. It is the domestic competition which is the primary cause for injury.
- xxvii. There are no negative trends in inventories. As a matter of fact the average closing stock declined. This clearly shows that the lead out sales time for stocks is faster as compared to preceding years. Thus there are clearly positive trends in inventory.
- xxviii. The sales value has increased, Wages have increased over the injury period, The ROCE is positive even with negative profit/loss, which shows that the interest incurred by the Domestic Industry is high, Further, the Cash Flow although decreased, but is positive which shows that the depreciation is also high. These factors reflect that the selling price has increased over the period of injury, but the profit/loss is in negative. This is clearly because of the overhead costs which have increased over the period of injury.
- xxix. Between 2007-08 and 2008-09, import price increased by 21% and import volumes declined. Despite this, domestic industry went in financial losses from a situation of profits in 2007-08. Thereafter, between 2008-09 and 2009-10, the import price declined significantly and import volumes increased but were still lower than the level of 2007-08. The losses suffered by the domestic industry, however, increased significantly in 2009-10. Between 2009-10 and period of investigation, import price increased by about 2% despite which the import volumes increased by about 95%. Despite 95% increase in import volumes and increase in import price, the losses suffered by the domestic industry declined in period of investigation.
- xxx. The performance of domestic industry deteriorated with increasing domestic competition. Further, performance of domestic industry improved with increased competition from imports. There is therefore total lack of causal link in the present case.
- xxxi. The petitioner has submitted that there was a steady increase in the demand for the product in India during between 2003 and 2006 due to which it decided to increase its

capacity. While the question was regarding the increase in capacity during the injury period which is between 2007 and 2010, the petitioner has referred to the increase in demand between 2003 and 2006. Further, while the past increase in consumption can be a sign for estimating the future demand, it cannot by itself establish that the market size would increase in the same proportion for the future also. And it is precisely this error, the presumption that market size would increase at the same level forever, which has led to the entire injury to the domestic industry.

- xxxii. As against the expectation of the petitioner for a growth in market size by around 30% during 2008 and 2009, it actually increased by just 3% and 2% in the subsequent two years. This excessive capacity created expecting the market to see a higher growth rate, which did not happen, resulted in increased cost of production (increased overheads, increased interest costs for creating the capacity etc.) which in turn resulted in losses to the petitioner.
- xxxiii. The injury, if any, was only due to domestic competition and not due to imports. The selling price of the boards imported by the respondent importer is higher than the selling price of domestically manufactured boards of Boral Gypsum India Pvt Ltd. Therefore, even if the imported boards had been totally removed from the Indian market, the petitioner would have still suffered 'material injury' due to the domestic competition.
- xxxiv. The computation of NIP by the petitioner is incorrect, as the petitioner has claimed an exorbitant 22% rate of return. The Authority should not allow rate of return more than 3%.
- xxxv. The imported goods from Thailand compete with the domestically manufactured goods only at the level when they are resold in India. Therefore, injury to the domestic industry has to be analyzed based on the re-selling price of the responding importer.
- xxxvi. The NIP determined for domestic industry is very high due to capacity exceeding the demand in the country, use of costlier fuel by domestic industry, inclusion of costs attributable to other products, inclusion of after sales expenses in NIP, expenses incurred during strike, costs incurred on warehouses etc.
- xxxvii. The injury is caused to the domestic industry due to domestic competition from Boral Gypsum India Pvt. Ltd. and not due to the imports from subject countries.
- xxxviii. When the selling and administration expenses of the petitioner are included in determining its NIP, then such expenses incurred by the Respondent related company in India needs to be necessarily included to allow fair comparison.
- xxxix. The injury margin should be determined considering the re-sale price of Boral Gypsum India Pvt Ltd with the NIP of the domestic industry.

- xl. One of the plants of the petitioner had strike and shut down during the period of investigation. The Designated Authority should consider performance of the domestic industry by taking this in to account.
- xli. The petitioner has not established in the present case how the conditions for cumulation are met in the present case. Unless the same is established, the Designated Authority shall not do cumulative assessment.
- xlii. Imports increased significantly in the investigation period. However, profitability of Siam Gobain also improved significantly in this period.

#### Examination by the Authority

58. The injury analysis made by the Authority hereunder *ipso facto* addresses the various submissions made by the interested parties. However, the specific submissions made by the interested parties and considered relevant by the Authority are addressed below:

- As regards considering the resale price of importers in India for determination of landed value for the purpose of injury margin etc is concerned, based on the documents submitted by the exporters M/s Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd. and M/s Siam Gypsum Industry (Songkhala) Co. Ltd, the Authority notes that it has been contended by the exporters from Thailand that since the exporters and the Indian importers are related entities, the sales price between the two only reflects the transfer price and is not a realistic price reflecting the prevailing market price for the subject goods. In view of the difference in the transfer price and the resale price, an argument has been raised to consider the first independent resale price to the buyers in India i.e. the sales price of M/s Boral Gypsum India Pvt. Ltd. to the independent entities, after considering the elements of selling and distribution expenses and profit margin. In this regard the concerned interested parties submitted a copy of the order No. \*\*\* dated \*\*\* from the Commissioner of Customs, Chennai. On examination of the said order, the Authority notes that it has been claimed by the concerned interested parties therein that the relationship between the said Indian importer and the said producers/exporters from the subject countries has not influenced the price and therefore the invoice value may be accepted. The Customs Authority has also concluded in the stated order that though the Indian importer and the suppliers are related, that relationship has not influenced the invoice price. The Authority further notes from the stated order of the Customs Authority that the stated producers/exporters from Thailand and the stated Indian importer have related companies/suppliers in other subject countries as well, who are involved in the subject goods, but have not responded in the present investigation. In view of the above facts the Authority considers that the transfer price between the related entities i.e. M/s Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd., M/s Siam Gypsum Industry (Songkhala) Co. Ltd. and M/s Boral Gypsum India Pvt. Ltd. is completely based on arms length relationship. The Authority, therefore, does not accept the resale price of the related Indian importer as the basis for comparison with the Non-injurious Price of

the domestic industry. The Authority has, therefore, considered the actual sales price of the exports from Thailand to the related entity in India as the basis for determination of landed value for assessment of undercutting, underselling and injury to the domestic industry.

- As regards the contention of the interested parties that the injury to the domestic industry is on account of internal competition caused by the entry of the other domestic producer namely M/s Boral Gypsum India Pvt. Ltd., the Authority notes that while some of the market share of the domestic industry may have shifted to the new entrant, this cannot be considered as the sole reason for the loss of the market share by the domestic industry. On the contrary, the loss of market share by the domestic industry has also been on account of the significant imports of the subject goods from the subject countries. In view of the above, it would not be correct to conclude that the loss of market share by the domestic industry is solely due to the domestic competition posed by M/s Boral Gypsum India Pvt. Ltd. The Authority further notes that the exporters from Thailand and M/s Boral Gypsum India Pvt. Ltd. are related entities. Based on the information furnished and verified by the Authority, it has been substantiated that both the exporters from Thailand i.e. M/s Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd. and M/s Siam Gypsum Industry (Songkhala) Co. Ltd. have sold the subject goods to India at dumped prices, resulting in injury to the domestic industry.
- The Authority notes that the intent for imposition of anti-dumping duty is not to drive away competition from the market, but rather to create a level playing field characterized by fair competition. The Authority further notes that the interested parties have not furnished any documentary evidence in support of their submission that the Competitive Commission of India has already initiated an investigation against the domestic industry in this regard. The domestic industry has also denied any such investigation by the CCI against their company. Nevertheless, the Authority notes that the investigations initiated by the Competitive Commission of India are beyond the scope of Anti-dumping investigations.
- The Authority notes that the impairment cost relating to the Chennai Plant of the domestic industry has neither been considered for determination of NIP nor for the purpose of injury analysis. Therefore, the submissions of interested parties in this regard are unfounded.
- As regards the captive consumption of some of the boards by the domestic industry, the value of the same is insignificant. Being a part of the samples or mock up expenses, this has been considered as business expenditure for sales promotion.
- As regards return on the capital employed, the Authority notes that the returns on the capital employed has been considered strictly in accordance with the

provisions of the Anti-dumping Rules as amended from time to time and in accordance with the consistent practice followed by the Designated Authority. It is further clarified that the returns allowed by the Authority as a percentage of the capital employed not only covers the returns/profit margin of the domestic industry but also covers the financial charges and the element of taxes.

- As regards the determination of the installed capacity based on Cubic Meters, as against the reported capacity in the Annual Report on weight basis, the Authority has considered the capacity on Cubic Meter basis based on standard weight of the Plain Gypsum Plaster Board for the standard width based on representative widths of subject goods being produced by the domestic industry.
- The Authority notes that the annual report of the applicant company represents the financial status of the company for all the activities which includes standard Gypsum Board, Value Added Gypsum Boards, and other products.

59. The specific submissions of the interested parties with regard to trends in various parameters of injury have been appropriately dealt with by the Authority while examining the injury to the domestic industry. In this regard the Authority notes that while some of the injury to the domestic industry could be attributed to factors other than dumped imports, various relevant factors show that the material injury to the domestic industry has also been caused by dumping of the subject goods from the subject countries. The provision of Anti-dumping Rules requires the Authority to recommend lesser of the dumping margin or the injury margin as the anti-dumping duty. The Authority notes that even based on the non-injurious price for the domestic industry (NIP), the injury margin is positive.

60. As regards the submission concerning cumulative assessment of injury, the Authority notes that Annexure II Para (iii) of the Anti-dumping Rules provides that in case imports of the product under consideration from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigation, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that: -

- i. The margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two per cent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent of the import of like article or where the export of individual countries is less than three per cent, the imports collectively accounts for more than seven per cent of the import of like article.
- ii. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles. In this regard the Authority observes that:
  - i. The margins of dumping from each of the subject countries are more than the limits prescribed above;

- ii. The volume of imports from each of the subject countries is more than the limits prescribed;
- iii. Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the exports from the subject countries directly compete with the like articles offered by the domestic industry in the Indian market. This is evident from the following:
  - a. The subject goods manufactured by the producers from the subject countries inter-se and in comparison to the product manufactured by the domestic industry. In other words, the subject goods supplied from various subject countries and by the domestic industry are inter-se like articles.
  - b. There are common parties who are resorting to use of imported material from various sources and domestic material. Imported and domestic materials are, therefore, being used interchangeably and there is direct competition between the domestic product & imported product.
  - c. The exporters from the subject countries and domestic industry have sold the same product in the same periods to the same set of customers. The sales channels are comparable.
  - d. Volume of imports from each of the subject countries is significant.
  - e. Consumers make purchase decision on the basis of prices offered by various suppliers.

61. In view of the above, the Authority considers it appropriate to cumulatively assess the effects of dumped imports of the subject goods from China PR, Indonesia, Thailand and UAE on the domestic industry in the light of conditions of competition between imported product and like domestic product. The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from subject countries are more than the limits mentioned above.

62. Annexure-II of the AD Rules provides for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like articles; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such articles. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

63. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure-II of the AD Rules states as follows:

*"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment wages growth, ability to raise capital investments."*

64. For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the Rules supra.

#### **K. Demand and market share**

65. For the purpose of assessment of the domestic consumption/demand of the subject goods, the sales volume of domestic industry and other Indian producers have been added to the total imports into India and the same has been summarized below:

	Meter Cube (M3)			
	April 07- March 08	April 08- March 09	April 09 - March 10	POI
Imports of subject goods	54082	49851	54005	106062
Sales of domestic industry	226928	211235	198999	216092
Sales of other producers	-	30000	45000	58125
Total demand	<b>281010</b>	<b>291086</b>	<b>298004</b>	<b>380279</b>
% Share of Subject countries	19.24	17.13	18.12	27.89
Share of other countries	-	-	0.06	0.24
Share of domestic production	80.75	82.87	81.88	72.1
Share of domestic industry (%)	80.75	72.56	66.78	56.82
Share of Others	-	10.31	15.10	15.28

66. The Authority notes from the table above that the total imports of the subject goods from the subject countries during the 2007-08, 2008-09 and 2009-10 were more-or-less stagnant except some decline in the volume of imports during the year 2008-09. It was only in the POI that there is a significant increase in the volume of imports and the imports increased by around 96% over the base year. The

Authority further notes that the sales of the domestic producer have more or less remained stagnant throughout the injury period including the POI, whereas the sales of the other producers have increased consistently during the same period.

#### L. Volume Effects of Dumped Imports

##### Import Volume and Market Share

67. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. For the purpose of injury analysis, the Authority has relied upon the import data procured from DGCI&S source. The volume of imports of the subject goods from the subject countries have been analyzed as under:

Particulars	April 07- March 08	April 08- March 09	April 09- March 10	Meter Cube (M3)
Imports in absolute terms				
a. Thailand	50027	43525	27486	53645
b. Indonesia	2397	4839	11382	11777
c. China PR	1652	1487	5598	4298
d. UAE		0	9357	35414
Imports from Subject countries	54076	49851	53823	105134
Imports from other countries	6	-	182	928
Total imports	54082	49851	54005	106062
<b>Total Sales PUC (DI)</b>	226928	241235	243999	274217
<b>Total Demand</b>	<b>281010</b>	<b>291086</b>	<b>298004</b>	<b>380279</b>
Imports, as % of total imports	23.8	23.2	22.1	38.7
a. Thailand	92.5	87.3	50.9	50.6
b. Indonesia	4.4	9.7	21.1	11.1
c. China PR	3.1	3.0	10.4	4.1
d. UAE	0.0	0.0	17.3	33.4
Subject countries	100.0	100.0	99.7	99.1
Other countries	0.0	0.0	0.3	0.9
Grand Total	100.0	100.0	100.0	100.0
Demand in India	281010	291086	298004	380279
Trend in India	100	104	106	135
Share in demand				
a. Domestic Industry	80.75	72.56	66.78	56.82

b. Other Indian producers	-	10.31	15.10	15.28
c. Total (a+b)	80.75	82.87	81.88	72.1
d. Subject countries	19.25	17.13	18.06	27.66
e. Other countries	-	-	0.06	0.24

68. The Authority notes that:

- i. Imports have increased in absolute terms but have generally remained stagnant during the years 2007-08, 2008-09 and 2009-10 except for a decline in 2008-09 of around 8%. It was only in the POI that there is an increase in volume of imports. The increased in the POI has been as much as 96% over the base year.
- ii. The demand for Plain Gypsum Plaster Board has gradually increased during the injury period and the POI. The increase in the demand till 2009-10 over the base year was around 6%. However, the total demand increased by about 35% in POI as compared to base year. The similar trends have been noted in the volume of imports from the subject countries.
- iii. The share of domestic producers and the imports of subject goods from the subject countries were generally constant till 2009-10. However, due to increase in the volume of imports from the subject countries the share of imports in the demand of the product in India increased from 19% to 27%.
- iv. The Authority notes that the share of domestic industry in the total demand was around 80% till 2009-10. However, there was a decline of around 9% of the total demand during the POI over the base year. This 9% has been taken over by the surge in the volume of imports from the subject countries. A further analysis of the market share of the domestic industry indicates that the domestic industry has also gradually lost a part of its market to the new entrant M/s Lafarge Boral India Pvt. Ltd. While the total demand of the subject goods increased by 99,269 C3 Meters, during the POI over the base year the increase in the share of other domestic producer M/s Lafarge Boral India Pvt Ltd was only 58,125 C3 Meter during the same period. At the same time while the domestic industry noted a decline in its sales by 10836 C3 Meter, the volume of imports from the subject countries witnesses a surge to the extent of 51980 C3 Meter.
- v. During the course of verification, it was noted by the Authority that one of the plants of the domestic industry was shut down for a period of about \*\*\* days during the POI. The Authority notes that this plant accounted for \*\*\* % of the installed capacity of the domestic industry. Further, the share of production of this plant in the total production of the domestic industry during the POI was \*\*\* %.

#### **M. Price effect of imports**

69. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact of dumped imports on the

prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any.

### Price undercutting

70. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports with net sales realization of the domestic industry. Authority has determined net sales realization considering selling price, excluding taxes & duties, rebates, discounts & commissions. Entire sales volumes of the domestic industry have been included in the calculations. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price after excluding freight if any from sea port to inland port, with 1% landing charges and applicable basic customs duty. The comparison was done between net sales realization and landed price of imports. The Authority has determined weighted average price undercutting by the dumped imports. It has been argued by the exporters from Thailand that for the purpose of determination of price undercutting it is the resale price of the related entity i.e. M/s Lafarge Boral India Pvt. Ltd. which is relevant and more appropriate as the same reflects the real price at which the subject goods enters the domestic market. This issue has already been addressed by the Authority in the disclosure statement and in view of the facts as stated by the Authority; the contention of the concerned producer/exporter has not been accepted by the Authority.

71. The Authority notes that the landed prices of the subject goods are significantly below the selling price of the domestic industry which suggests significant price undercutting being caused by the dumped imports from subject countries as apparent from the following table.

Rs /Meter Cube (M3)

Sl. No.	Details	UAE	China	Indonesia	Thailand	Subject countries
1.	Net Sales Realization of domestic industry	***	***	***	***	***
2.	Landed value	***	***	***	***	***
3.	Undercutting	***	***	***	***	***
4.	Undercutting %	***	***	***	***	***
5.	Undercutting % range	25-35	30-40	20-30	40-50	32-42

72. The Authority notes from the above table that the landed value of imports of the subject goods are significantly below the selling prices of the domestic industry, resulting in significant price undercutting.

### Price-underselling

73. From the table given below, the Authority notes that there is positive and significant price underselling effect.

Sl. No.	Details	UAE	China	Indonesia	Thailand	Subject countries
1.	NIP of domestic industry	***	***	***	***	***
2.	Landed value	***	***	***	***	***
3.	Underselling	***	***	***	***	***
4.	Underselling %	***	***	***	***	***
5.	Underselling % range	30-40	40-50	25-35	45-55	35-45

#### Price suppression/depression

74. In order to determine whether the dumped imports are suppressing or depressing the domestic prices, the Authority determined whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

#### R/s Meter Cube (M3)

	April 07- March 08	April 08- March 09	April 09 - March 10	POI
Selling Price- Rs./ M3	***	***	***	***
Indexed	100	109	108	106
Cost -Rs. / M3	***	***	***	***
Indexed	100	124	121	122

75. The Authority notes from the table above that there have been divergent trends in the sales price and cost of production of the domestic industry. The Authority notes that the performance of the domestic industry has primarily fluctuated with the changes in its cost of production. The cost of production of the domestic industry increased by 24% during 2008-09 and by 21% during 2009-10 over the base year. During the corresponding year the increase in the selling price of the domestic industry was only 9% and 12% respectively.

#### N. Economic parameters of the Domestic Industry

76. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the Anti-dumping Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the

magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.

77. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed herein below:

i. **Production, capacity and capacity utilization of the Domestic Industry**

**Meter Cube (M3)**

	April 07- March 08	April 08- March 09	April 09 - March 10	POI
Capacity	287500	350000	412500	412500
Total Production	226987	210860	204675	219882
Capacity Utilization %	79%	60%	50%	53%

78. The table as above indicates that the capacity utilization of the domestic industry has declined during the injury period. Although during the POI, the capacity utilization has marginally increased vis-à-vis immediate preceding year, it has suffered a significant fall in comparison to the base year. However, the Authority notes, that there has been addition to the capacity during the year 2008-09 and 2009-10. It is noted that utilization of new plants added by the domestic industry was at a comparatively lower level. The Authority further notes that in spite of the addition of capacities there is marginal decline in the volume of total production of the domestic industry during the same period, although the volume of production has slightly increased during the POI as compared to the preceding year. During verification of the information submitted by the domestic industry, it was noted that one of the plants of the domestic industry was shut down due to strike during the POI. This plant represented \*\*\* % of the total installed capacity of the domestic industry. The Authority notes that but for the strike at this plant during the POI, the actual production and capacity utilization of the domestic industry would have been higher. The production of this plant for the period for which it was in operation accounted for \*\*\* % of the total production of the domestic industry for the POI.

ii. **Sales Volume & Value**

79. The sales volume of the domestic industry has come down by about 5% over the injury investigation period in spite of increase in demand. The decline in the volume of sales of the domestic industry may partly be attributable to the commencement of domestic production by M/s Lafarge Boral India Pvt. Ltd and also due to significant increase in the imports from the subject countries.

**Meter Cube (M3)**

	April 07- March 08	April 08- March 09	April 09 - March 10	POI
Total Sales Volume – Domestic	226928	211235	198999	216092
Indexed	100	93	88	95

### iii. Profitability

80. The Cost of sales, Net sales realization and Profit/loss of the domestic industry in respect of the domestic sales of the subject goods for the period from 2007-08 to 2009-10 and POI are given in the following table:

SN	Particulars	Unit	April 07- March 08	April 08- March 09	April 09 - March 10	POI
1	Sales	Rs. Lacs	***	***	***	***
	Index		100	102	98	101
2	Cost of sales (domestic)	Rs. Lacs	***	***	***	***
	Index		100	115	109	116
3	Profit/Loss (domestic)	Rs. Lacs	***	***	***	***
	Index		100	(32)	(14)	(49)
4	Cost of sales (domestic)	Rs./MT	***	***	***	***
	Index		100	124	121	122
5	Sales value(domestic)	Rs/MT	***	***	***	***
	Index		100	109	109	106
6	Profit/Loss(domestic)	Rs/MT	***	***	***	***
	Index		100	-36	-152	-51
7	Depreciation	Rs. Lacs	***	***	***	***
	Index		100	141	164	163
8	Interest Cost	Rs. Lacs	***	***	***	***
	Index		100	451	2980	2571
9	PBIT	Rs. Lacs	***	***	***	***
	Index		100	18	67	22
10	Cash Profit	Rs. Lacs	***	***	***	***
	Index		100	35	55	34
11	Capital employed	Rs. Lacs	***	***	***	***
	Index		100	24	34	9
12	Returns on capital employed	%	***	***	***	***

81. The Authority notes that:

- i. The domestic industry was earning profits in the base year of the injury period. The profits of the domestic industry changed to losses in the year 2008-09. Further, the domestic industry continued to incur losses on the sales of subject goods during the year 2009-10 although the quantum of losses declined marginally. However, the losses of the domestic industry increased once again significantly during the POI.
- ii. The analysis of sales realization of the domestic industry and the cost of production indicates that there has been a significant jump in the cost of production of the domestic industry during the years 2008-09 and 2009-10. The cost of production registered 22 points increase during the POI over the base year. On the other hand, the sales realization of the domestic industry has not increased commensurate with the change in the cost of production. As against an increase in the cost of production of 21% till 2009-10, the increase in the sales realization was only 9%. As a result the domestic industry has incurred financial losses.
- iii. An analysis of cost structure of the domestic industry indicates that there has been substantial increase in the fixed charges of the domestic industry particularly in respect of depreciation cost and the interest expenses.
- iv. During the POI when the volume of imports from the subject countries witnessed a substantial increase, both the sales volume and the production of the domestic industry also increased.
- v. It is further noted from the statistical analysis, as above, that during the injury period and the POI, the domestic industry has constantly earned cash profits although the level of profits over the period has fluctuated substantially. The cash profit of domestic industry has declined significantly during the POI as compared to the immediate preceding year as well as base year.

**iv. Employment and Wages**

82. The trends in the employment and wages of the domestic industry during the injury period and the POI are summarized below:

	April 07- March 08	April 08- March 09	April 09 - March 10	POI
No of Employees	***	***	***	***
Indexed	100	99	94	95
Wages Total (Rs. Lacs)	***	***	***	***
Indexed	100	124	130	135

83. **Wages:** The Authority notes from the above table that there is decline of 5% in the number of employees of the domestic industry during the injury period and the POI. On the other hand the total wages of the workers has increased by around 35%.

84. **Inventories:-** The data relating to inventory of the subject goods are shown in the following table:

	Meter Cube (M3)			
	April 07- March 08	April 08-March 09	April 09 - March 10	POI
Opening stock	***	***	***	***
Closing Stock	***	***	***	***
Average stock	***	***	***	***
Index	100	81	77	98

85. The Authority notes from the above table that the average stocks of the domestic industry declined during the years 2008-09 and 2009-10. However, the stocks of the subject goods increased during the POI although it was marginally lower than the average stocks during the base year.

86. **Productivity:** Data relating to productivity show as follows:

	Meter Cube (M3)			
	April 07- March 08	April 08- March 09	April 09 - March 10	POI
Production	226987	210860	204675	219882
Employees	***	***	***	***
Production per Employee	***	***	***	***
Indexed	100	93	96	102

No significant change in the productivity per employee has been noted during the POI over the base period.

#### (v) Magnitude of Dumping

87. **Magnitude of dumping** as an indicator of the extent to which the dumped imports can cause injury to the domestic industry shows that the dumping margin determined against the subject countries are above de minimis and significant.

88. **Ability to raise funds:** The Authority notes that the profitability of the domestic industry from the domestic sales of the subject goods has declined during injury period and POI. However, the Authority notes that the domestic industry has significant amount of turnover and profitability from operations other than the product under consideration. Therefore, their ability to raise funds does not seem to have been affected.

## O. Material injury and Causal Link

89. There has been a significant increase in the volume of dumped imports from subject countries in absolute terms. The market share of dumped imports in total demand of subject goods has also increased significantly. It is also noted that the dumped imports were undercutting the prices of the domestic industry in the market. It is further noted that the dumped imports have had significant adverse price effect in terms of price undercutting, price suppression and price underselling. Further, the dumping margins from subject countries have been determined and are significant.

## P. Other Known Factors

90. Having examined the existence of material injury, volume and price effects of dumped imports on the prices of the domestic industry, in terms of its price underselling and price suppression, and depression effects, other indicative parameters listed under the Indian Rules and Agreement on Anti-Dumping have been examined by the Authority to see whether any other factor, other than the dumped imports could have contributed to injury to the domestic industry, as follows:-

### (a) Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

It is noted from import data that 99% of imports of subject goods are from the subject country. Further, the imports from other countries are insignificant. Therefore, the imports from other countries could not have affected the prices in the domestic market.

### (b) Contraction of demand and changes in the pattern of Consumption

The Authority notes that demand for the subject goods has shown a growth of about 35% during POI as compared to base period. There is also no indication of any change in the consumption pattern.

### (c) Developments in Technology

The Authority notes that none of the interested parties have furnished any evidence to demonstrate significant changes in technology that could have caused injury to the domestic industry.

### (d) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and Domestic Producers

The Authority notes that the subject goods are freely importable. The applicants are the major producers of the subject goods and account for significant domestic production and sales. Further there is no perceptible competition among the domestic producers, except that is obvious of a market economy.

### (e) Export performance of the Domestic Industry

The Authority notes that the subject goods have not been exported by the domestic industry during the injury period and the POI. Therefore, the question of the performance of domestic industry being affected on account of exports does not arise.

**(f) Productivity of the Domestic Industry**

The Authority notes that the productivity of the domestic industry in terms of production per employee has improved in POI as compared to base year. Therefore, possible decline in productivity cannot be a factor causing injury to the domestic industry.

**(g) Excess Capacity**

It has been argued by some of the interested parties that the installed capacity of the domestic industry has far exceeded the demand for the subject goods and some of the injury to the domestic industry is due to the excess capacities. In this regard the Authority notes that while the installed capacity of the domestic industry during the POI was 4,12,500 cubic meters, the total demand for the subject goods during the POI was 3,80,279 cubic meters. This demand includes the share of the other domestic producer to the extent of 58,125 Cubic Meters. This shows that the domestic industry has excess capacity as compared to the total demand in the country.

**(h) Loss of Production Due to Strike**

The Authority notes that one of the plants of the domestic industry was shut down for about \*\*\* days on account of strike during the POI thereby affecting the production of the domestic industry.

**(i) Competition from Domestic Production**

The Authority notes that the other domestic producer M/s Lafarge Boral India Pvt. Ltd. commenced the commercial production and sales of the subject goods during the year 2008-09. It was the year 2008-09 that the domestic industry also increased its capacities for production of the subject goods. The Authority further notes that this may also be one of the reasons that might have affected the performance of the domestic industry.

**Q. Magnitude of Injury and Injury Margin****Injury Margin**

91. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry as determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports from the subject countries for determination of injury margin during POI. In this context the Authority examined the submissions made by M/s The Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co. Ltd., Thailand and M/s Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd., Thailand and their related Indian producer/importer M/s Boral Gypsum India Pvt. Ltd, that the resale price of the related importer should be taken as the landed price and be made the basis for injury analysis and determination of injury margin by the Authority. The Authority notes from a copy of the Order No. \*\*\* dated \*\*\* of Commissioner of Customs, Chennai furnished by M/s Boral Gypsum India Pvt. Ltd that the related parties have themselves admitted before the Customs Authority that the relationship between the said Indian importer and the said producers/exporters from the subject countries has not influenced the price and therefore the invoice value may be accepted. The Customs Authority

has also concluded in the stated order that though the Indian importer and the suppliers are related, that relationship has not influenced the invoice price. In view of the above, the Authority does not accept the submissions made by M/s Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co. Ltd., Thailand and M/s Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd., Thailand and their related Indian producer/importer M/s Boral Gypsum India Pvt. Ltd to take and adopt their resale price as the basis for injury analysis and determined injury margin as under:-

#### US \$/Cubic Meter

S. No.	Country	Producer / Exporter	NIP	Landed value	Injury Margin	Injury Margin %	Injury Margin % range
1.	Thailand	The Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co. Ltd. Thailand	***	***	***	***	65-75
		The Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd. Thailand	***	***	***		
		Weighted Average for the Group	***	***	***		
		Any other producer	***	***	***	***	90-100
2.	UAE	M/s Gypsemna Co. (L.L.C.), Dubai	***	***	***	***	40-50
		Any other producer	***	***	***	***	45-55
3.	China	All exporters / producers	***	***	***	***	70-80
4.	Indonesia	All exporters / producers	***	***	***	***	35-45

#### R. Comments on the Disclosure Statement by the Interested Parties

92. The essential facts of the investigation were disclosed by the Authority vide disclosure statements dated 6<sup>th</sup> September, 2012 and 4<sup>th</sup> January, 2013. The comments received post-disclosure from the domestic industry and other interested parties, to the extent considered relevant to the investigation, are summarized below :

#### Post -Disclosure Comments made by the Domestic Industry

- In terms of Paragraph 3(ii) of Annexure I of the Anti-dumping Duty Rules cost adjustments are permitted only if the start-up operation has taken place during the Period of Investigation and has affected the costs of that period. The responding

exporter from UAE was set-up in the year 2007 and the commercial production started in June 2009, as is evident from the questionnaire response of the concerned exporter itself. Since it is an admitted fact that the start-up operation did not take place during the POI, the question of making any adjustment on account of start-up operation simply does not arise.

- ii. Normal value on the basis of domestic selling price ought to be rejected for UAE because of existence of particular market situation being caused due to Government intervention in natural gas prices.
- iii. The export price for non-cooperative exporters from the subject countries should be based on lowest CIF price available from the DGCIS data after adjusting the freight and insurance.
- iv. The methodology and final figures of the normal value computed for the non-cooperative exporters should be disclosed.
- v. The technical specifications of the excluded products should be mentioned in the final finding notification.

Post -Disclosure Comments made by other interested parties

- i. The principal cause of the injury to the domestic industry were not the alleged dumped imports but rather (i) internal competition amongst domestic producers, (ii) the incidence of high fixed cost coming out of new production facility which could not be fully optimized; (iii) start up operations; (iv) movements in the costs; and (v) lack of demand to utilize the capacities created in the Country. Therefore the causal link is absent.
- ii. The petitioner has provided no evidence of dual pricing policy in the UAE.
- iii. The anti-dumping duty should be in benchmark form expressed in Indian rupee.
- iv. Since the scope of the product under consideration is 'Plain Gypsum Plaster Board', 'Ceiling Tiles' that are used in modular ceiling be specifically excluded from the scope of the investigation.
- v. The import prices into India do not have any effect on the prices of the domestic industry. It is only the re-sale price of the related importer in India that impacts the prices of the domestic industry.
- vi. The initiation of the investigation was bad in as much as the person initiating the investigation did not have the jurisdiction as on the date of initiation of the investigation.
- vii. The injury suffered by the domestic industry due to domestic competition should be segregated.
- viii. The costs and Non-injurious Price of the domestic industry should be appropriately adjusted to exclude the additional costs incurred due to unsubstantiated capacity addition and due to the strike.
- ix. The Authority has noted that return on capital employed has been determined as per the AD Rules, but has not stated the rate that has been considered.
- x. In terms of section 21 of Competition Act, any investigation has to be referred to the CCI if the interested parties raise an objection that the decision to be taken would be contrary to the provisions of the Competition Act.

- xi. Both The Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Limited, and The Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co. Limited, exporters from Thailand offer a price undertaking. We request the Authority to inform us the price at which the undertaking is to be given and format, if any, for such an undertaking.
- xii. Authority should disclose the non-confidential version of the DGCI&S data.

#### **Examination by the authority**

- 93. Post disclosure, the domestic industry and other interested parties have mostly reiterated their earlier submissions, which have been addressed in this final finding.
- 94. The interested parties have submitted that Ceiling Tiles are different from the PUC and beyond the scope of the present investigation. The domestic industry also in its submissions has acknowledged that ceiling tiles are beyond the scope of the PUC and therefore beyond the purview of the present investigation. In view of this, the Authority excludes Ceiling Tiles from the purview of the PUC and the scope of the anti-dumping measures.
- 95. As regards the post disclosure contention of the domestic industry concerning the relevant provisions in the Anti-dumping Rules relating to adjustments on account of startup operation's cost, the Authority notes that the contention is factually incorrect.
- 96. As regards the post disclosure submission of the other interested parties that the anti-dumping duty should be in benchmark form expressed in Indian rupee, the Authority has considered all the relevant factors and recommends fixed duty as given herein below.
- 97. As regards the price undertaking offered by The Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Limited, and The Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co. Limited, the Authority notes that in view of practical difficulties in monitoring price undertakings, the Authority does not consider it appropriate to accept the offer.
- 98. As regards the provisions of Competition Act referred to by the other interested parties, the Authority notes that the present investigation has been conducted in terms of the Anti Dumping Rules.

#### **S. Conclusions**

- 99. After examining the issues raised and the submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority during the course of the investigation, the Authority concludes that:
  - i. The subject goods have entered the Indian market from the subject countries below associated normal values, thus resulting in dumping of the subject goods;
  - ii. The dumping margins of the subject goods imported from the each of the subject countries are above de-minimis;
  - iii. The domestic industry has suffered material injury in respect of the subject goods; and
  - iv. The dumped imports of the subject goods from the subject countries have caused material injury to the domestic industry.

**T. Indian industry's interest & other issues:**

100. The Authority recognizes that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the imposition of anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti dumping duties, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The Authority notes that the imposition of the anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

**U. Recommendation**

101. The Authority notes that the investigation was initiated and it was notified to all known interested parties. Adequate opportunity was also given to the exporters, importers and other interested parties to provide information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the Anti-dumping Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive Anti-dumping duty is required to offset dumping and injury.

102. Having regard to the lesser duty Rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, anti-dumping duty equal to the amount indicated in Col 8 of the table below is recommended to be imposed by the Central Government, on all imports of subject goods, originating in or exported from the subject countries.

**Duty Table**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
Sl. No.	Sub heading of Tariff item	Description of Goods *	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Duty Amount	Unit	Currency
1	68091100, 68091900	Plain Gypsum Plaster Board	China PR	China PR	Any	Any	32.85	Cubic Meter(M3)	US \$
2	do	do	China PR	Any	Any	Any	32.85	do	US \$

3	do	do	Any	China PR	Any	Any	32.85	do	US \$
4	do	do	Indonesia	Indonesia	Any	Any	24.11	do	US \$
5	do	do	Indonesia	Any	Any	Any	24.11	do	US \$
6	do	do	Any	Indonesia	Any	Any	24.11	do	US \$
7	do	do	Thailand	Thailand	Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd.	Siam Gypsum Industry (Saraburi) Co. Ltd.	54.46	do	US \$
8	do	do	Thailand	Thailand	Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co. Ltd.	Siam Gypsum Industry (Songkhla) Co. Ltd.	54.46	do	US \$
9	do	do	Thailand	Thailand	Any Other Combination other than 7 & 8 above	Any Other Combination other than 7 & 8 above	73.80	do	US \$
10	do	do	Thailand	Any	Any	Any	73.80	do	US \$
11	do	do	Any	Thailand	Any	Any	73.80	do	US \$
12	do	do	UAE	UAE	M/s Gypsemna Co. (L.L.C.), Dubai	M/s Gypsemna Co. (L.L.C.), Dubai	12.30	do	US \$
13	do	do	UAE	UAE	Any Other Combination other than 12 above	Any Other Combination other than 12 above	20.15	do	US \$
14	do	do	UAE	Any	Any	Any	20.15	do	US \$
15	do	do	Any	UAE	Any	Any	20.15	do	US \$

\* As the product under consideration in the present investigation is plain gypsum plaster boards of

all thicknesses and dimensions, the following products are excluded from the scope of the anti-dumping measures as recommended in the duty table given above:

- Gypsum Boards having water absorption up to and including 5% (Moisture Resistant Boards)
- Gypsum Boards having a minimum breaking load of 24 neutrons in the transverse direction and 50 neutrons in the longitudinal direction per millimeter of thickness (Impact Resistant Boards or Fire Resistant Board)
- Fire Boards
- Fire Heat Boards
- Impact Boards
- Gypsum Ceiling Boards with Moisture Barrier
- ECHO Boards
- Heat Boards
- Anti-mold Boards or Weather Boards
- Thermal Boards
- Gypsum Ceiling Boards with Aluminium Edges Sealed in White Film.
- Ceiling Tiles.

103. Subject to the above, the Authority confirms the recommendations made in the Preliminary Findings issued vide Notification No. 14/45/2010-DGAD dated 19th March, 2012.

104. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs Authority under the Customs Act, 1962 and all duties of Customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

105. An appeal against the findings after its acceptance by the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal (CESTAT) in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff Rules, 1995.

J. S. DEEPAK, Designated Authority